भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य आ संस्कृति महोत्सव—२००२

लोककलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर

पो०-कोटवाँपट्टी रामपुर, जिला-सारण (बिहार)

स्मारिका-अंक २

हमनी के प्रेरणा पुरुष

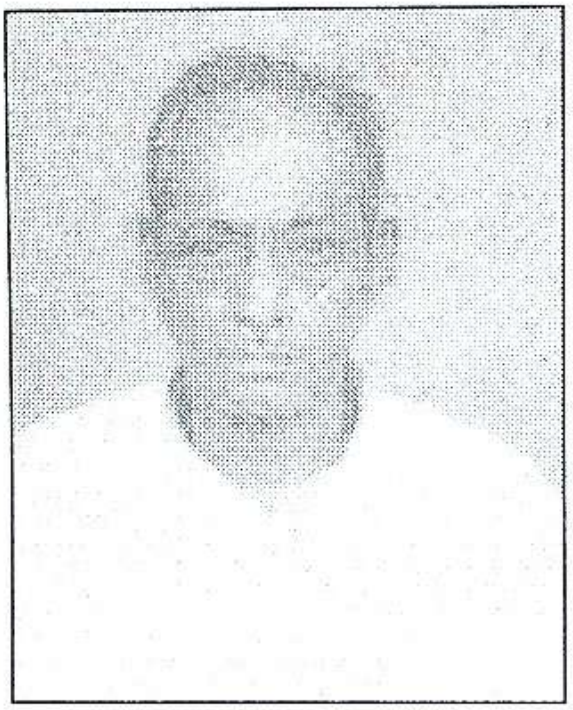

स्व० प्राचार्य डा० हीरालाल राय

पूर्व सांसद, छपरा

मातृभासा आ राष्ट्रभासा

ई हमार हऽ आपन बोली। सुनि केहू जनि करे ठठोली।।
जे जे भाव हृदय के भावे। ऊहे उतरि कलम पर आवे।।
कबो संसकृत, कबहूँ हिंदी। भोजपुरी माथा के बिंदी।।
भोजपुरी हमार हऽ भासा। जइसे हो जीवन के स्वांसा।।
जब हम ए दुनिआ में अइलीं। जब हमई मानुस तनु पइलीं।।
तबसे जमल रहल जे टोली। से बोले भोजपुरिआ बोली।।
हमहू ओही में तोतरइलीं। रोअलीं हँसलीं बात बनइलीं।।....

स्मारिका

प्रधान संपादक

लाल बाबू यादव

(वरीय पत्रकार)

संयुक्त संपादक

डॉ. विद्याभूषण श्रीवास्तव

पाण्डेय कपिल ग्रंथ-संग्रह
मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-800024

अतिथि संपादक

अविनाश नागदंश

www.bhojpurisahityangan.com

स्मारिका : भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं
संस्कृति महोत्सव, १८-१९ दिसम्बर २००२, कुतुबपुर, छपरा (सारण)

लेखक

संस्कर : दिसम्बर २००२

सहयोग राशि :

आवरण : भिखारि ठाकुर ग्रन्थावली प्रथम खंड के आवरण से ।

स्मारिका में प्रकाशित किसी रचना में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं ।
इसके लिए संपादक/प्रकासक की सहमति आवश्यक नहीं है।

संपादक,प्रकाशन पूर्णतः अवैतनिक

प्रकाशन : आयोजन समिति, भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य
एवं संस्कृति महोत्सव छपरा (सारण)

अक्षर संयोजन : आलेखन
न्यू डाकबंगला रोड, कृष्णा भवन
पटना-८००००१
दूरभाष : २२३५७५३

मुद्रक : आलेखन

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव, 2002
कुतुबपुर, छपरा, सारण (बिहार)

18-19 दिसम्बर 2002

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

उदित राय, नगर विकास राज्यमंत्री (बिहार)

अध्यक्ष स्वागत समिति

डॉ० लाल बाबू यादव, वरीय पत्रकार

विजय प्रताप सिंह, दूरसंचार जिला प्रबंधक, छपरा

लालदास राय

जयनारायण सिंह सोलंकी

राधाचरण प्रसाद उर्फ सेठ जी

रामबाबू राय

अध्यक्ष

ललन राय

उपाध्यक्ष

श्री भगवान राम

राजेन्द्र प्रसाद ठाकुर

विद्याकर सिंह

विनय राय

बलदेव राय सप्तापुरी (युवा कवि)

जजराय

शिवशंकर राय

महासचिव

सत्येन्द्र सिंह, मुखिया

गौतम राय, मुखिया

प्रवीण कुमार उर्फ पिक्कू जी

चन्द्रिका राय, वी० डी० सी०

हरेश सिंह, उप मुखिया

सचिव

रमेशचन्द्र राय

सुरेश पाण्डेय, वी० डी० सी०

वियज राय, वी०डी०सी०

असर्फी सिंह यादव

रामलखन राय

कोषाध्यक्ष

विजय कुमार ठाकुर

समायोजक

प्रेमप्रकाश सिंह

संयोजक

प्रो० संजय कुमार पाण्डेय

रजनीश कुमार ''गौरव (सामाजिक कर्त्ता)

स्वागत समिति

अध्यक्ष

डॉ० लाल बाबू यादव, वरीय पत्रकार

उपाध्यक्ष

डॉ० कामेश्वर प्रसाद सिंह, लाल बाबू राय-पूर्व सांसद, राम बाबू राय-नेता, अजय कुमार-मुखिया

महासचिव

डॉ० विधाभूषण श्रीवास्तव 'पत्रकार'

सचिव

गुड्डु राम–पत्रकार

संयोजक

चन्द्र प्रकाश राय

सहसंयोजक

रणजीत सिंह, युगुल प्र० सिंह–पूर्व मुखिया,भुतेश्वर सिंह–पूर्व सरपंज, जगदीश राम–पूर्व मुखिया,गोपाल पाण्डे, रघुवर पाण्डे, अर्जुन सिंह, रूपा राय, चन्द्रकेत सिंह, रघुवंश प्रसाद यादव, प्रभुनाथ सिंह, मिथलेश पाण्डे, रामनन्दन राय, राजेन्द्र सिंह, वलिराम महतो, बलेश्वर राय, प्रभुनाथ ठाकुर,सत्येन्द्र राय, विनय महतो, वेद प्रकाश ठाकुर,सत्येन्द्र सिंह, अजय कुमार ठाकुर–आरक्षी अपर निरीक्षक, दिलेश्वर मांझी, खलिफा राय, पहलवान सुभाष राय, दीपनारायण राय, धर्मनाथ सिंहए, रामबाबू राय उर्फ दरोगा जी, जयकिशुन राय, गणेश राय, राम प्रकाश यादव, ललन सिंह,अवधेश महतो,प्रो० विरेन्द्र सिंह, सुरेश तिवारी, रामनाथ राय, राज कुमार प्रसाद, रविन्द्र कुमार यादव, मुकेश कुमार सिंह, राम विवारे राय, जवाला प्रसाद यादव, अवधेश राय, परहंश यादव, अशोक राय, रामलखन प्रसाद, आनन्त कुमार सिंह प्राचार्य, कृष्ण कु० राय (गोपी राय), लालबाबू साह, शत्रुध्न यादव, हरेन्द्र सिंह, पुलिस राय, अर्जून राय, राणा सिंह, सुनील कुमार सिंह, गणेश सिंह, उमेश राय, अजय कुमार, कपिलदेव राय, गौतम राय, सत्येन्द सिंह, रामबहादुर महतो, मनझरी देवी, सुन्दर पति देवी, सुमन देवी, सुरेश मांझी, राजपति देवी, उमेन्द्र प्रसाद यादव, रजनीश कुमार यादव, रामएकबाल चौरसिया, चन्द्रभूषण राय, ओमप्रकाश यादव, ललन राय, सुरेश पाण्डेय, चन्द्रिका राय।

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

(१) भोजपुरी भाषा और साहित्य (नक्सा) ५
(२) संपादकीय (डा० लाल बाबू यादव) - ६-७
(३) संपादकीय (अविनाश नागदंश) - ८
(४) संदेश
(क) के.एल. कोचर - ९
(ख) राजीव प्रताप रूडी - १०
(ग) विनोद चन्द्र पाण्डेय - ११
(घ) रमई राम, रामकृपाल यादव - १२
(ङ) मुनेश्वर चौधरी, एम०ए० काजमी – १३
(च) कुन्दन कृष्णन्, लाल दास राय - १४
(छ) विजय प्रताप सिंह, वैद्यनाथ सिंह विकल - १५
(ज) राम प्रवेश राय, ब्रज किशोर सिंह - १६
(झ) हाकीम प्रसाद साह, शिव कुमारी देवी - १७
(ञ) श्रीमती नीलू कुमारी, जितेन्द्र कुमार - १८
(५) भोजपुरी भाँगड़ा - गोड़ऊ- (उमेश कुमार सिंह) १९ -२२
(६) पहपट डाँ भगवान सिंह भास्कर - २२
(७) भिखारी ठाकुर : रंगमंचीय शास्त्र के शीशा रहस (संजय उपाध्याय) २३-२४
(८) भोजपुरी समाज के पुनर्जागरण : आज के जरूरत (डाँ विद्याभूषण श्रीवास्तव) २५
(९) एगो परम्परा ह विदेसिया : शैली (श्री भगवान राम) २६
(१०) भोजपुरी लोककथा : पुनर्मूल्यांकन (डाँ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक') २७-३०
(११) सर्वश्रेष्ट भोजपुरी मठाई (बलदेव राय) ३०
(१२) राजनेता आ साहित्कार (डाँ. प्रभुनाथ सिंह) ३१-३२
(१३) काव्यांजलि, गोड़वा में जूता नइखे बेटी वियोग, जोगिनियाँ बन के ३३
(१४) भिखारी के गाँव (जख्मी कांत 'निराला') ३४
(१५) सवेरे बेश बोलले कोयलिया (कवीद्र कुमार) ३५
(१६) गाँवे चलऽ - (वकील दीक्षित) ३५
(१७) ना जोश, जा होश (अनन्त कु० सिंह) ३६
(१८) दुल्हा के होला व्यापार हे मामा (रमजान अली रौशन) ३६
(१९) आयोजन समिति आ स्वागत समिति के सदस्य ३७-३८
(२०) नगर परिषद, छपरा (आवश्यक सूचना) ३९
(२१) महान समाज सुधारक : महाकवि भिखारी ठाकुर (आचार्य सारंगधर) ४०-४१
(२२) लोक संस्कृति और आधुनिक विकास के खतरे (नागेन्द्र प्रसाद सिंह) ४२-४८
(२३) भिखारी ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (डा० राधाकृष्ण शर्मा) ४९-५०
(२४) शहीद सिपाही बलिराम सिंह (फोटोग्राफ) ५१
(२५) महात्मा हंसराज मॉडर्न पब्लिक स्कूल का प्राचार्य ५२
(२६) पंडित रामवतार शर्मा के एगो दूर्लभ कविता ५२
(२७) २१ वीं सदी में भिखारी ठाकुर की प्रासंगिकता (अविनाश नागदंश) ५३-५४
(२८) आधुनिक रंगमंच की अभिव्यक्ति थे भिखारी ठाकुर (जावेद) ५५
(२९) भिखारी ठाकुर जनता के दिलो-दिमाग में सुरक्षित (देवांशु रंजन) ५६-५७
(३०) सामाजिक रूढ़ियों से टकराते रहे भिखारी ठाकुर (रामजी राय) ५८
(३१) कथाकार संजीव के राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित उपन्यास 'सूत्रधार' के अंश ५९-६१
(३२) हार्दिक शुभकामनाएँ ६२
(३३) भिखारी ठाकुर : एक संक्षिप्त परिचय (रामदास राही) ६३
(३४) भोजपुरी चली विदेश की ओर (डी. एन. राव.) ६३
(३५) अन्त में (अध्यक्ष के निवेदन) (ललन राय) ६४

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भाषा और साहित्य

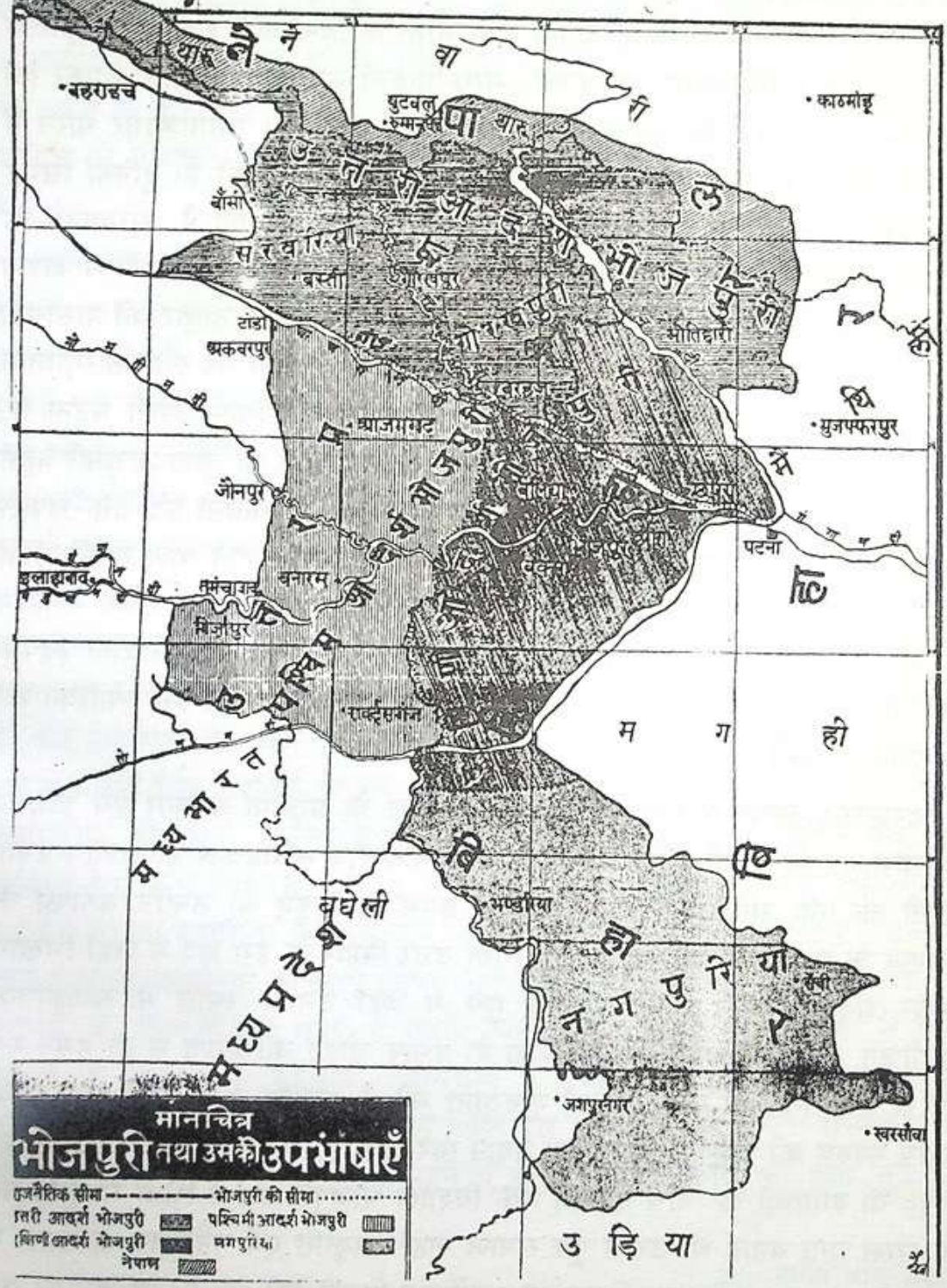

www.bhojpurisahityangan.com

संपादकीय

देश एवं विदेश में बोली जाने वाली सर्वाधिक सुमधुर लोक भाषा भोजपुरी के महान विभूति, लोकसंस्कृति के वाहक उत्तर भारत के हिन्दीभाषी क्षेत्रों में सांस्कृतिक पुर्नजागरण के प्रतीक महान नाटककार-संस्कृतिकर्मी रायबहादुर भिखारी ठाकुर की प्रासगिकता पर आज के समाज में अनवरत बहस जारी है । स्वातांत्र्योत्तर भारत में पैदा हुई नयी पीढ़ी अब जवानी की दहलीज को पार कर चुकी है। दुनियाँ सिमट कर उदारीकरण व भूमंडलीकरण के प्रभाव से विलेज, बन गई है, सूचनाओं के विस्फोट ने कम्पयूटर एवं टेलीविजन के रुप में प्रत्येक घर के ड्राईंग रुम में अपना स्थान बना लिया है। ऐसी परिस्थिति में लोक कलाकार भिखारी ठाकुर की प्रासंगिता पर बहस सदृश्य है। इसके साथ ही भिखारी ठाकुर के नाम पर लोकसांस्कृतिक समारोहो का आयोजन अपने आप में आश्चर्यजनक व चौंकाने वाली घटना है, परन्तु, भिखारी ठाकुर की जन्मभूमि कुतुबपुर व छपरा शहर के कुछ उत्साही बहुत हद तक लोगो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में कितनी हद तक सफल साबित हो सके है, इसका फैसला तो गत वर्ष से प्रकाशित होने वाले स्मारिकाओं के अवलोकन के पश्चात ही हो सकेगा। बहरहाल भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं सांस्कृतिक महोत्सव २००२ के दूसरे पुष्प के रुप में प्रस्तुत यह स्मारिका आपके हाथों में हैं। आप हंस की तरह नीर, क्षीर, विवेकी की भूमिका में इस स्मारिका का अवलोकन करेंगे।

दरअसल आज से लगभग दो वर्ष पूर्व देश के प्रख्यात पत्रकार एवं इंडियन एक्सप्रेस ग्रुप के हिन्दी दैनिक जनसत्ता के सम्पादकीय सलाहकार आदरणीय प्रभाष जोशी जी एक संगोष्ठी के सिलसिले में छपरा आये हुए थे। उन्होंने संगोष्ठी के समापन के पश्चात मुझसे यह कहा था कि उत्तर बिहार के इस क्षेत्र में जहाँ भिखारी ठाकुर सदृश्य महान कलाकर पैदा हुये थे वहाँ उनकी स्मृति में सांस्कृतिक आयोजन आज की फौरी आवश्यकता है। प्रभाष जोशी की प्रेरणा से ही हमने गत वर्ष से इस तरह के समारोहो की शुरुआत की है हलाँकि हम अभी तक इसके क्षेत्रीय स्वरुप को राष्ट्रीय स्वरुप नहीं प्रदान कर सके हैं । लोक कवि भिखारी ठाकुर ने २० वी शताब्दी के पाँच दशको तक विशाल भोजपुरी क्षेत्र में लोक संस्कृति की जो सरस गंगा बहाई थी उससे पूरा समाज जहाँ संस्कृति एवं मनोरंजन के सागर में गोते लगता रहा, वही उत्तर बिहार के सर्वाधिक पिछड़े इस क्षेत्र में नव जागरण की

www.bhojpurisahityangan.com

नई कोपलें भी प्रस्फटित हुईं। इस दौर में भिखारी ठांकुर के साहचर्य में आकर सैकड़ों नवोदित कलाकारों के कला विद्या का प्रस्फुटन एवं विकास भी हुआ। पूरे भोजपुरी क्षेत्र पर भिखारी लगभग ५० वर्षों तक छाये रहे और उनके गीतों व नाटको के सम्मोहन में पूरा समजा डूबता उतराता रहा। ऐसी परिस्थिति में यह आवययक है कि आज के जनमानस को इन आयोजनों के माध्यम से भिखारी ठाकुर के महान साहित्य से परिचित कराया जाये। यह पत्रिका भी इस दिशा में एक लघु प्रयास है ।

लोकभाषा एवं लोकसंस्कृति की महत्ता कितनी व्यपाक है, इसका अँदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज फिजी, मारिशस, गुयाना एवं त्रिनिनाद में बसे लोग सैकड़ों वर्ष पूर्व भारत से गिरमिटिया बना कर ले जाये गये लोग अपने पूर्वजों की जन्मभूमि को तलाशने के लिये भारत के गाँव-गँवई की खाक छानते फिर रहे हैं। सूर, कबीर, तुलसी, जायसी, नामदेव एवं सुब्रह्ममयम भारती आज वर्षों वर्ष बाद इसलिये याद किये जा रहे है क्योकि उन्होंने उस वक्त के लोक भाषा में अपनी रचनायें प्रस्तुत की थी। भिखारी ठाकुर इसी कड़ी के एक छोटे उदाहरण हो सकते हैं। हलाँकि विश्व में भाषाओं के महान चिंतक एवं विद्धान महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने उन्हें भोजपुरी के शेक्स्सपीयर की संज्ञा देते हुये संस्कृति का बिन तराशा हीरा से इनकी तुलना की थी। हम इस परम्परा की और आगे बढ़ाना चाहते हैं। इस स्मारिका के माध्यम से हमने इसी दिशा वाले पसिद्ध कथाकार संजीव, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, जावेद अख्तर, संजय उपाध्याय सहित अपने सहयोगियों यथा विद्याभूषण श्रीवास्तव, अविनाश नागदंश, रजनीश कुमार गौरव, ललन राय, श्री भगवान राम और रामदास राही के प्रति आभारी है, जिनके आलेख एवं सक्रिय सहयोग से इस स्मारिका का इस वर्ष भी प्रकाशन सम्भव हो सका। हम बिहार के नगर विकास राज्यमंत्री माननीय उदित राय एवं उनके उत्साही मित्रों के प्रति भी आभारी है, जिन्होंने इस कार्य में हमारा उत्साहवर्धन किया है। स्मारिका में कुछ त्रुटियाँ हो सकती हैं। जिसकी जिम्मेवारी मैं अपने उपर लेता हूँ। आप महान कलाकार भिखारी ठाकुर की स्मृति में खिले इस दूसरे पुष्प को अपना सम्बल प्रदान करें और हमे सदैव "भिखार" ही रहने दें ताकि आपके स्नेह की कुछ बूदे हमे सदैव मिलती रहे ।

राजनीतिशास्त्र विभाग, छपरा **डा० लाल बाबू यादव**

www.bhojpurisahityangan.com

संपादकीय

अतिथि सम्पादक के वक्तव्य

माता ए सुरसति ! ग्यान के भवानी,
मोरा कंठे होखीं ना सहाय।
आहो माता ! मोरा कण्ठे होखी ना सहाय।।

लोकल्याणकारी भोजपुरिया लोकपरम्परा, साहित्य आ संस्कृति के पावन संगम, प्रेरणास्पद स्व० भिखारी ठाकुर जी के प्रेरक स्मृति में सुरसरि गंगामाई, सरजू जी आ सोनकुंवर के परम पावन गोदी में बसल उहाँ के जन्मभूमि, कुतुबपुर में आयोजित हो रहल एह दूसरका भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य आ संस्कृति महोत्सव के आयोजन समिति हमरा निरबल कान्हा पर एह स्मारिका के अतिथि सम्पादक के रुप में संपादित से लेके प्रकाशित करेके जवन बड़हन बोझा लाद देले बा, ओकरा के हम अत्यन्त सीमित समय आ ओहूले कम स्वतंत्रता के बाबजूद कहाँ तक तक खीचें में समरथ ही सकल बानी, एकर वास्तविक निर्णय त अपनहीं लेखा साहित्यानुरागी कर सकेनी। एहमें जवन भी कमी रहल गईल होखे भा दोष होखे, ओकरा खातिर हम अपने सभन से दसो नोंह जोड़त, भूईपड़त सविनय क्षमाप्रार्थी बानी आ एह में जवन कुछ भी प्रशसंनीय बा, ओकरा खातिर समूचा आयोजन समिति सामूहिक रुप से बधाई के पात्र बा।

शुभाशांसा आ विज्ञापन आदि अनिवार्य बाध्यता के चलते कवनो भी स्मारिका के साहित्यिक संसार अत्यंत समुचित होखे के विवश होला तथापि इ हरसंभव कोशिश कईल गईल बा की लोक साहित्य आ संस्कृति के ज्वलंत मुद्दन पर सुधी पाठक लोग के चिंतन मनन करे के खातिर उत्कृष्ट वैचारिक साम्रगी मिले आ होकरा साथ ही स्व० भिखारी ठाकुर जी के व्यक्तित्व आ कृत्तित्व पर भी मातृभाषा के साथे-साथे राष्ट्रभाषा में भी पार्याप्त समालोचना सामग्री पढ़े के मिलो।

आज बहुत सौभाग्य के बात बा कि हमनी के बीच देस में बीसवीं सदी के अन्तिम चतुरार्द्ध में उदित भईल दलित जागरण के सबसे मजबूत मसीहा माननीय लालू जी उपस्थित बानीं जहाँ के आज भोजपुरी सपुत सम्मान से विभुषित कर के भोजपुरीया जगत उहाँ के उपकार के बोझा के थोड़ा हलुक करके कोशिश कर रहल बा। उहाँ के अगर एह पावन भूमि में, त्रिवेणी के एह पावन पौराणिक संगम पर मातृ भाषा के भी अगर आपन एगो मुद्दा बनावे के संकल्प लेलीं त भोजपुरिया समाज के भाग जाग जाई आ आजे से समाज के वास्तविक पूर्णजागरण शुरू हो जाई।

शुद्ध घीव के एह साहित्यक लड्डु में अनेक मेवा-मिष्ठान डाल के बनावे में मुख्य संरक्षक माननीय उदित राय जी, राज्य मंत्री, बिहार सरकार से जवन किरपापूर्ण संरक्षण, लोकसाहित्य के वरिष्ट अध्येता नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी जवन बहूमुल्य मार्गदर्शन, प्रधान संपादक डॉ. लालबाबू यादव जी जवन प्रेरणा, संयुक्त संपादक भाई डॉ. विद्याभूषण श्रीवास्तव से जवन उत्साह, अध्यक्ष ललन राय जी से जवन निर्देश समारोह के सहसंयोजक-सह-मीडिया मैनेजर रजनीश कुमार गौरव से जवन निश्छल सहयोग आ महोत्सव से जुटल समस्त लोग के प्रति आपन सादर आभार प्रगट करत अपना मातृभूमि के सब संतान के हमार कोटि-कोटि करत बानी।

अविनाश नागदंश

"आन्दोलन आश्रम", मोहननगर, छपरा

१८.१२.२००२

www.bhojpurisahityangan.com

के. एल. कोचर
उपराष्ट्रपति के प्रेस सलाहकार
दूरभाष : 310644,3016422
फैक्स : 3018124

उप-राष्ट्रपति सचिवालय
नई दिल्ली -110011
VICE-PRESIDENT'S SECRETARIAT
NEW DELHI-100011

6 नवम्बर, 2002

संदेश

महामहिम उपराष्ट्रपति जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव, 2002 का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर ठाकुर जी की स्मृति में स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा, जो सराहनीय प्रयास है।

उपराष्ट्रपति जी इस स्मारिका के प्रकाशन के उपलक्ष्य में अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते है।

(के.एल.कोचर)

www.bhojpurisahityangan.com

राजीव प्रताप रूडी
वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री

वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री
उद्योग भवन, नई दिल्ली
MINISTER OF STATE FOR
COMMERCE AND INDUSTRY
UDYOUG BHAVAN, NEW DELHI

संदेश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि भिखारी ठाकुर की 115वीं जयंती के अवसर पर भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव, 2002 का आयोजन भिखारी ठाकुर की जन्मस्थली कुतुबपुर में दिनांक 18 एवं 19 दिसम्बर 2002 को आयोजित किया जा रहा है। इस भोजपुरी भाषा एवं संस्कृति के आयोजकगण महोत्सव के बधाई के पात्र हैं। इससे लोक संस्कृतिकर्मियों, साहित्यकारों, लोकगायकों - लोकनाट्यकारों का उत्साहवर्द्धन होगा। इस प्रकार के आयोजन से निश्चय ही लोकसंस्कृति समृद्ध एवं गौरान्वित होगी। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि यह अपने उद्देश्य में पूर्णरूपेण सफल हों।

(राजीव प्रताप रूडी)

www.bhojpurisahityangan.com

राज्यपाल बिहार
GOVERNOR BIHAR

राजभवन, पटना
RAJ BHAVAN
PATNA-800022

21 नवम्बर 2002

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि लोक कलाकार 115वीं जयंती के अवसर पर 18-19 दिसम्बर 2002 को 'भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव' का आयोजन होने वाला है तथा इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी प्रस्तावित है।

लोक साहित्य और कला समाज के दर्पण हैं। मुझे आशा है कि यह आयोजन लोक कलाओं की परम्परा को जीवंत बनाये रखने में सहायक होगा।

स्मारिका की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

विनोद चन्द्र पाण्डेय)

www.bhojpurisahityangan.com

रमई राम

मंत्री

राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग

बिहार, पटना

दूरभाष 225355 (का0)

222988 (आ0)

12, बेली रोड, पटना (बिहार)

28 दिसम्बर 2002

संदेश

स्व0 भिखारी ठाकुर इस क्षेत्र के विशेषकर सारण जिला की पहचान हैं। मेरा विश्वास है कि आने वाले दिनों में स्व0 भिखारी ठाकुर को विद्यापति, कबीर, रहीम की तरह साहित्य जगत में स्थान मिलेगा।

आपके आयोजन के लिए मेरी कामना है कि यह सफल हो और इससे स्व0 भिखारी ठाकुर की पहचान एवं ख्याति में बढ़ोत्तरी हो।

शुभकामनाओं सहित।

रमई राम

राम कृपाल यादव

सदस्य

बिहार विधान परिषद्

अध्यक्ष

बिहार राज्य धार्मिक न्यास पर्षद्

विद्यापति मार्ग

पटना-800001

दूरभाष : 220729(R)

225303(F) 232940(O)

5 दिसम्बर 2002

संदेश

मुझे काफी खुशी हो रही है कि स्व0 भिखारी ठाकुर स्मृति में उनकी 115वीं जयंती के अवसर पर आयोजन किया जा रहा है। अवसर पर आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

राम कृपाल यादव

www.bhojpurisahityangan.com

मुनेश्वर चौधरी
विधायक

बिहार विधान सभा
पटना (बिहार)

संदेश

मुझे काफी खुशी हो रही है कि स्व० भिखारी ठाकुर स्मृति में उनकी 115वीं जयंती के अवसर पर आयोजन किया जा रहा है। अवसर पर आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

(मुनेश्वर चौधरी)

एम० ए० काजमी
भा० आ० से०

आरक्षी उपनिरीक्षक
सारण क्षेत्र, छपरा बिहार

संदेश

स्व० भिखारी ठाकुर इस क्षेत्र के विशेषकर सारण जिला की पहचान हैं। लोकगीत-संगीत के द्वारा उन्होंने आम आदमी की पीड़ा एवं खुशी को समाज के पटल पर रखा। अपनी, प्रतिभा से उन्होंने अपनी पहचान बनायी और भोजपुरी साहित्य को मालामाल किया है।

मेरा विश्वास है कि आने वाले दिनों में स्व० भिखारी ठाकुर को विद्यापति, कबीर, रहीम की तरह साहित्य जगत में स्थान मिलेगा।

आपके आयोजन के लिए मेरी कामना है कि यह सफल हो और इससे स्व० भिखारी ठाकुर की पहचान एवं ख्याति में बढ़ोत्तरी हो।

शुभकामनाओं सहित।

एम०ए० काजमी

www.bhojpurisahityangan.com

कुन्दन कृष्णन्
भा० आ० से०

आरक्षी अधीक्षक,
सारण क्षेत्र, छपरा, बिहार

संदेश

भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव -2002 का आयोजन कुतुबपुर, छपरा में हो रहा है। यह आयोजन पिछले साल 2001 छपरा के लिए एक एतहासिक एवं यादगार आयोजन हुआ था। भोजपुरी के शेक्सपियर, भोजपुरी नाट्य शैली के जन्मदाता लोक कलाकार भिखारी ठाकुर ने अपने नाटकों के जरीय जण कल्याण किया था।

अत: यह महोत्सव पुन: पिछले वर्ष से भी ज्यादा लोकप्रियता प्राप्त कर सफल हो यह मेरी हार्दिक शुभकामना है।

इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका अपने उद्देश्य में सफल हो यह मेरी कामना है।

(कुन्दन कृष्णन्)

लालदास राय
अध्यक्ष
लावारिस सेवा केन्द्र बिहार
आरा

लावारिस सेवा केन्द्र
बिहार, आरा
205/94, गंगा सदन,
बासताल, आरा

संदेश

लोक कवि भिखारी ठाकुर की 115वीं जयन्ति के अवसर उनके याद में एक स्मारिका प्रकाशन हो रहा है। इसके लिए लावारिस सेवा केन्द्र बिहार के अध्यक्ष लालदास राय की ओर हार्दिक शुभकामनाऐ।

लालदास राय

www.bhojpurisahityangan.com

विजय प्रताप सिंह

भा: दू. सेवा

जिला दूरसंचार प्रबंधक, छपरा

जिला दूरसंचार प्रबंधक,
छपरा-841301
फोन नं0 :
22666 (O), 22666 (R)
22666 (F)

संदेश

मुझे काफी खुशी हो रही है कि स्व0 भिखारी ठाकुर स्मृति में उनकी 115वीं जयंती के अवसर पर भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य एवं संस्कृति महोत्सव, 2002 का आयोजन उनकी जन्म भूमि में किया जा रहा है।

इस आयोजन एवं इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए हार्दिक शुभकामनाये।

(वियय प्रताप सिंह)

वैद्यनाथ सिंह विकल

पूर्व अध्यक्ष

सारण जिला परिषद्
सारण (बिहार)

संदेश

लोक कवि भिखारी ठाकुर लोक संस्कृति एवं साहित्य महोत्सव 2002 में भिखारी ठाकुर की जयन्ती के अवसर पर उनकी याद में प्रकाशित स्मारिका के प्रकाशन आ आयोजन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों लेखकों, कवियों, कलाकारों तथा संस्कृति कर्मीयों को नववर्ष मंगल कामनाओं के साथे हार्दिक शुभकामना।

वैद्यनाथ सिंह विकल

www.bhojpurisahityangan.com

राम प्रवेश राय
अध्यक्ष

सारण जिला परिषद्
छपरा
फोन नं० :
29334 (O), 29335 (R)
24503 (F)

10 दिसम्बर 2002

संदेश

जिला परिषद छपरा की ओर से लोक कवि भिखारी ठाकुर को शत्-शत् नमन करते हुए अपार प्रसन्नता प्राप्त हो रही है। इस संदर्भ में स्व. भिखारी ठाकुर के नाम का स्मरण होने मात्र से ही छपरा जिला वासी अपने आप को गौरवान्वित महसुस करने लगते है।

भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृतिक महोत्सव आयोजित करके छपरा जिला का नाम और मान सम्मान देश विदेश में रौशन करने के लिए प्रयासरत सभी भाई बहनों को हमारी ओर से बहुत-बहुत बधाई स्वीकार हो।

शुभ कामनाओं के साथ

राम प्रवेश राय

ब्रज किशोर सिंह
उपाध्यक्ष
जिला परिषद्, छपरा

जिला परिषद्
छपरा (बिहार)

10 दिसम्बर 2002

संदेश

लोक कवि भिखारी ठाकुर लोक संस्कृति एवं साहित्य महोत्सव 2002 में भिखारी ठाकुर की जयन्ती के अवसर पर उनकी याद में प्रकाशित स्मारिका के प्रकाशन आ आयोजन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों लेखकों, कवियों, कलाकारों तथा संस्कृति कर्मीयों को नववर्ष मंगल कामनाओं के साथे हार्दिक शुभकामना।

ब्रज किशोर सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

हाकीम प्रसाद साह
अध्यक्ष
जिला परिषद्, भोजपुर

पत्रालय :
शालीग्राम सिंह के टोला नेकनाम टोला, बड़हरा,
भोजपुर
पत्राचार :
मोहन सिनेमा कम्पाउन्ड, आरा
फोन नं० :
06182-29091, 30271 (आ०) 41091 (का०)

संदेश

मान्यवर हमरा इ जानके बड़ी खुशी होत बा कि राष्ट्रीय स्तर पर भोजपुरी के क्षेत्र में एतना बड़हन नाम करे वाला भोजपुरी के शेक्सपियर भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव 2002 के आयोजन छपरा आउर, आरा के सीमा आ गंगा, सरयु, सोन नदी के संगम के पवित्र स्थान उनकर जन्मस्थली कुतुबपुर छपरा में हो रहलबा

ई साचहु के भोजपुरी भाई लोग खातीर खुशी के बात बा एह अवसर पर छपे वाला स्मारिका खातीर हमार हार्दिक शुभकामना बा

हाकीम प्रसाद साह

शिव कुमारी देवी
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद्

नगर पालिका परिषद्
छपरा (बिहार)

संदेश

लोक कवि भिखारी ठाकुर की 115वीं जयंती के अवसर उनकी याद में एक स्मारिका प्रकाशन हो रहा है। इसके लिए नगर पालिका परिषद् के अध्यक्ष शिव कुमारी देवी की ओर हार्दिक शुभकामनाएँ।

शिव कुमारी देवी

www.bhojpurisahityangan.com

श्रीमती नीलू कुमारी
अध्यक्ष
नगर परिषद् छपरा

फोन नं० : 221826 (आ०)
221827 (का०)

10 दिसम्बर 2002

संदेश

भोजपुरिया लोग, साहित्य आ संस्कृति के संरक्षण-संवर्धन के उद्देश्य से शुरू भईल भिखारी ठाकुर लोक साहित्य आ संस्कृति महोत्सव 2002 के आयोजन आ एह अवसर पर प्रकाशित स्मारिका खातिर हमार हार्दिकतम शुभकामना।

भोजपुरिहा लोग के निरन्तर भोजपुरी आ प्रगति खातिर शुभकामना के साथ।

नीलू कुमारी

जितेन्द्र कुमार
उपाध्यक्ष
नगर परिषद्, छपरा

फोन नं० : 06152-52436
9835229243

10 दिसम्बर 2002

संदेश

खाली हमरा खातिर ही ना, जिला खातिर ही ना, राज्य खातिर हीना पुरे भोजपुरी भाषां देश खातिर इ खुशी के बात बा कि भोजपुरी रत्न लोक कवि भिखारी ठाकुर के नाम पर लोक साहित्य एवं संस्कृति महोत्सव जिला छपरा के कुतुबपुर में 18 एवं 19 दिसम्बर 2002 के मनावल जात बा। एह महोत्सव में एगो स्मारिका भी छपत बा, ई महोत्सव के असली इतिहास होई।

एह दुनो के सफलता खातिर हम सचउका मन से शुभकामना देत बानी।

जितेन्द्र कुमार

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भाँगड़ा-गोंड़ऊ

–उमेश कुमार सिंह
ग्रा०-नचाप, वाया-एकमा (सारण)

'गोंड़ऊ' के चरचा करे से पहिले 'गोंड़ जाति' के विषय में कुछ बतावल उचित समझत बानी। गोंड़ जाति, 'कँहार' जाति के एगो शाखा ह। कँहार जाति के मुख्य पेशा 'कँहारी' रहल बा। बाद में इ जात 6-7 जात में बँट कइल, जइसे कँहार, कानू, कमकर, कुर्मी, कलवार, भर, आ गोंड। ए लोग के अलग-अलग नाम हो गइल आ अलग-अलग पेशा। कँहार जाति के लोग अपना मनोरंजन खातिर आपना लोक संस्कृति के विकास कइल, काहे कि ओइ जमाना में नाच-गान राजा-महाराजा तक ही सीमित रहे। पिछड़ा जात के पहुँच के बाहर रहे, एही से इ लोग आपन कम खर्चीला आ बढ़िया लोक संस्कृति के विकास कइल। गोंड़ नाम एह से पड़ल कि एकर कलाकार लोग गोंड़ में गोंड़ाई पहिन के आ गोंड़ पर खड़ा होके नाचे गावे ला लोग एही से एह नाच के 'गोंड़ऊ' आ नाच करेवाला लोग के 'गोंड़' कहल गइल। बाद में इ एगो जात बन गइल।

गोंड़ लोग शुरू से ही स्वावलंबी रहल बा। एह लोग के जिम्मे ढेर काम बा। करनिहार, गोंड़ऊ नाच आ जगपरोजन के भँडारी इहे लोग होला। एह लोग के औरत भी स्वावलंबी होली, औरत लोग घोंसार में गाँव भर के भुँजा भुँजे के काम करेली। एही से कहीं-कहीं एह लोग के 'भँड़भुँजवा' भी कहल जाला। औरत लोग घोंसार से अपना घर के खर्चा चला लेवेली। पहिले एह लोग में बिआह के आधार घोंसारे होत रहल ह। लइकी के बाप इ मान के चलत रहले हँ कि जेकरा घोंसार चलतबा ओह घर में लइकी के खाये-पीये के दिक्कत ना होई। गोंड़ लोग बड़ा ईमानदार होला। एह लोग के ईमानदारी जग-जाहिर बा, एही से कँहारी, भँडारी आ घोंसार के काम एह लोग के जिम्मे बा। अपना गिरहत के प्रति इ लोग हमेशा ईमानदार रहल बा। ईमानदारी के चलते ही एह लोग के थाती सँउप दिआला, आ होकर के उ लोग बखूबी निभावेला।

एहलोग के जात गोंड कहाला। एह लोग के गोत्र कश्यप ह। गोंड़ लोग अपना के जेठवंस कहेला। इ लोग अपना के सबसे ऊँच मानेला। एही से इ लोग आपन बिआह सगोत्रीय करेला। बिआह में पहिले लड़कीवाला लड़का के छेंकेला फेर लड़का वाला लड़की के छेंकेला। एह मामला में बाबा आदम के जमाना से इ लोग एडवान्स बा काहे कि ऊँच जात में लइकी देखे के प्रथा अब शुरू भइल ह बाकिर एह लोग में शुरूए से चलल आवत बा। बिआह में लड़की आ लड़िका दुनो गहना पहिनेला। लड़िका कम से कम गोंड़ में गोंड़ाई आ कान में कुँडल जरूर पहिनेला। बिआह में एगो आउर खासियत इ बा कि बारात के खियावे-पियावे के भार लड़िका वाला के होला। लड़िका वाला बारात के साथे खाये-पीये के जोगाड़ साथे ले जाला। जब बारात दुआरे लाग जाला ओकरा बाद बराती लोग आपन खाना बनावे में लाग जाला आ लइकी वाला के आज्ञा भेज देला जब खाना बन जाला त लड़की किहाँ से 5 आदमी आवेला। फेर संघे बारातियो खाला। खाना में भोजपुरिया खाना "लिट्टी चोखा" एही लोग के खाना ह जवना के बाद में पूरा भोजपुरी क्षेत्र अपना लिहलस।

गोंड़ऊ नाच

गोंड़ऊ नाच के उत्पत्ति के कवनो लिखित प्रमाण नइखे बाकिर जइसन लोक-गीतन में चरचा आइल बा ओह से इहे लागेला कि गोंड़ऊ नाच 'शिवजी के बिआह आ रामजी के बिआह में गइल रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

गोंडऊ नाच अइसन नाच ह जवन बहुगुणा ह। लड़िका के नहवावन, परिछावन, दुआरे लगावल, से लेके महफिल तक अकेले गोंड़ऊ नाच से काम चल जाला। अलगा से नाच-बाजा करेके कवनो जरूरत नइखे। सबसे खास बात इ बा कि एह नाच खातिर समियाना, टेन्ट आ स्टेज के कवनो जरूरत नइखे। जहें जगह मिलेला ऊँहे 8-10 आदमी गोलिया के नाच शुरू कर देवेले। मेला बाजार होखे चाहे छठ, होली सभ अवसर पर गोंडऊ नाच भेंटा जाई। जहें जगह मिलेला ऊँहें जमा देला लोग। जहवाँ हुड़का हुड़कावल शुरू भइल कि लोग जुटे लागेला। बाजा का रुप में एगो हुड़का आ 4-6 जोड़ी झाल। कलाकार भी 8-10 से अधिका ना होखस, 4-6 आदमी झाल पर जे पछेला के भी काम करेला, दु आदमी हुड़का पर। एक आदमी हुड़का बजावेला आ गावेला। जब उ थाक जाला त दोसरका जाना उनकर भाँज छोड़ावे खातिर रहेले। एगो लाबार जरूर होला। जवन अपना हाथ में बाँस के झरही लेले रहेला आ रह-रहके एह लोग के ठोकत रहेला। एकरा आलावे पाठ करेवाला एक आदमी होला जे घोड़ा, बाघ, काली, चाहे राकस के पाठ करेला कपड़ा में धोती, करिया कुरता आ माथ पर मुरेठा रहेला। कवनो-कवनो नाच में एगो दु गो लऊँडा भी रहेला।

जब इ लोग राकस के पाठ करेला त राकस मुँह से लूती फेंकेला त लोग इहे बुझेला कि राकस कवनो मन्तर से लुती फेंकत बा बाकिर इ साँच ना ह। का होला कि जे राकस के पाठ करेला उ रेड़ के हरियर फांफी में रेड़ के सुखल लकड़ी ठूँस के ऊपर से कागज लपेट देला, जब उ आग धरावेला त भीतर के सुखल लकड़ी, जल जाला जब उ मुंह के भीतरे फुंका मारेला त इहे जर जर के लुती नियर बहरी निकलेला त लोग बुझेला कि मन्तर से लुती फेंकत बा। राकस लुती निकाल के लोग के डेरावेला। गोंड़ऊ नाच भोजपुरी क्षेत्र के सबसे चर्चित आ कम खर्चीला नाच ह।

गोंड़ऊ नाच में गावे जाये वाला गीत अवसर के हिसाब से लिखल गइल बा। जइसन मोका ओइसन गीत। जब लड़िका के नहवावन होला त हई गीत गावल जाला

"केकर पोखर खोनावल, घाट बनवावल हे
केकर भरीले कँहार त के नहवावन हे।
राजा दशरथ के पोखरा खोनावल, घाट बनवावल हे
कौशल्याजी के भरी ले कँहार त राम नहवावन हे।
घर-घर घुमेले नऊरिया त गोतनी बोलावन हे
वइठल बावा चरपइया मंगल एक गाव नु हे।
जब परिछावन होला त इ गीत गावल जाला–
राम बियाहन चलले जनकपुर
हनुम साजे बरियात।
जब बारात लड़की के दरवाजा लागेला त हई गीत गावल जाला–
बियाह करे चलले राजा ए भइया जनकपुर
कईलाख सजले हथिया से घोड़वा
कई लाख सजले बरियात
एक लाख सजले हथिया घोड़वा
दुई लाख सजले बरियात ।।

www.bhojpurisahityangan.com

जब लड़िका के परिछे सास आ सखी लोग जाला त इ गीत गावल जाला–

"माई हो नारद मुनी के का ले बिगड़नी
बारवा खोजेले बउराह,
कान कुण्डल शोभे अरइत-करइत
गले गेहुअन के हार।
सासु मदागिन परिछन चलली
साँपवा छोड़ेला फुफकार।।
कलशा के ओटे गउरा मिनती करत बाड़ी
सुनी स्वामी अरज हमार,
तनिए सा भेखवा बदली ए महादेवा
नगर के लोग पतियास।।

जब बारात दुआरे लगाके महफिल में आवेला त महफिल में 'पइसारी' गा के पहिले जगह बानहल जाला। एह गीत से इ लोग अपना देवता के सुमिरन करेला।

"पहिले गुरु को गाइये, जिन गुरु कृपा निधान
पानी से गुरु पैदा किये, अलख, पुरुख निधान।

भजन : मन भजलऽ टुँइयाँ, भुँइया के
मन भजलऽ काली मइया के
मन भजलऽ ब्रह्मा बाबा के
मन भजलऽ भोला बाबा के।

एकरा बाद नाच के लाबार आवेला आ उ सबसे पहिले डीह बान्हेला–

"डीहऊ मोर कहँवा जनमल, कहँवा, लेहल अवतार।
मोर डीहऊ दिलिया जनमल, कँवरु में लिहल अवतार।

एकरा बाद इ लोग पाठ शुरू करेला। पाठ में इ लोग घोड़ीवाला, बाघवाला, धोबीवाला आदि पाठ करेला। जवन पाठ करी लोग उहे पहिर के गावेला आ नाचे ला लोग।

"सुमीरी ले टुँइया, सुमीरिमत भुँइया
कि सुमरी ले सकल जहान
जब हम सुमरी ले ऐतना जगहिया के
जहाँ काया लोटेला हमार।"

एकरा बाद मन लगावे वाला गीत शुरू होला–

"तिसिया के तेलवा माथवा बन्हवली
महिनवा रहे सावन के।
माथवा गइले लटियाई,
महिनवा रहे सावन के।।

www.bhojpurisahityangan.com

गंगा नहान के मेला में गावे जाये वाला गीत–

"छोटी-मुटी गंगा मइया, मोटिये के डाढ़ हो
बइठेली गंगा मइया, लट छटकाय हो
गंगा के अररिया चढ़िके केंवटा पुकारे
रतिये के ए गंगा लहर सकोर।
कइसे में लहर सकोरी मलहवा रे
सावन भदउवा के ऋतुवा हमार।।

दोसर गीत :–

जाही दिन तहरो जनमिया भइले ए गंगा
हो गइले सोनवा के राज।
तुरही के रहलु ए गंगा बक्सर के किलवा
तुर दिहलु भृगु अस्थान।

गोंडऊ नाच के विकास बाड़ा जोर-शोर से भइल। इ नाच छोट जाति से उठके ऊँच आ सभ्रात लोग के बिआह, उत्सव आदि के शोभा बने लागल। गोंड़ऊ नाच के बिना कवनो उत्सव हूँछ लागे लागेला बाकिर एह फिल्मी जुग में इ ओरा गइल। फिल्मी लटका-झटका के आगे एकर भाव घटे लागल। जवना के कारण एकर कलाकार बेरोजगार हो गइलें आ गाँव छोड़ के शहर पकड़ लिहले। अब गोंड़ऊ नाच में काम कइल लोग हीन समझेला एही से इ लोक संस्कृति विलुप्त होखे के कगार पर खड़ा बा। अब जरूरत इ बा कि नाया सोरा से पढ़ल-लिखल लोग एकरा के आगे बढ़ाओ। जरूरत पड़े त थोड़ा बहुत सुधार भी कइल जा सकेला। नवयुवक लोग जवन पश्चिम के रास्ता पकड़ लेले बा ओकरा से बचाव जरूरी बा। पढ़ल-लिखल लोग जब मुख्य धारा से जुड़ के एकर प्रचार-प्रसार करी त आशा के किरण अभीओ लउकत बा कि गोंड़ऊ नाच आपन खोअल प्रतिष्ठा फेर से हासिल कर ली। ■

पहपट

भोजपुरी के जवन लोकगित विलुप्त हो रहल बाड़ी सन, ओह में पहपटो शामिल बा। पहपट काफी जोशीला गीत ह। एकरा के चौताल के भेद मानल जाला। पहपट गीतन में जीवन के विविध रूप, समाज के विभिन्न पहलू या समाज के चित्र मिलेला। एह में श्रृंगार रस के प्रधानता होला, जइसे :—

अंगुरी में डँसले विया नगनिया रे
सइया के जगा ननदी, भइया के जगा द

एगो पहपटे ह। एगो आउर श्रृंगारिक पहपट के उदाहरण देखीं—

बुताई कइसे दो, बुताई कइसे ?
लागल लहंगा में आगि बुताई कइसे ?
पिया परदेश देवर घरे हइये ना ।
सुतल बाड़े भसुर जगाई कइसे ?
लागल लहँगा में आग, बुताई कइसे ?

अफसोस अइसन रसीला गीत भी आज एकईसवी शताब्दी के एह संचार- क्रांति युग में विलुप्त हो रहल बा। ■

डॉ० भगवान सिंह भास्कर, लखरॉव, सीवान)

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर : रंगमंचीय शास्त्र के शीशा रहस

—संजय उपाध्याय
वरिष्ठ रंगकर्मी

'बिदेसिया' एगो कालजयी रचना ह। आ भिखारी ठाकुर एगो 'टोटल थियेटर पर्सन'। उनकर रचना आजो ओत नही प्रासंगिक नारी सन कि जईसन पाँचवा आ छठा दशक में रही सन। राष्ट्रीय आ अंतराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित ओह तमाम रचनाकर लोग का तुलना में भिखारी ठाकुर ओह लोग से डेग पीछे नईखन। सही अरथ में कुल्ह मिलाके रंगमंचीय शास्त्र के शीशा (आईना) हउवन भिखारी ठाकुर। भिखारी ठाकुर नाटक के फलसफा पर एगो अइसन संपूर्ण कलाकार रहस जे सयक्त कवि, गावइ, अभिनेता निर्देशक था कुशल मनेजर-मालिक साबित होके लोकप्रियता के चरम पर के प्राप्त कईले रहस।

कालजयी कलाकार भिखारी ठाकुर के ना त हम पक्षधर हई आउर ना अनुयायी। उ एगो परम्परा के वाहक बाड़न । हम ओह परम्परा के अथाह समुन्दर के एगो पवड़ निहार हई। अपना दिसाई हम ई कह सकेनीं कि उनकर प्रयोग आज के जमाना मे उपाय का निथर बाड़ी सन, जवना से नाट्य समहयन के त सुलझावले जा सकेला, ओइरा के सरल या लोकप्रिय भी बनावल जा सकेला।

इ बात दोसर बा कि सब लोक धारा सबके समेटेवाला भिखारी ठाकुर जइसन कलाकार उपेक्षित रहल आ उपेक्षित बा। लोकतंत्र के जवन स्वरूप आ ले लउकल बा, ओमे उनकरा नियर आदमी के उपेक्षिते रहे के ज्यादे उम्मेद बा। समूचा दुनिया में सम्मान के पात्र आज राजकीय सम्मान के काबिल नईखन समझल जात। सामाजिक स्थानो के सरकार इनकरा के किनर ही पर छोड़ देले बा। सचाई इहे ह कि सांस्कृतिक स्थान के बिना सामाजिक स्थान एगो धोखा होला।

सामाजिक स्थान के रट लगावे वाला लोग के सामने 'नाउ' जात से आवेवाला भिखारी ठाकुर खातिर एहलोग के लगे कुछ नईखे। आज भिखारी ठाकुर दवंग जात के रहल त उनकर जयंती राजकीय स्तर पर मनावल जाईत।

हमनी के कलाकार लोग के का बा? हम त कय साल से भिखारियें ठाकुर के लेके चल रहल बानीं। कलाकार लोग के प्रति आदर के भाव रहे जें राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के पाठ्यक्रम में बिदेसिया पढ़ावे के बाह्य कईलसा साच त हबा कि इहां के लोग उनकरा के भोजपुरी के शेक्सपीयर कहलेवें बाकिर उनकर पहचान राष्ट्रीय स्तर पर ना रहे। नाटक के मुख्यधारा से मिखारी ठाकुर गायन रहस। हमनी के नाटकन के मंचन आ बिदेसिया के प्रयोग क के उनकरा के समकालीन रंगमंच पर ले आके आदर से बईठईनीं सन। आगहूँ के योजना में भिखारी ठाकुर शामिल वारन। हमनीं के उनकर बनावल बिदेसिया के प्रस्तुति से विदेशों में उनका नाम के डंका बजावे के चाहत बानीं सन। इ मख के साथे कहल जा सकेला कि भिखारी ठाकुर तुलसी, कबीर, मीरा, हब्बा खातून के बाद जुड़े वाला परम्परा के एगो आउर जरूरी हस्ताक्षर वारन। ■

अनुवाद : (अ. ना.)

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर गाँव के एगो आवाज

—कामरेड चन्द्रशेखर

मौखिक इतिहास के अनुसार भिखारी ठाकुर विदेसिया नाट्यरूप के जनक रहस, जवना में अनेक स्तर पर पहिले के लोकरूपन से बहुत कुछ लिहल गईल बा। समय का साथे भोजपुरी भाषा समाज के सभ वर्ग मे एकरा एगो मान्यता मिल गईल। बड़का लोग के मन में 'बिदेसिया' के प्रति कलुषता के भाव कम होत गईल।बाकिर इ खास क के निचिलका तबका के ही मनोरंजन आ शिरकत का साधन बनल रहल। इ पूरा इलाका में लोक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के बेहद सशक्त रूप बन गईल। अईसन विश्वास रहे, कि भिखारी ठाकुर के नाच में बीस हजार के करीब देखनिहार लोग जुटत रहे।

एह आँकड़ा में कुछ अति हो सकेला बाकिर कवनो गीत के पढ़न के कम से कम चार बार के दोहरावल भा 'चौपाइ' से लोक-उत्साह के चरमसीमा के पता चलेला। बाकिर बिदेसिया के गंवई (सबाल्टर्न) लोग के लाक संस्कृति से जोड़ला के इ मतलब ना होखे कि एकर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एकरा के छुट्टा छोड़ देले रहे। इ रूप सामाजिक-सांस्कृति प्रभावन के ओह सब विविध स्तरन के जटिल संश्लेष रहे, जवना के एगो आदमी के रूप में भिखारी ठाकुर आत्मसात कईले रहस।

उपनिवेशवादी वर्चस्व के कारण भोजपुरी क्षेत्र बीसवां सदी के पहिलका चौथाई समय में किसानन का कंगाली के रूप में सनल भीतरधात झेलत रहे। दोसरा ओरि खेतिहर तबका राष्ट्रीय आन्दोलन आ पहिलका विश्वयुद्ध के बाद आईल विकट मंदी से प्रभावित होत रहे। कलकत्ता के समृद्धि के एगो तथा केन्द्र बनके उभरला के साथ हीं भोजपुरीभाषा क्षेत्र के निचला तनका के ओह लोग खातिर, जे लोग छोट-मोट जरूरत तक के पूरा करे खातिर हमेशा परेशान रहे लोग, पुरूब का ओरी गईल एगो लमहर आकर्षण आ विकल्प बन गईल रहे। ■

अनुवाद : अ.ना.

सतुआ आ चलनी

सतुआ (सत्तू) भोजपुरिया लोग के भोज्य पदार्थ ह। सतुई पीये-खाये के परम्परा वैदिक काल से ही चलल आ रहल बा। चलनी से चालल सतुआ के उल्लेख ऋग्वेद के इ मंत्र में मिलेला–

सक्तुमिव तितउना पुन्नतो, यत्र धीराः वाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते, भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि।

(ऋग्वेद, दशम मण्डल, सूक्त ७१/२)

अर्थात्, जइसे चलनी से चाल के सतुआ के स्वच्छ आ पवित्र कईल जाला ओहिंग विद्वान लोग अपना प्रज्ञा से प्रकृति आ प्रत्यय के सहारे शब्दन के चाल के अलग कर देला।

सतुआ मेध्य होला। इ जग-प्रयोजन में प्रयुक्त होत रहे। जईसन हो अन्न तइसन मन आ औसन तन होला। अइसन पवित्र पदार्थ पर अपन जीविका चलावे वाला भोजपुरी क्षेत्र के निवासी लोग नितात श्लाघ्य भईल। उ लोग पवित्र चरित्र वाला होला। ■

–पद्मभूषण आचार्य पं. बलदेव उपाध्याय

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरीया समाज के पुनर्जागरण : आज के जरूरत

—डॉ० विद्याभूषण श्रीवास्तव
पत्रकार, राष्ट्रीय सहार, छपरा

डॉ० उदय नारायण तिवारी के स्वल आ बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् से निकलल ग्रंथ 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' के 1954 के संस्करण में छपल आ एह स्मारिका के शुरुअे में फेरु से छपल मानचित्र में दरसावल इलाका के आर्यभाषा-परिवार के एगो प्राचीनतम सदस्य, भोजपुरी भाषा के बोले वाला लोग के इलाका मानल जाला। विद्वान लोग एह बात पर एकमत ह कि प्राचीन कृषक आ पशुपालक वैदिक अर्थ सभ्यता एही जंग फरल-फुलाईल रहे, जवन अपना ज्ञान-स्रोत से सगरी दुनिया में अंजोर कईलस। भूगोल के भाषा में दुनिया के मानचित्र पर ई लगभग अस्सी हजार वर्ग किलोमीटर में फइलल क्षेत्र, कर्क रेखा के नजदीक 28'4 से 23'6 अक्षांश आ 80'8 से 85'9 देशान्तर पर स्थित बा। हिमाच्छित हिमालय या विंध्य पर्वत उपत्यका के बीच, एह पहाड़न से निकलल गंगाजी, सरजजू जी, गंडक माई, सोन कुंवर, गोमती देई समेत अनेक मीठा, स्वच्छजल से सालोंभर लबालब भरल रहे वाली असंख्य नदियन के द्वारा ले आईल गईल माटी से बनल निचिलिका गंगा के मैदान के एह इलाका के दुनियाँ के सबसे उपजाऊ इलाका मानल जाला। परिणामस्वरूप विश्व में सबसे सघन आबादी भी ऐही क्षेत्र में बसेला।

देश के भी सर्वाधिक सघन आबादी वाला एह भोजपुरी क्षेत्र के आबादी आज लगभग दस करोड़ से भी अधिक बा, सेह मे बहुत लोग रोजी-रोजगार, बैपार के सिलसिला मे सगरी भारत में छितराईल बा भा बस गइल बा। आबादी के दबाव के पिछलिका दू-तीन शताब्दी में जादे बढ़ला पर साहसी भोजपुरिहा लोग के निष्क्रमण अलग-अलग परिस्थिति में दुनिया के दोसर देसन मे भी भई आ आज म्यांमार, नेपाल, भूटान, अमेरिका, ब्रिटेन, सिंगापुर, मारिशस, सूरिनाप, फिजी, गुथाना, ट्रिनिडाड आ टुवैगो आ अरब देसनमें लगभग पाँच करोड़ भोजपुरिहा मूल के लोगा बसल बा, जेह लोग के मिलाके आज सगीर दुनिया मे पनरह करोड़ भोजपुरी भाषी वाड़न। इ आबादी दुनिया के सगरी आबादी के अढ़ाई प्रतिशत बा। आज दुनिया के एह अड़ाई प्रतिशत लोग के मातृभाषा, सभ्यता आ संस्कृतिये ना अस्तित्वों पर भयानक खतरा मंडरा रहल बा।

वैदिक काल से ईसा के एह एकईसवा सदी के यात्रा में पिछिला सदी से विश्व मे शक्ति के हस्तांतरण पूरब से पछिम हो गईल बा सवन दिनानु दिन आउर प्रबल होत जात बा। अपना चरम रूप में पहुँच गईला के बाद इ आज सभे के लील के अकेला राज भोगे के चाहत बा। विद्वान लोग के अनुमान बा कि आज विश्व में बोले जाये वाली लगभग छव हजार भषन में से आगामी एक सदी में नब्बे प्रतिशत भाषा समाप्त हो जाई, जवना भाषा के बोले वालन के संख्या बहुत बा, उनकरो ऊपर खतरा मंडरा रहल बा। कवनो भी साम्राज्यवादी कवनो देश पर अधिकार करे के पहिले भा बाद में उहां के साहित्यकार-संस्कृतिकर्मी आ साहित्य आ संस्कृति के सबसे पहिले खतम करेला ताकि लोग के केहू राह देखावेला ना रहे। बलशाली भोगवादी आंग्ल-सभ्यता या संस्कृति आज संचार-पद्धति पर अधिकार कके दुनियाँ के बाकी सब सभ्यता आ संस्कृति के एही सदी में खा-पचा के नामो-निशान मिआ देवे खातिर उद्यत हो गईल बा। अईसन संकटपूर्ण परिस्थिति में भोजपुरिया समाज के सबसे बड़हन जरूत बा। ■

www.bhojpurisahityangan.com

एगो परम्परा ह विदेसिया : शैली

—श्री भगवान राम, शिक्षक
कुतुबपुर, सारण

ठाकुर जी हमार जन्मभूमि के एगो महान पुरखा रहीं। उहाँ के विदेसिया के आज सगरी दुनिया में प्रचार बा आ सगरी दुनिया एकरा के विदेशिया शैली कहेला। आउर त आउर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली में आधुनिक हिंदी लोक नाट्य के एगो सर्वाधिक लोकप्रिय शैली के रुप में विदेसिया के पढ़ावल जाला।

बाकिर हमरा विचारानुसार विदेसिया एगो शैली ना परम्परा ह, भोजपुरी जीवनशैली के एगो सनातन परम्परा ह। भोजपुरिया लोग वैदिककालीन लोग आर्य लोग के वंशज ह। आर्य लोग महाभिनिष्क्रमण एतैहासिक उदारहण बा। हमनी के जीविका के तलाश में कहीं भी जानीं सन आ अपना व्यवहार आ पौरूष से अपना के आगे बढावेनी सन। विगत दू-तीन शताब्दी में त सात समुन्दर पार के देसन तक में जा के बस के ओकनी के आबाद करे वाला भोजपुरिया लोग के कहानी त सब कोई जाने ला। अबभी हमनी का रोज छपरा, सिवान, बलिया, मऊ आ मोतिहारी टिसन आ बस-स्टेण्ड से हजारों-हजार के संख्या में परदेश खातीर निकलेनी सन आ कमा के हर साल करोड़ो-करोड़ों रुपया भेज के मातृभूमि के आर्थिक रुप से मजबूत बनावेनीं सन। विदेश गइल हमनी के एगो आदि-परम्परा ह। इ परम्परा हमनी के कुल खानदान में वैदिक युग भा ओकरो से पहिले से ही चलत आ रहल बा। एह से हम आदरणिय ठाकुर जी के विदेसिया एगो शैली ना एगो सनातन भोजपुरी परम्परा माने के पच्छधर बानी।

विदेसिया के शैली ना वलूक परम्परा माने के प्रबल समर्थक अनेक शीर्ष भोजपुरी विद्वान लोग बा। प्रसिद्ध समिक्षक नागेन्द्र प्रसाद सिंह जी के लोगप्रकाशन, पटना से प्रकाशित चर्चित पुस्तक "सोच-विचार" में एहीविषय पर "विदेशिया: शैली न परम्परा" शीर्षक निबंध में जवन लिखने वानीं, इहाँ उद्धृत कइल बहुत समीचिन प्रतीत होता–विदेशिया शैली के भ्रमाक प्रचार क के कुछ निहित स्वार्थ प्रेरित नाट्य समीक्षक, निदेशक आ रंगकर्मी भ्रम फलावे सरकारी-अर्द्धसरकारी-संस्थान–संगठन व्यक्तियन के चक्कर में डाल रहन बाड़न, उनका से विभ्रम निहोरा बा कि उ अपना कुकृत्य आ धृणित काम में लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आ उनकर अनुपम सरजना विदेशीय के अपमानित आ लतमर्दन करे के बदले लोक नाट्य के विभिन्न शैलियन के विसूद्ध तुलनात्मक आ विकासमान परिप्रेक्ष्य में आकदमी पद्धति से अध्ययन, मनन, करस आ आपन राह निकालस त उहे भिखारी ठाकुर के प्रति एह परम्परा के विकास आ उनका प्रति सही श्रद्धाजलि होई। साहित्यक-सांस्कृति जगत के एह बुनियादी भ्रांति के साचहूँ जेतना जल्दी निवारण हो सके, संस्कृतिक शुद्धता खातिर उतना शुभ होई। ■

www.bhojpurisahityangan.com

विश्व साहित्य

भोजपुरी लोककथा : पुनर्मूल्यांकन

—डॉ० रसिक विहारी ओझा 'निर्भीक'
ग्राम-पो०-निमेज 802130

ऋग्वेद दुनिया के प्राचीनतम ग्रंथ ह। एहमें 'लोक' शब्द के प्रयोग कई जगह जनता के अर्थ मे भइल बा। ई अंग्रेजी के 'फोक' शब्द क अनुवाद ना ह। एहसे 'लोकसाहित्य' भी 'फोकलिटरेचर' के रूपान्तर ना ह।

'लोक के माने लोग भा जनता के समूह ह जे अब शहर आ गाँव दूनो जगह बा। किताबी ज्ञानसे दूर ओइसन लोग भा जनता के हृदय से निकलल कवनो दुःख-सुख, खुशी-नाराजगी के अनुभूति वाणी बनिके साहित्य के रूप ध लेला त ओकरा के 'लोकसाहित्य' कहल जाला।

'लोककथा' लोक साहित्य के एगो वर्ग ह। लोककथा मनई के अर्न्तमन में कल्पना के ताना-बाना भरनी पर बिनल रंगीन सपना के साकार रूप ह। एकरा के मनई के देखल-सुनल अनुभव कइल घटनन के दस्तावेज कहल जा सकत बा। लोककथा लोककंठ से निकलल बेतार के तार लेखा मुँहा-मुँही दउरेवाला लोकमानस में फइलेवाला कहानी भा वार्त्ता ह।

'कथा' शब्द कहानी के पर्यायवाची ह यानी कथा के बदला में आइल वोही अर्थ के दोसर शब्द ह। लोककथा में मनई के मन के मधुर इतिहास अंकित बा। मनई जवन कुछ कइले बा ओकरा लेखा जोखा त इतिहास में आ जाला, बाकिर अपना मन में जवन कुछ सोचलस गुनलस, रंगीन कल्पना के ताना भरनी क के बिनाई कइलस, सुन्दर सपना संजोवलस ओकर विवरण एह लोककथा में सुरक्षित बा। सदियन से ई लोगन के मनोरंजन करत आइल बा। एइमें कुछुवो असंभव ना होला। एह में ढेला आ पतई, साँप आ बाघ में दोस्ती निबहेला, चिरई संदेश पहुँचावेले, कुसमयअइला पर दीवाल में गाड़ल खूँटी पर टाँगल सोना के नौलखा हार खूँटी लील जाले। एहमें राजा बकरी चरावेले, बाबाजी दिनभर माँगले त सवा सेर भीख मिलेला आ एक पहर माँगले तबो ओतने मिलेला। एहमें मनई एक कुलाँच में सात समुन्दर टाप पार फानि जाला, बड़ से बड़ घनघोर जंगल पलभर में लाँघ जाला आ कवनो खूबसूरत राजकुमारी के शादी रचावे खातिर टाँगि ले आवेला। मनई भा कवनो दईत के प्रान कवनो चीज-बतुस में भा जीव-जनतु में बसेला। ओकरा के तूरि-फोड़ि भा मार दीहला पर ऊ मरि जाला।

मनई के आपन कहे आ दोसरा से सुने के जन्मजात स्वभाव ह। ऊ जवन कुछ देखेला-सुनेला आ अनुभव करेला, ओकरा के दोसरा से कहे खातिर बेचैन रहेला, केहू से बतावे खातिर मौका के ताक में रहेला। मनई के एही स्वभाव से कथा के उदय भइल बा जवन नाना रूप से लोकजीवन पर छवले बा।

लोककथा के खास खासियत बा कि एकरा रचयिता के बारे में कवनो आता-पता ना चले। उनकर नाँव-गाँव आ रचनाकाल के पता ना लागे। लोककथा के मूल पाठ ना मिले। इन्हनो में स्थानीयता के पुट रहेला। ई अधिकतर मौखिक परम्परा से चलल आवता। लोककथा में कवनो मनई, जानवर आदि के खास नाम ना होला। ऊ अपना पूरा जाति के प्रतिनिधित्व करेला, जइसे एगो बाबाजी रहले, एगो नाऊ रहे, बाघआ हुड़ार रहे इत्यादि।

लोककथा के जनजीवन में बहुत महत्व बा। खुशहाली के क्षण में जहवाँ एकरा से मन बहलाव होला, बच्चन के शिक्षा दीहल जाला वोहिजा दुःख-सुख, शोक-हर्ष के क्षण में

www.bhojpurisahityangan.com

इन्हनी से नैतिक आचरण आ धीरज धरे के संदेश मिलेला। खेत-खलिहान, बाग-बगीचा, मेला-हाट में जहवाँ रात में जागल जरूरी हो जाला। वोहिला भोजपुरी लोककथा रात जगा आ रात बीतावे के एगो बढ़िया साधन बने जाले।

जहाँ तक भोजपुरी लोककथा के वर्गीकरण करे के सवाल बा, अभी तक एकर कवनो प्रामाणिक संग्रह प्रकाशित नइखे भइल। ई अभी तक मौखिक परम्परा में चलल आइल बा। इअसन हालत में एह पंक्तियन के लेखक आ स्व० डॉ० परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी' अपना अध्ययन खातिर लगभग 2000 लोककथाके निजी संग्रह तइयार कइले बाड़े। मूल प्रवृति आ विषय के ख्याल से एह कथा सभ के विवेचन के आधार पर भोजपुरी लोककथा के छः भाग में बाँटल जा सकत बा, यथा :

(1) सामाजिक लोककथा :– जेइमें परिवार के संबंध, जाति के बारे में धारणा, सामाजिक संस्कार, अनुष्ठान, भोजन, पेय पदार्थ, पशु-पक्षी, वनस्पति जगत, वेश-भूषा, अलंकार प्रसाधन, भूगोल वगैरह के वर्णन होखे।

(2) धार्मिक लोककथा :–व्रत-त्यौहार, देवी-देवता के पूजा के संबंध में, व्रत-उपवास, पूजा-पाठ, मंदिर-मठ के बारे में।

(3) आर्थिक लोककथा :– नौकरी, व्यापार, अमीरी-गरीबी, कृषि-उत्पादन, बाट माप-तौल, यातायात के बारे में।

(4) राजनैतिक लोककथा :–राष्ट्र प्रेम, देश खातिर बलिदान, त्याग, राजा-रानी, ऐतिहासिक पुरूष, दंड-विधान, न्याय वगैरह के बारे में।

(5) दार्शनिक लोककथा :–भाग्यवाद, कर्मवाद, जन्मान्तरवाद, ईश्वर में विश्वास वगैरह के बारे में।

(6) विविध लोककथा :–जवन कथा ऊपर के वर्ग में ना आ सके। खास करके परी, रहस्य, रोमांच, साहस, धीरज, खतरा, सपना दईत, पशु-पक्षी, खाली मनोरंजन, हास्य प्रधान कथा।

ऊपर लिखल वर्गीकरण विषय के मुताबिक भइल बा। शैली के मुताबिक इन्हनी के चार भाग में बाँटल जा सकता बा–

(क) गेय लोककथा–जवना के गाके सुनावल जाय, जइसे सोराठी बृजाभार।

(ख) स्वरित लोककथा–जवना के स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ कहल जाव जइसे पिंड़िया के कथा।

(ग) कथ्य लोककथा–जवना के आम बोल-चाल के भाषा में कहल जाव जइसे आमकथा कहल जाला। एकरा के गद्य कथा कहल जा सकत बा।

(घ) मिश्रित लोककथा–जवना में गद्य के साथ बीच-बीच में गावल जाव भा स्वर के साथे टेक होखे, जइसे मैनी आ दाल के कथा, सोकिया ढोलन के कथा। अइसन लोककथा चम्पू शैली में होला।

स्रोत के अनुसार वर्गीकरण

स्रोत के विचार से लोककथा के नीचे लिखल वर्गन में बाँटल जा सकत बा–

(अ) पौराणिक कथा–श्रवण के कथा, शिव-पार्वती, विष्णु, रामजी आदि देवता भा पौराणिक पात्रण के कथा।

(आ) ऐतिहासिक कथा–गोपीचंद, भरथरी, विक्रमादित्य वगैरह के बारे में।

(इ) व्रत-त्यौहार–पिंड़िया, जिउतिया, गणेश चौथ, अनंत भगवान आदि क कथा।

www.bhojpurisahityangan.com

(ई) परम्परा सम्बन्धी–सोरठी बृजाभार, कुँवर विजयमल, लोरकी वगैरह जवना के इतिहास मे वर्णन नइखे बाकिर परम्परा से चलल आवत बा।

(उ) काल्पनिक कथा–जवन कवनो खास उद्देश्य से कल्पना कइल होखे। एकरो के तीन भागन मे बाँटल जा सकत बा– (1) मनुष्य संबंधी (2) देव-दानव संबधी (3) पशु-पक्षी संबंधी।

लोककथा के बारे में सामान्य अवधारणा बा कि ई गाँव-गँवई के अनपढ़ मनई के मनगढ़नत कहानी ह। इंगलिश ऑस्कोटिश बैलेड के भूमिका में प्रो० किटरेज लिखले बाड़े–"लोक साहित्य की शिक्षा से कोई उपकार नहीं होता....। जब कोई जाति पढ़ना सीख लेती है तो सबसे पहले वह अपनी परम्परागत गाथाओं का तिरस्कार करना सीखती है। परिणाम यह होता है कि जो एक समय सामूहिक जनता की सम्पत्ति थी, वह अब केवल अशिक्षितों की पैतृक सम्पत्ति मात्र रह जाती है।"[1]

ई अवधारणा अब सही नइखे लागत। अब त शिक्षिते मनई लोकसाहित्य के महत्व समुझत बाड़े। अब उहे एकर संग्रह आ अध्ययन करत बाड़े आ एकर लिखित रूप देके सुरक्षित राखि रखलबाड़े। विदेश आ भारत के कुछ विश्वविद्यालय में लोकसाहित्य के पढ़ाई हो रहल बा। लोकसाहित्य विधन पर विश्व सेमिनार (संगोष्ठी) हो रहल बा। अब त ढेर पढ़ल-लिखल लोगे लोकसाहित्य के रचनाकार हो रहल बाड़े चाहे ऊ लोकधुन पर गीत होखे भा बाल साहित्य के गद्य रचना।

बच्चन के हिन्दी आ अँग्रेजी पाठ्य पुस्तकन में अनेक लोककथा रूपान्तरित होके आवता। बाल पत्रिका आ आम पुस्तकन में लोककथा पर आधारित कहानियन के भरमार रहता।

'भोजपुरी लोककथा के विस्तार आ बदलत परिदृश्य'–के बारे में साफे बुझाता कि प्राचीन आ मध्यकालीन युग में मनोरंजन के साधन कम रहे। लोग अपना काम धंधा के निबटा के एक साथे बइठत रहे। खेत-खलिहान, बाग-बगीचा के रखवाली के समय एक जगह जउरियात रहे, समय बीतावे खातिर कथा-कहानी कहात रहे। जाड़ा के दिन में आग तापे खातिर कउड़ (अलाव) बोझात रहे। लोग आगतापे खातिर बइठत रहे आ एक-दोसरा से कथा-कहानी कहत-सुनत रहे। शिक्षा के प्रचार-प्रसार ना रहे। लोककथा, लोकगीत, बुझौवल, लोकगाथा बगैरह मनोरंजन के साधन रहे।

लोककथा के विस्तार मुखागर परम्परा से मुँहा-मुँही होत हजारन बरिस से चलल आवता। बिअहल लड़की एक गाँव से दोसरा गाँव भा एक राज्य से दोसरा राज्य आवत जात रहेलीसन। ऊ अपना संगे अपना भाई, भउजाई, आजी आ गँवइन से सुनल कथा के ले जात आ ले आवत रहेलीसन। देश-विदेश के बनजारा, मेला-हाट में टिकल मनई एक दोसरा से अपना किहाँ के कथा-कहानी सुनावत आ दोसरा से सुनत रहेला। एक तरह से कथा देश-विदेश में घूमत रहल बाड़सन आ जहाँ गइलेसन, वोहिजा के जनमानस में पइस गइलेसन।

अब त किसान आ सब वर्ग के लड़का-लड़की उच्च शिक्षा पावता। हजारन बरिस से मौखिक यात्रा करत आइल लोककथा में एह लोग के सुने में रूचि नइखे। अब एह लोगन के हाथ में ट्रांजिस्टर, इयर फोन, टेपरिकार्ड आ आधुनिक पत्र-पत्रिका रहता। अब ई लोग अपना महतारी-बाप, आजी-बाबा, नाना-नानी से कथा नइखे सुनत। एह से लोककथा के ई लोग सीखत नइखे आ अब खुद सीखत नइखे त अपना बाल-बच्चा के का सिखाई। एह तरह से कथा कहेके प्रथा जब धीरे-धीरे लुप्त होत जा रहल बा। ई लोककथा सभ अब बड़-बूढ़ के संगे खत्म हो रहल बा। अनुमान बा कि अउर पचास बरिस में 80 प्रतिशत लोककथा के लोप हो जाई अगर इन्हनी के संग्रह ना क लिआई।

www.bhojpurisahityangan.com

गांवन में आटा चक्की के लांप हो गइला से औरत सब अब जंतसार गीत नइखीं सन गावत। पढल-लिखल लड़कियन के संस्कार गीतन में रूचि नइखे। एह से एकरो कड़ी ढीला पड़ल जाता। हालांकि बिना गीत के कवनो संस्कार पूरा नइखे हो सकत। अइसन अवसर पर गीत गावल जरूरी हो जाला। एह से लोक सुभाषित गीत कुछ बाँचियो सकेला बाकिर कथा, बुझौवल (पहेली) के अइसन स्थिति नइखे। भले कुछ व्रतकथा व्रत के अवसर पर कहल जाला। ऊहो अधिकतर बूढ़े औरत कहेलीसन। अइसन मौका पर उन्हनिये के खोंज होला। एहसे इन्हनियो के भविष्य खराबे लागत।

ई लोककथा के ह्रास के युग चलत बा। इन्हनी के विनाशलीला हमनी के आँखि के सामने एह वैज्ञानिक युग में हो रहल बा। बहुत कम शिक्षित लोग एकर महत्व समझता कि एह लोक संपत्ति के रक्षा कइल उनकर पुण्य कर्त्तव्य बा।

लोककथा संग्रह के त ई आखिरी समय चल रहल बा। अगर एहघरी इन्हनी के संग्रह ना कइल गइल त फेनू कबो ना हो सकी। ऊ बड़-बूढ़ जे कथा के जानकार बा। उनका संगे सदा खातिर चल जइहेसन।

उपसंहार रूप में कहल जा सकता बा कि अर्ने (आयरलैंड) सन 1910 ई० में सबसे पहिले लोककथा के प्रकार के सूची प्रकाशित करवले रहलें। ऊ लिखले बाड़े कि कुल 550 से ऊपर के लोककथा विश्वभर में बा। डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार सब देशन के लोककथा के संख्या लगभग 3000 होई।

हम अपना संगृहीत लगभग 2000 भोजपुरी लोककथा के अध्ययन के आधार पर कहि सकत बानीं कि अगर संसार भर के लोककथा के ठीक मंथन कइल जाव त ई संख्या 5000 से ऊपर जा सकत बा। ई एहसे कि युग-परिवर्त्तन के साथ-साथ वोह युग के मानसिकता आ सोच में बदलाव आवत रहल बा। एह से कथा के मोटिव-अभिपाय पर ओकर प्रभाव पड़ता। अपना मूल रूप में समूचा संसार के लोककथा एके लेखाबा। इन्हनी के शिल्प, अभिप्राय, मोटिव, कथानक, लोकमानस अधिकतर एके तरह के बा।

संसार भर के लोक साहित्य के विश्लेषण बतावेला कि नया अभिप्राय बनावे के शक्ति बहुते कम बा। थोड़की सा अभिप्राय नया-नया रूप बदलि के अनेक लोककथा में मिलेला।

अनुसंधान से पता चलेला कि भारत के लोककथा के अनुवाद सबसे पहिले पहलवी में 550 ई० के लगभग आ एकरा 50 बरिस बाद अरबी भाषा में भइल आ फेनू यूरोप के दोसरा भाषा सभ में।

एहीसे 'एसोप्स फेबुल्स' में पंचतंत्र के कहानी के प्रभाव साफ-साफ दिखाई पड़ेला। ■

सर्वश्रेष्ठ भोजपुरी मिठाई : कलकता से एगो बंगाल के सज्जन काशीजी घूमे अइले। लउटला पर उनकर एगो साथी पूछलन कहीं कवन मिठाई रउआ सबसे अधिक पसन्द आइल। ओकर रुप नाम के तनी परिचय त दीहीं। त उन बंगाली सज्जन सर्वश्रेष्ठ भोजपुरी मिठाई, जिलेबी, के वर्णन अपना बंगला भाषा में कईलन:—

घूम धुमानीघूरा,
तार मध्ये रस
तार शाला का नाम बोलें जलेब,
जलेबी, जलेबा

बताई त ! अईसन दोसर कवन मिठाई होई जोना के कावनो भासा में वर्णन कईला से ओकर रुप-रंग के के कहो स्वादो बुझा जाय।

बलदेव राय सप्तापुरी नरांव (सारण)

www.bhojpurisahityangan.com

संस्मरण

राजनेता आ साहित्यकार

–डॉ. प्रभुनाथ सिंह
ग्रा०-मुबारकपुर, थाना-मांझी (सारण)

बात 1980-81 के ह, महीना आ तिथि ठीक से ईयाद नहखे। ओइ घरी हम बिहार सरकार में वित्त राज्यमंत्री रहीं। उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद में भाटपार रानी शहर के अगले-बगले कही एगो गाँव रहे जवना के नाम भी भुला रहल बानी। एतने ईयाद बा कि ओह गाँव, के नाम के साथ बघेल शब्द साटल बा। शायद ओह गाँव में बघेल राजपूत लोगन के विशेष आबादी बा। काफी पढ़ल-लिखल आ सम्पन्न गाँव लागत रहे। उहाँ एगो इन्टर कालेज भी बा जवना के स्थापना स्व: रघुराज सिंह कइले रहले। ओह घरी जिअत रहले। एक बार उत्तर प्रदेश विधान सभा के ऊ सदस्य भी रह चुकल रहले। गाँव-जवार में उनका अच्छा मान प्रतिष्ठा रहे। काफी लोकप्रिय नेता आ समाजसेवी रहन रघुराज बाबू। उनकर छोट भाई के बिआह श्री राम शेखर प्रसाद सिंह जी पूर्व सांसद के चचेरी बहिन से भइल रहे। ओ रिस्ता का चलते बराबर छपरा में उनकर आवा-जाही रहे आ हमरो से घनिष्टता रहे।

अपना गाँव के इन्टर कॉलेज में उ एगो समारोह के आयोजन कइले रहले। ओह घरी कॉलेज के ऊ प्रबंधक भी रहले आ उनकर बड़ बेटा प्राचार्य, जहाँ तक हमरा ईयाद पड़त बा ओह समारोह में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन सिंचाई मंत्री स्व. वीर बहादुर सिंह, कृषि राज्यमंत्री निर्भय नारायण सिंह, गृह राज्यमंत्री आदि लगभग आधा दर्जन मंत्री लोग बटोराइल रहे। अन्य कार्यक्रम के अलावा ओह जनपद के तीन गो नामी-गिरामी साहित्यकार लोगन के सम्मानित करे के भी योजना रहे। सम्मानित होखे वाला साहित्यकार रहले हिन्दी के स्थापित कवि श्याम नारायण पाण्डेय, डॉ. शंभुनाथ सिंह आ भोजपुरी के जानल-मानल साहित्यकार धरीक्षण मिश्र। आज ई तीनों लोग एह देश-दुनिया से उठ चुकल बा। स्कूल बा। स्कूल का हाता में विशाल पंडाल लागल रहे आ सारा पंडाल श्रोता लोगन से खचा-खच भरल रहे। ओह आयोजन में हमहुँ आमंत्रित रहीं आ रामशेखर बाबू के साथ पहुंचल रहीं। ओह समारोह के मंच पर बइठल हम एगो अइसन जीव रही जेकरा में राजनेता आ साहित्यकार दुनू के जीन रहे फिफ्टी-फिफ्टी।

राजनेता लोग के भाषण के सिलसिला शुरू भइल। कुछ दिन पहिले के इमरजेंसी के दिन लोग भुलाइल ना रहे। इमरजेंसी में प्राय: साहित्यकार आ पत्रकार लोग ओह घरी के इन्दिरा गाँधी के खिलाफ कविता आ आलेख लिखे में पीछे ना रहल आ जम के लिखल भी। कांग्रेसी नेता आ मंत्री लोगन के अइसन साहित्यकार लोगन से नाराजगी वाजिब रहे। भाषण देते-देते कुछ कांग्रेसी नेता लोग साहित्यकार लोगन पर प्रहार भी कर दिहल आ चाटुकार, दरबारी आदि शब्दन के प्रयोग साहित्यकार लोगन खातिर करे में कवनो परहेज ना कइलस। पंडाल के अन्दर के सारा वातावरण तनावपूर्ण हो गइल।

तीनु कवि लोग जब बोले खातिर 'खड़ा भइल त कांग्रेसी नेता लोगन पर जम के बरसल। श्रोता लोग साहित्यकार लोगन के पक्ष में खड़ा हो गइल। साहित्यकार लोगन के भाषण पर जमके ताली गड़गड़ाये लागल। वातावरण के पूरा गरमावे में बढ़-बढ़ के भूमिका रहे "हल्दी घाटी" के रचयिता आ वीर रस के कवि श्याम नारायण पाण्डेय के। बुढ़ापा में भी खून के गरमी ठंढाइल ना रहे। अजीब तरह के तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो गइल। अइसन लागत रहे कि अखाड़ा में दु दल के पहलवान आपस में भीड़ल होखस। मंच पर आसीन वक्ता लोग में एगो हमहीं बाचल रहीं जेकरा भाषण देबे के अब रह गइल रहे। अंतिम कार्यक्रम रहे यहाँ उपस्थित तीनों साहित्यकार लोग के सम्मानित करे के। ई काम हमरा के संउपल गइल रहे शायद एह से कि भोजपुरी में कुछ लिखे-पढ़े के हमरा आदत रहे। अर्थशास्त्र के विद्यार्थी के साहित्य में अभिरुचि एगो अजुब चीज लोग का लागी। अर्थशास्त्र आ साहित्य का बीच दूर-दूर तक कवनो रिस्ता

www.bhojpurisahityangan.com

ना होला। साहित्य संवेदनशील लोग के चीज ह आ अर्थशास्त्र मौलिक रूप से यथार्थवादी भा भौतिकवादी लोगन के। अर्थशास्त्र शरीर के खुराक जुटावे वाला शास्त्र होला ता साहित्य दिल-दिमाग के।

साहित्यकार लोगन के सम्मानित करे खातिर जब हम खड़ा भइनी त एक-एक करके तीनों साहित्यकार लोगन के गर्दन में माला पहिना के, अंगवस्त्र ओह लोग के ओढ़ा के आ हाथ में प्रशस्ति-पत्र थमा के हम चरण छू के प्रणाम कइनी। आ ओह लोग के चरण धूरि माथे चढ़ाके ढाका के ढाका आशीर्वाद पवनी। अंतिम वक्ता के रूप में हमार जिम्मेदारी रहे बोझिल वातावरण के हल्का करे के, संतुलन स्थापित करे के। हम अपना भाषण में कहनी "हमरा बुझात बा कि इहाँ साहित्यकार आ राजनेता लोगन में टकराव-के स्थिति पैदा हो गइल बा। **साहित्य समाज के दर्पण होला। साहित्यकार जवन समाज में देखेला ओकरे आकृति अपना कविता लेख आ कहानी में उतार के पाठक के सामने राखेला। ओकर कवनो व्यक्तिगत राग-द्वेष ओकरा में ना होखे। साहित्य के माध्यम से राजनेता समाज के सही स्थिति के जानकारी प्राप्त करेला आ ओकरा आधार पर नीति आ योजना तइयार कर के कार्यान्वित करेला लोक कल्याण खातिर। यदि ऊ साहित्य से कट जाला त ओकरा द्वारा निर्धारित नीति आ योजना कभी भी सही ना हो सकेला। राजनीति का बराबर साहित्य का पीछे चले के चाही। जब कभी साहित्य पर राजनीति हावी भइल बा त अनिष्ट भइल बा। इतिहास एकर गवाह बा। राजनेता खातिर साहित्यकार पूज्य होला। कहल भी गइल बा–"स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते"। अगर अइसन बात ना रहित त कवनो देश के गुलाम बनावे के पहिले उहां के साहित्यकार, साहित्य आ संस्कृति के खत्म करे के प्रयास ना होइत। राजनेता का बराबर साहित्यकार का पीछे चले के चाहीं। इहे लोकधर्म ह।"** फेर का पूछे के रहे। सारा माहौल बदल गइल। वातावरण सुखद आ शांत हो गइल। लोग ताली-बजा-बजा के पूरा भाषण के खूब मजा लिहल। सगरे साहित्य छा गइल आ ओकर झंड़ा गड़ा कइल। हम जईसे भाषण दे के मंच पर बइठनी, श्याम नारायण पाण्डेय फेर से दोबारा खड़ा होके माइक थाम लिहले आ कहले, "हमरा ई बात अबगे समझ में आइल ह कि जब उत्तर प्रदेश के आधा दर्जन मंत्री लोग इहां उपस्थित बा त काहे खातिर एक अदद मंत्री बिहार से उधार मंगावल गइल ह। हमनी धन्य बानी की सही हाथ से हमनी का सम्मान आज मिलल ह। एक बार के घटना के भी पाण्डेय जी बयान कइनी।

गोरखपुर में शायद कवनो महाराणा प्रताप कॉलेज बा। हल्दीघाटी क रचयिता श्याम नारायण पाण्डेय महाराणा प्रताप के गाथा वीर रस का चासनी से पाग के एगो इतिहास बनवले बाड़े। एह महाकाव्य के रचयिता पाण्डेय जी के सम्मानित करे के कवनो कार्यक्रम एह कॉलेज में आयोजित रहे। राणा खान्दान के कवनो राजकुमार के विशेष रूप से एह अवसर पर पाण्डेय जी के सम्मानित करे खातिर बोलावल गइल रहे। सभागार में सारा मजमा लागल रहे। ओह राजकुमार के दुगो आदमी अगल-बगल से हाथ ध के मंच की ओर आवत रहे। शायद मुख्य अतिथि जी कुछ ढार ले ले रहीं। पाण्डेय जी बतवले कि उनकरा के देखते उहाँ का सभागार से उठ के जे भगनी त लोग का हाथ गोड़ पड़ला पर भी लौट के ना अइनी। उहाँ का इहे कहत भगनी कि जवना महाराणा के वीरता आ बलिदान के गाथा हम हल्दी घाटी में गवले बानी ओह खून खान्दान के ई आदमी ना हो सके आ अइसन आदमी के हाथ से सम्मान ग्रहण कइला से ओह 'वीर' सपूत के अनादर होई आ हम आ हमार ग्रंथ भी कलंकित हो जाई।

ओह अवसर के बात आइल गइल लेकिन कबो-कबो एकांत में दिमाग पर ओह आयोजन के चित्र सामने आ जाला। रात में कॉलेज के ओह समारोह में कवि सम्मेलन के भी आयोजन रहे। हम फुरसताह ना रहीं, एह से मिटींग के बाद रामशेखर 'बाबू' के साथे चल दिहनी। आज ले अफसोस बा कि हमरा, कवि-सम्मेलन में भी भाग लेबे के चाहत रहे कम से कम कुछ आउर श्याम नारायण पाण्डेय जी से सुने के मिलित। डॉ. शंभुनाथ सिंह जी के प्रसिद्ध कविता शायद सामयिक लागित, **"समय की शिला पर, मधुर चित्र कितने किसी ने बनाये किसी ने मिटाए"**। लेकिन हमरा साथे उलटा हो गइल कि ओह समारोह के जवन चित्र-दिमाग में बनल ऊ आज ले ना मिटल। ■

www.bhojpurisahityangan.com

आ.ना

काव्यांजलि

भारतीय समाज में हाशिया के स्थिति पड़ल भोजपुरिया समाज के मनोभावन के दर्शावत एह काव्यांजलि में जहाँ रऊवा लोग के भोजपुरी काव्य के सौष्ठव आ माधुर्य के स्वाद मिली उहईं सदियन से दलित, शोषित, अपवंचित आ आज भी ओही दशा से गुजरत बलुक, सबसे खराब दशा से गुजरत एह समाज के युवा हृदय के स्पन्दन, व्यथा आक्रोश आ आशा भी मिली।

गोड़वा में जूता नइखे

पियवा गइलन कलकातावा ए सजनी !
तूरि दिहलन पति-पत्नी-नातावा ए सजनी,
किरिन भीतरे परातवा ए सजनी! पिया···
गोड़वा में जूता नइखे, सिरवा पर छातावा ए सजनी,
कइसे चलिहन रहतवा ए सजनी पिया···
सोचत-सोचत बीतत बाटै दिन-रातवा ए सजनी,
कतहूं लागत नइखे पातावा ए सजनी ! पिया···
लिखत भिखारी सोजिकर बही-खातावा ए सजनी,
प्यारी सुन्दरी के बातवा पर सजनी ! पिया··· ■

बेटी वियोग

चलनी के चालल दुलहा सूप के झटकारल हे।
दिअँका के लागल बर दुआरे बाजा बाजल हे।।
आँवा के पाकल दुलहा झाँवा के झारल हे।
कलछुल के दागल बकलोलपुर से भागल हे।।
सासु के अँखियाँ में अन्हवट बा छावल हे।
आइ के देखऽ बर के पान चभुलावल हे।।
आम लेखा पाकल दुलहा गाँव के निकालल हे।
अइसन बकलोल बर चटक देवा के भावल हे।।
मउरी लगावल दुलहा जामा पहिरावल हे।
कहत 'भखारी' हउवन, राम के बनावल हे।। ■

जोगिनियाँ बन के

हे राम, जोगिनियाँ बनि के हम,
करब मालिक के उदेस। हे राम···
तूरि के गला के हार, देहब अगिया में जार
छोड़ि के परइलन परदेश । हे राम···
टिकुली-सेनूर तजि, पिउ-पिउ भजि-भजि
छूरा से छिलाइ कर केस । हे राम···
गहना सोना-चानी के, लोढ़ा से खानि-खानि के,
एही सोचे बनबि अनभेस। हे राम···
कहत भिखारी नाई, अंग में भभूत लगाई
तूमा लेके घूमब हरमेस। हे राम··· ■

सकलन : रजनीश कुमार गौरव

www.bhojpurisahityangan.com

"भिखारी के गाँव"

—जखमीकांत 'निराला'
कोल्हरामपुर, भोजपुर

बस एक बेरि
देख आई
कुतबपुर गाँव
तबे बुझाई
भिखारी के भाव
गगा के रेत
हिगुआ के काँट
बबुरी के बन
एही में भइल
भोजपुरी धन-धन
सोन, सरजु-
गगा के समागम
एकही में तीनो के
अलग-अलग बहाव
बस एक बेरि देखि आई
कुतबपुर गाँव
एक बार देख आई भिखारी के गाँव
बैजुधाम, गुप्ता धाम
चाहे अशोक धाम
पुन खातिर जाइले
छाड़ी के काम
रहिया में, जहँ-तहँ डालत पड़ाव
बस एक बेरि देख आई
कुतबपुर गाँव
एक बेर देख आई
भिखारी के गाँव
कवनो तीरथ धाम से
गाँव महान बा
हमरो खा लो नइखी कहत
जानत जहान बा
भइल भोजपुरी के
एहिजे से फैलाव
बस एक बेरि देख आई

कुतुबपुर गाँव
एक बेर देख आई
भिखारी के गाँव
पटना से चली त
उतरी मनेर
आरा से चली त
उतरी चिरान में
केनिओ से लगभग
दुफोसी चलाव
बस एक बेरि देख आई
कुतबपुर गाँव
एक बेर देख आई
भिखारी के गाँव
नाहिं जो देखब
त पाछे पछतईब
छपल कि ताब बा
गीत खाली गईब
कचोटी मन बेर-बेर
टभकी बनी के धाव
एक बेरि देख भाई
कुतबपुर गाँव
एक बेर देख आई
भिखारी के गाँव
कवि कलाकार
चाहे साहित् सिरज नहार कहीं
सतो में महासत
भोजपुरी के सिगार कहीं
दानियो में दानी महादानी बानी के
ऊ दिल रहे कि रहे दरिआव
बस एक बेरि देख आई
कुतुबपुर गाँव
एक बेर देख आई भिखारी के गाँव

जाईं ना त हो जाई
अलोपित नि सानी,
पूँजीवादी थोड़ा के
पीठ पर मुलतानी
मारे महँगाई
ठाँव से कुठाँव
बस एक बेरि देख आई
कुतुबपुर गाँव
एक बेर देख आई
भिखारी के गाँव
सुतल सरकार
निरास भइल मनई
मिलेना आसरम के
भरपेट खनई
जनमें से लागल
जरी-पीरी कटाव
बस एक बेरि देखआई
कुतुबपुर गाँव
एक बेर देख आई
भिखारी के गाँव
जनम तिथि, पुण्यतिथि
सबकुछ मनाई जा
जइसे होखे
भिखारी जनम भूई बचाईजा
जतना बा कवि के काम अधुरा
करी जा पुरा किताब छपवाई जा
तब भोजपुरी के भेंटी, सुनर ठाँव
बस, एक बेरि देख आई
कुतुबपुर गाँव
एक बेर देख आई भिखारी के गाँव
करब बिस्वास
कि झुर-झल्लास में
जनम पाई पऊरुख
उगल अकास में
भूँई से निहारी
मने-मने बियारी
कइसे खेवाई झँझर
भोजपुरी के नाव
बस एक बेरि देख आई
कुतुबपुर गाँव
एक बेर आई भिखारी गाँव ■

www.bhojpurisahityangan.com

सबेरे बेरा बोलेले कोयलिया

—डा० कवींद्र कुमार

सिया मस्जिद से पूरब
दहियावां, छपरा

अमवाँ मैं लगले मोजरिया,
सबेरे बेरा बोलेले कोयलिया।
खेतवा में गेहूआं के; लहरे फसलिया,
हमें चिंहुकावेला; पपीहा के बोलिया,
लागल करेजवा में गोलिया,
सबेरे बेरा बोलेले कोयलिया।
देखिके फसलवा; के झूमेला किसनवा,
चह-चह चहकेला; खेत खरिहनवा
चहकेला मन के महलिया,
सबेरे बेरा-बोलेले कोयलिया।
अनजा के ढ़ोइ ढ़ोई; कोढिलाभशला,
मसउल से डेहरी ले; संचिके धराला,
अँगना में बाजेला पायलिया,
सबेरे बेरा बोलेले कोयलिया। ■

गाँवे चलऽ

–वकील दीक्षित, बोकारो

देख नहरी पर वरसे नव-नीत,
मित गाँवे चलऽ
घसवा बिछावे, मखमली रजइया
हिले, डोले झुमेला, केरा कड पतइया
मौती बरिसावें ओपर, राती के शीत-
मित गाँवे चलऽ
ललकी किरिणयाँ आके भोरही जगावे,
गइया, भईसिया बैला, पंगुरी चलावे
बागें ला मुर्गा, काँव-काँव कउआ बोलावे
मित गाँवे चलऽ
अगवा अलानी पर, छतवा पलानी पर,
पसरल बा लतर, गतर-गतर मयानी पर
ओही पर किरिण, आपन पंख फइलावे-
मित गाँवे चलऽ
लम्बा-लम्बा लटकलबा, तगवा कदुइया,
कोहरा लड्डू भइलबा फरके-फरके भुइया
सेमवा के गुछा, पुरवईया हिलावे–
मित गाँवे चलऽ
नहरी का कजरी, लोग गोरू चरावे,
कानवा में अँगुरी दे, बुधुआ बिरहा गावे
मइनी गइया, पक गइल ठावे–
मित गाँवे चलऽ
लम्हर बोझा लेके लयके राम-रतिया
खोदी-खोदी मदना, करेला दुरगतिया
उसकी चलावे कल्हुआरी के गीत–
मित गाँवे चलऽ
टेढ़-मेढ़ पग-डन्डी से आई बराती,
फुलेना का घरे हे। ला सन्झा-पराती
रवड़ उल कटावे आ माडो छववावे–
मित गावें चलऽ
सभका किनाइल बा इयरी आ पियरी छोट
झमकावे महेशरा के धियरी
कथा-पुजा कलशा आ, हरदी चढ़ावें–
मित गावें चलऽ
एहू एलेकसन में जित गइले कमला
अबकिरे। खटाई में सड़क के ममला
पक्की बनावे आ विजुरी लगावे–
मित गाँवे चलऽ
लड्डरी महइया पर, लागल हिलोरवा,
जड़े-मुड़े लदरल बा अम्मवा टिकोरवा
कुके ले कोइली आ, पपीहा बोलावे–
मित गाँवे चलऽ
खेत खरिहानी में, घरवा बथानी में
पीपर का छइयाँ में नदिया का पानी में–
कण-कण में पसरलवा, गँउआ के प्रीत-
मित गाँवे चलऽ
साँझ कऽ वाँस वारी में युँत्र-याँत्र गाँवे-
मैना-मैनी, तोता-तोती, बगुला सूर मिलाव
गावेला दादुर, झिंगुर झुन-झुना बजावे
मित गाँवे चलऽ ■

www.bhojpurisahityangan.com

ना जोश, ना होश

—अनन्त कुमार सिंह, प्रधानाचार्य
शिशु निकेतन, नरांव, सारण

ना जोश रहल, आ होश गईल
पूर्वज के कृति, सपना भईल
नवयुवक राह से भटक-भटक
देखी कहवाँ मदहोश भईल– ना जोश रहल....
प्राथमिक चिकित्सा अधिकार जहाँ
मानटेसरी का व्यापार वहाँ
आचार्य, गुरूजी, सर बन गये
शिष्य का शिष्टाचार कहाँ-
मैट्रिक, इन्टर, स्नातक, पी०जी०
टेबुल कुर्सी सब पास भईल, ना जोश.....
गाँधी नेहरू आ जयप्रकाश के,
आदर्श ना केहु अपनावें
युगद्रष्टा भिखारी ठाकुर के
लोकाचार कहाँ कोई समझावे
हॉलीवुड, बॉलीवुड के आगें
नतमस्तक दुनिया, खामोश भईल- ना जोश रहल.....
जे खुब बोले उ नेता बा
आज्ञाकारी कहाँ कही बेटा बा
आतंकी; धुसपैठी, लादेन हर दिल में
ना देश के कहई, चिन्ता बा
डॉक्टर, इंजिनियर, किसान यहाँ
मन-मार, मसोस, निराश भईल–ना जोश रहल।

■

दुल्हा के होला व्यापार हे मामा

—रमजानअली रौशन
लेदर हाऊस, नगरपालिका चौक, छपरा

कोंहरा के फुलवा संग नेनुआ के बतिया
सजना के नैनवा में सजनी की अँखिया
कब आई अइसन बहार हे मामा
कब होई सजना से प्यार हे मामा
कितना सोहावन होला चाँदनी की रतिया
सजना के बँहवाँ में मीठी मीठी बतिया
कब होई सोलहो शृंगार हे मामा
कब होई सजना से प्यार हे मामा
पियू-पियू बोले ली मन में पपीहिया
सजना छुपल होइहें बगिया समीपिया
बगिया में करी इन्तजार हे मामा
कब होई सजना से प्यार हे मामा
फुलवा के सेजवा व हरी हरी पत्तिया
सजना बिन सजनी के कटे नाही रतिया
सेजवा पे बानी बेकरार हे मामा
कब होई सजना से प्यार हे मामा-
अमवा की बगिया में कुहके कोयलिया
लोगवा न बुझेला मन की पहेलिया
कितना बा जुल्मी संसार हे मामा
कब होई सजना से प्यार हे मामा
सोनवा व चंदिया व मांग बा नगदिया
बबुनी के उम्र पर कब होई शदिया
मंगवा बा काहे बेशुमार हे मामा
कब होई सजना से प्यार हे मामा
दोवारे-दोवारे धूमी-धूमी घिस गइले चटिया
बाबूजी के जरे जरे थकले संगतिया
दुल्हा के होला व्यापार हे मामा
कब होई सजना से प्यार हे मामा
"रौशन" समाज से कहे दिन रतिया
लोगवा न मानेला "रौशन" की बतिया
नियमा के होला संधार हे मामा
कब होई सजना से प्यार हे मामा

■

www.bhojpurisahityangan.com

आयोजन समिति आ स्वागत समिति के सदस्य

प्रो० संजय पाण्डेय

सुरेश पाण्डेय

श्रीभगवान राम

जयराम

असर्फी सिंह यादव

प्रेमप्रकाश सिंह

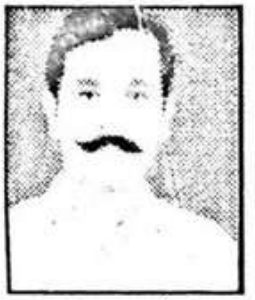
रामइकवाल चौरसिया

बालदेव राय सत्तापुरी

रजनीश कुमार गौरव

वेद प्रकाश ठाकुर

राजेन्द्र प्रसाद ठाकुर

डॉ विद्याभूषण श्रीवास्तव

अनन्त कु० सिंह

ज्वाला प्रसाद

प्रवीण कुमार

www.bhojpurisahityangan.com

आयोजन समिति आ स्वागत समिति के सदस्य

अजय कुमार ठाकुर

कपिलदेव राय

रजनीश कुमार

ललन राय, अध्यक्ष (आ.स)

सत्येन्द्र सिंह, महासचिव (आ.स)

अजय कुमार

श्याम नारायण चौरसिया

मिथिलेश पाण्डेय

www.bhojpurisahityangan.com

नगर परिषद

छपरा

आवश्यक सूचना

छपरा नगर परिषद विकास की ओर तेजी से अग्रसर

शहर में प्रतिदिन 6 ट्रेकर एवं पे लोडर मशनी कार्यरत रहता है। परन्तु नागरिकों के सहयोग के अभाव में हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। इसका मुख्य कारण कूड़ा-कचड़ा यत्र-तत्र मुख्य सड़क पर डालना है। अगर कूड़ा-कचड़ा एक खास जगह पर सभी लोग रखें तो उसे उठाने में सहूलियत होगी। अतएव आप नागरिकों से साग्रह अनुरोध है कि कूड़ा को यत्र-तत्र न फेंके। इसे एक खास जगह पर ही रखा करें। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि कूड़ा-कचड़ा नाले में डाल दिया जाता है जिस कारण पानी का बहाव रुक जाता है एवं गंदा पानी सड़क पर बिखड़ जाता है। अतएव आम नागरिकों से अनुरोध है कि अपने आस-पास की नालियों में कूड़ा न डालें।

नगर परिषद, छपरा आर्थिक परेशानियों से गुजर रहा है। टैक्स का निर्धारण विगत 20 वर्षों से नहीं हुआ है। संसाधन की कमी के कारण कर्मियों के वेतन भुगतान एवं अन्य विकास कार्य करने में नगर परिषद असमर्थ है। अतएव आम नागरिकों से अनुरोध है कि अपने-अपने होल्डिंग टैक्स जमा करावें। इसे अत्यावश्यक समझें। हम नगर परिषद, छपरा के सभी कर्मी आपके सेवा में सतत प्रयत्नशील हैं।

छपरा नगर परिषद में स्वीकृत बल से बहुत कम सफाई कर्मी कार्यरत हैं एवं नगर की जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। इसके बावजूद नगर परिषद अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में सतत प्रयत्नशील है।

के० पी० यादव	**जितेन्द्र कुमार**	**नीलू कुमारी**
कार्यपालक पदाधिकारी	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष
नगर परिषद, छपरा	नगर परिषद, छपरा	नगर परिषद, छपरा

www.bhojpurisahityangan.com

महान समाज सुधारक : महाकवि भिखारी ठाकुर

आचार्य सारंगधर, शिक्षक
ग्राम + पत्रा०–पिरारो, वाया–सुतिहार, सारण

धरा जब-जब विकल होती
मुसीबत का समय आता ।
किसी भी रूप में कोई
महामानव चला आता ।।

19 वीं शताब्दी के अन्त में नाना प्रकार की सामाजिक बुराइयाँ पराकाष्ठा पार कर चुकी थी, मानवमूल्य तिरोहित हो रहे थे, देश दासता की जंजीर में जकड़ा हुआ था, दीनों की दयनीय दशा पर लाज भी लजा जाती थी, **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'** की उक्ति ग्रन्थ की शोभा बढ़ा रही थी, बेटी को बेचकर धनवान बनने की प्रवृति जोरों पर थी, दहेज–दानव या धन लोलुपता के कारण बालिकाएँ बूढ़ों और अपाहिजों के साथ ब्याह दी जाती थीं, नशाखोरी, अन्धविश्वास और अशिक्षा का साम्राज्य था, विधवाओं के उत्पीड़न और विवशता की सीमा न थी ठीक उसी समय हिन्दी तिथि तालिका के अनुसार पूस शुक्ल एकादशी 1887 ई० तदनुसार 18 दिसम्बर 1886 ई० को सारण जिले के कुतुबपुर नामक गाँव में दलसिंगार ठाकुर की धर्मपत्नी की उर्वरा कोख से बालक भिखारी का जन्म हुआ।

बालक भिखारी को कोई औपचारिक शिक्षा नहीं मिली थी। केवल अनौपचारिक शिक्षा के द्वारा चिट्ठी-पाती बाँच लिया करते थे। परन्तु सरस्वती का वरद हस्त इनके मस्तक पर था।

बचपन में ही इन्हें अपने जातिगत पेशा (बाल बनाने) का प्रशिक्षण लेना पड़ा। किशोरावस्था में धनोपार्जन के लिए कलकत्ते की यात्रा हुई, परन्तु इनका मन अपने इस पेशे में रमा नहीं। बाल्यकाल से ही इनके हृदय-क्षेत्र में सामवेद की ऋचाओं के जो बीज सुरक्षित थे वे अनुकूल जलवायु पाकर रामलीला के दर्शनलाभ से अंकुरित और पल्लवित-पुष्पित होने लगे। इन्होंने लोक जीवन की गाथा लोक भाषा (भोजपुरी) में लोक नाटकों के माध्यम से प्रस्तुत किया। इनके सभी नाटक चम्पूकाव्य होते हुए गीति काव्य की श्रेणी में आते है। बिदेसिया, ननद मउजाई, भाई विरोध, गबर-घिचोर, बेटीबेचवा, पुत्रबध, कलियुग प्रेम, गंगा स्नान, राधेश्याम बहार और विधवा विलाप इनके गद्य-पद्य शैली में लिखे गये दसनाटक हैं जो भिखारी ठाकुर ग्रंथावली में संकलित हैं।

भिखारी के सभी नाटक किसी न किसी सामाजिक बुराई की जड़ पर आड़ी चलाते हैं। इनकी सभीरचनाओं में कला पक्ष और भाव पक्ष का सुन्दर सामंजस्य स्थापित हुआ है। कला और भाव का यह मणिकाञ्चन योग भिखारी को कभी खड़ी बोली हिन्दी के जन्मदाता भारतेन्दु बाबू के निकट खड़ा कर देता है तो कभी भोजपुरी के सेक्सपीयर की उपाधि से विभूषित करता है। इन्हें **रायबहादुर** की उपाधि तो मिली ही, महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने **कहाकवि** की उपाधि से सम्मानित किया। महापंडित ने भी 'मेहरारून के दुखदाई' नामक अपने भोजपुरी नाटक के माध्यम से तत्कालीन समाज की बुराई पर्दा-प्रथा पर कठोर प्रहार किया था। उक्त नाटक में पर्दा-प्रथा के कारण ही दो पुरुषों की नव ब्याहता पत्नियों की परस्पर अदला-बदली हो गयी थी।

www.bhojpurisahityangan.com

'विदेसिया' भिखारी की श्रेष्ठरचना है। नायक गवना कराकर पत्नी को लाता है। पत्नी की पीत-पुनीत चुनरी अभी धूमिल नहीं हुई है, पैरों का महावर अभी मिटा नही है तबतक नायक न चाहते हुए भी अपनी दयनीय आर्थिक दशा के कारण कलकता चला जाता है। कलकते को उस समय अनपढ़-गवार लोग विदेश कहा करते थे। वह नायक अब विदेशिया की संज्ञा से प्रसिद्ध हो जाता है। वह वहाँ अधिक दिनों तक रह जाता है और पत्नी को भूल जाता है। इस अवधि में वह एक वारांगना के साथ अपना समय व्यतीत करता है। उसकी पत्नी भारतीय ललना है। वह उसकी याद में किसी प्रकार अपना समय काटती है। उसकी विरह-व्यथा गोपिकाओं की विरह-व्यथा से कम नही है।

दिनवाँ बितेला सइयाँ बटिया जोहत तोरा।
रतिया बितेला जागि-जागि रे विदेसिया ।।

अन्योक्ति के माध्यम से कवि ने अनेक प्रकार के बिम्बों और प्रतीकों का प्रयोग किया है–

उमवाँ मोजरि गइले लगले टिकोरवा से
दिन पर दिन पिअराए रे बिदेसिया।
एक दिन बही जइहें जूलूमी बेअरिया से
डाढ़े-पाते जइहें खहराइ रे विदेसिया ।।

उसी समय एक बटोही दिखाई पड़ता है। नायिका उससे भाई का संबंध स्थापित करती है और अपनी विरह-व्यथा से अवगत कराती है। यों तो **'उपमा कालिदासस्य'** कहा गया है, परन्तु भिखारी की उपमा उत्प्रेक्षा देखिए–

हमरा बलमु जी के बड़ी-बड़ी अँखिया से।
चोखे-चोखे बाड़ें नैना कोर रे बटोहिया ।।
ओठवा तो बाड़ें जैसे कतरल बानवासे।
नकिया सुगनवा के ठोर से बटोहिया ।।
दंतवा तो सोये जैसे चमके बिजुरिया से।
मोछियन भँवरा गुँजारे रे बटोहिया ।।

बटोही सत्प्रयास से वह पति को प्राप्त कर लेती है।

यही वह स्थल है जहाँ महाकवि भिखारी कवि-कुल गुरु कालिदास से आगे निकल जाते हैं। कालिदास के 'मेघदूतम्' का दूत मेघ है। वह निर्जीव है। यक्ष की बात को न तो वह सुनता है और न यज्ञ की प्रेयसी तक पहुँचता है। यक्ष का कथन केवल उन्मतका प्रलाप प्रतीत होता है। भिखारी ने बटोही को दूत बनाया। वह जीवित प्राणी है। वह नायिका की बातों को धैर्यपूर्वक सुनता है, उसे धीरज देता है। कलकत्ता जाकर उसके पति को खेजता है, समझाता है और पत्नी को यहाँ भेज देता है।

महाकवित ने अपने समस्त नाटकों के द्वारा दहेज प्रथा, बालविवाह, बेमेल विवाह, नशाखोरी, छुआ छूत, शोषण, दोहन, उत्पीड़न प्रभूति अनेक सामाजिक बुराइयों की जड़ पर कुठाराघात किया है। यदि इन्हें उत्तर बिहार का राजाराम मोहन राय कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

इनकी रचनाएँ चिर-नवीन हैं–

क्षणे-क्षणे यन्नवता भुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।

इसलिए रमणीय हैं और महाकवि भिखारी भी अमर हैं क्योंकि इसकी कीर्त्ति अमर है–

कीर्त्ति यस्य स जीवति। ■

www.bhojpurisahityangan.com

लोक संस्कृति और आधुनिक विकास के खतरे

—नागेन्द्र प्रसाद सिंह
सम्पर्क, जयदुर्गा प्रेस परिसर, नयाटोला, पटना-4, फोन: 656913

वेद-पुराण के साक्ष्य, नृशास्त्रीय शोध के उपलब्ध प्रमाण तथा प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व केउत्खनन एवं अनुमान के आधार पर यह स्वीकार करना होगा कि भारतीय संस्कृति का विकास पिछले पाँच हजार वर्ष की कालावधि में संभव हुआ लगता है। भौगोलिक विस्तार; प्राकृतिक, स्थितियों एवं संसाधनों के वैविध्य; आर्थिक विकास की स्वाभाविक भिन्नता; विश्वासों, मान्यताओं एव रीति-रिवाजों की परम्पराओं के स्वैर विकास के कारण विविधतापूर्ण लगनेवाली भारतीय संस्कृति में कुछ मौलिक एकता के दर्शन होते है, जो भाषा, पहनावा, खान-पान, रीति-रिवाज, देवी-देवता, पूजा-पद्धति, पर्व-त्योहार, गीत-संगीत, संस्कार-विश्वास आदि की भिन्नता के बावजूद एकात्मक है। भारतीय संस्कृति के विकास के इन पाँच हजार वर्षों की दीर्घावधि में इसका संस्पर्श विश्व की अनेकानेक संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के साथ विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक कारणों से होता रहा और इस क्रम में आदान-प्रदान के कारण भारतीय संस्कृति का एक संश्लिष्ट स्वरूप विकसित हुआ। परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति विश्व संस्कृति का संक्षिप्त सारांश बन गई है। भारतीय संस्कृति की उदारता, बौद्धिकता, सामंजस्य-क्षमता, पाचन-शक्ति और सहिष्णुता इसके लिए विशेष रूप से श्लाघनीय है। ऐसे सम्मिलन एवं समश्रयण के विविध अवसरों पर सम्पन्न सांस्कृतिक संघर्षों का भी अपना क्रमबद्ध इतिहास रहा है; किन्तु इससे स्वीकार कर आत्मसात् कर लेने एवं अनुपयोगी समझ तिरस्कृत कर देने की भी अपनी ऐतिहासिक एवं यथार्थवादी प्रक्रिया की रोचक परम्परा मिलती है, जिसको नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है।

भारतीय संस्कृति के अभ्युदय के प्रारंभिक काल-खण्ड के बाद 'उत्पादन के साधनों के स्वामित्व' एवं 'शक्ति-सम्पन्नों की वर्चस्वता' के कारण भारतीय समाज में वर्णों, वर्गों एवं समूहों का ऐसा विकास हुआ कि सम्पूर्ण भारतीय समाज विखंडित हो गया और एक स्थिति यह भी आई कि मोटा-मोटी दो विरोधी वर्ग बन गए। पहला वर्ग सम्पन्न, प्रशासक, शोसक, न्याय-प्रक्रिया का निर्माता एवं संचालक तथा शोषक-उत्पीड़क बन कर उत्तरोत्तर विकसित होता गया; किंतु सख्यात्मक दृष्टि से उनकी संख्या कम रही और वे आपसी संबधों एवं वर्चस्व-स्थापना के युद्धों में संलिप्त रहे। दूसरी ओर समाज की अपेक्षाकृत बड़ी संख्या साधन-हीन, श्रम-विक्रय के लिए मजबूर, विकास-गति में पिछली और भयानक शोषण-उत्पीड़न की शिकार अनवरत बनती रही। परिणामतः भारतीय समाज और सभ्यता के दो समानान्तर धाराओं का विकास अविराम एवं लगभग संघर्ष हीन चलता है। भारतीय संस्कृति के इस ऐतिहासिक द्वन्दात्मक विकास का अध्ययन यह प्रमाणित करने में सक्षम सिद्ध हो सकता है कि अमिताज्यों शक्ति-सम्पन्नों, प्रमुखों एवं उनके पक्षधर बुद्धिजीवी वर्गों ने एक भिन्न ढग की सभ्यता एवं संस्कृति का अपने हित में किया और दूसरी ओर समाज का एक बहुत बड़ा उपेक्षित, शोषित, अवसरहीन, श्रमाश्रित एवं पिछड़े समूह में एक भिन्न सभ्यता एवं संस्कृति का विकास मजबूरन स्वाभाविक अनिवार्यता के आधार पर होता रहा। इन दोनों में कालान्तर में आदान-प्रदान, अनुकरण एवं सामंजस्य के प्रयत्नों के भी न्यूनाधिक बौद्धिक एवं सांस्कृतिक प्रयास होते रहे; जिसके लिए सम्पन्न वर्ग के सारे विचारकों, धर्माचार्यों, दर्शनाचार्यों, साहित्यकारों एवं योद्धाओं ने बड़े कपटपूर्ण कौशल का सहारा लिया और ऊपर-ऊपर समन्वित एकात्मकता दीखानेवाली भारतीय

www.bhojpurisahityangan.com

संस्कृति भीतर से नारंगी के फाँकों में विभक्त रही। बहुसंख्य वर्ग की ही सांस्कृतिक चेतना, व्यवहार और क्रिया-कलाप को 'लोक-संस्कृति' का अभिधान काफी बाद के दिनों में प्राप्त हुआ।

संस्कृति, विशेषत: लोक संस्कृति, के विकास की गति बहुत धीमी होती है और उसके परिवर्त्तनों को रेखांकित एवं प्रारंभ-विन्दु का निरुपण कष्ट-साध्य परिकल्पना है। पिछली शताब्दियों की अपेक्षा वर्त्तमान शताब्दी में लोक संस्कृति विषयक जितने शोध हुए हैं, वे इस तथ्य को प्रतिपादित करते हैं कि आज लोक संस्कृति गहरे खतरे के तोप के मुँह पर निश्चेष्ट खड़ी है; क्योंकि वे शोध-कर्त्ता यह परिकल्पना कर रहे हैं कि लोक संस्कृति वर्त्तमन में अपनी प्रासंगिकता बड़ी तीव्र गति से खोती जा रही है। इस तर्क- शृंखला पर विचार करने के पूर्व यह स्पष्ट दृष्टिगत हो रहा है कि लोकसांस्कृति उपलब्धियों को समाप्त होने के पूर्व संकलित-संग्रहित, अनुरक्षित-अनुशोधित, विचारित-संवर्द्धित करने के लिए सिद्धांतत: मैं इस प्रयास का विरोधी नहीं हूँ; किन्तु, मेरी मान्यता होगी; क्योंकि लोक संस्कृति ने अपनी विकास-यात्रा के क्रम अनेक उतार-चढ़ाव, विस्तार-संकोच, सम्मान-उपेक्षा की स्थितियों एवं संघर्षों को झेला है और वह आज भी सीना तान कर खड़ी है– यह भिन्न बात है कि छठवीं शताब्दी, दसवीं शताब्दी, सत्रहवीं शताब्दी और इक्कसवीं शताब्दी की भारतीय लोक संस्कृति की विशेषताओं में एकरूपता नहीं है। इन परिवत्तनों के विविध कारकों में काल की गत्यात्मकता, वैज्ञानिक तकनीकी विकास तथा आर्थिक संरचना का बदलता स्वरूप विशेष कारक के रूप में रहा। इसमें संदेह नहीं है कि विधि वर्गो के संस्कृति-चिंतकों का इस हो-हल्ला मचाने के अपने-अपने निहित स्वार्थ हैं। लोक-संस्कृति के वास्तविक मुट्ठी भर समर्थकों की चिन्ता वर्गीय, आश्चर्यचकित होना और संरक्षण की साधनहीन बेचैनी तो समझ में आती है और इसे न्यायोचित और स्वाभाविक मानते हुए उसका समर्थन किया जा सकता है; किन्तु, चिर-काल से लोक संस्कृति पर आक्रामक उपेक्षा का प्रहार करते रहनेवाले सम्पन्न वर्ग और उनके प्रभा-मण्डल के बुद्धिजीवियों की इस बेचैनी का समसामयिक कारण तो मुझ जैसे अल्पज्ञ को यही लगता है कि यह वर्ग अपनी अशांति की बीमारी के शमन की दवा लोक संस्कृति के शुचितापूर्ण प्राकृतिक परम्परा के मध्य ढूँढ़ रहा है और उसकी व्यावसायिक मानसिकता लोक-संस्कृति की उपलब्धियों को 'कैप्सूल' में बंद कर अशांति ओर तनाव के शैथिल्योकरण की अचूक औषधि के रूप में विश्व बाजार में भँजा कर धनार्जन, यशार्जन और पुण्यार्जन करना चाहता है। फिलहाल संतोष करना चाहिए कि जब लोक संस्कृति पक्षधर अपनी विविध अक्षमताओं की अभिशप्तता के कारण जब इस संरक्षण में बहुत दूर तक कारगर नहीं है, तो इस अवसरवादी, पूंजीवादी और समर्थ वर्ग के निहित स्वार्थ-प्रेरित बुद्धिजीवियों द्वारा परिवर्त्तनशील भारतीय लोक संस्कृति का जितनी भी सीमीत मात्रा में अनुरक्षा-सुरक्षा हो रही है, उसे होने दिया जाय; क्योंकि वही भारतीय संस्कृति के इतिहास का दस्तावेज बनेगा और भारतीय लोक संस्कृति का गौरव-स्तम्भ भी।

इक्कसवीं शताब्दी शुरू हो गई है। इसके पीछे अब तक के मानवीय विकास की उपलब्धियों, अभावों एवं संभावनाओं की प्रलम्बित-ऊर्जस्वित परम्परा का इतिहास है और उसकी गति को अधिकाधिक तीव्र कर नई संभवनाओं, संरचनाओं और सुअवसरों का मार्ग-प्रशस्त करना चाहती है, क्योंकि इसके बिना उसका अस्तित्व स्वयं खतरे में पड़ सकता है। विज्ञान-तकनीकी के सकारात्मक-निषेधात्मक विकास, विश्व के बाजार के विकास, संचार माध्यमों के विस्तार एवं सूचना के विस्फोट ने मानव के विकास में इतनी गतिशीलता, अशांति और आशंक– जन्य तनावों की सृष्टि की है कि वह पूर्व की अपेक्षा अधिक सशंकित, उद्वेलित और असुरक्षित अनुभव कर रहा है। रोज-रोज नई-

www.bhojpurisahityangan.com

नई भौतिक-अभौतिक समस्याएं नए-नए रूप धारण कर नई-नई चुनौतियाँ उपस्थित करने के लिए निरन्तर सक्रिय है। ऐसी स्थिति में भारतीय लोक संस्कृति के सम्मुख भी कुछ खतरे स्वाभाविक एवं अवश्यम्भावी रूप से चिन्त्य है।

1. विश्व की द्वि-ध्रुवीय आर्थिक-राजनैतिक विकास में समाजवादी ध्रुव के क्षति-ग्रस्त हो जाने के कारण विश्व पूँजीवाद का जो आतंकवादी विस्तार हो रहा है, उसने मानव-मूल्यों की एक नई व्याख्या विकसित कर दी है। मानव-मूल्य के इस अवमूल्यन ने उसको विश्व बाजार की एक ऐसी 'वस्तु' बना दिया है, जिसका उपयोग पूंजीवाद अपने विकास एवं विस्तार के लिए आवश्यकतानुसार करता है; किन्तु, उसमें जो सास्कृतिक सृजनात्मकता की स्वाभाविक शक्ति और ऊर्जा है; जिससे लोक कला, लोक संगीत, लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति के अन्य क्षेत्र पुष्पित-पल्लवित होते हैं, उसके प्रति पूर्वापेक्षा अधिक उदासीनता, तिरस्कृति एवं उपेक्षात्मक उपहास है; उसकी चिन्ता उसे नगण्य है। परिणामस्वरूप काल की अनिवार्य गति के कारण लोक संस्कृति के जो सूत्र टूटते जा रहे हैं, उनकी रिक्तता को स्थानापन्न करनेवाले नए सृजन के अवसर एवं परिस्थितियाँ खतरे में पड़ गई है। भारतीय लोक संस्कृति के समक्ष चयनात्मकता का संकट उपस्थित है। इस संकट के कारण वह अपने आगामी विकास के लिए अपने अतीत की गुफा-कन्दराओं में भटक रही है, तो दूसरी ओर पश्चिमी सभ्यता से आयातित नई उपलब्धियों के चकाचौंध से घबराई हुई है। इस तात्कालिक संकट का प्रभाव आधुनिक लोकभाषा लोकगीत, लोकनाट्य, रीति-रिवाज और संस्कारों के क्रियान्वयन पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है।

2. विज्ञान एवं तकनीकी क्रांति ने संपूर्ण मानवता को न्यूनाधिक रूप से आस्थाहीनता की ओर अनवरत ढकेलना प्रारंभ कर दिया है, जिसके कारण भारतीय लोक-विश्वास, देवी-देवता, पूजा-पद्धति, संस्कार-क्रियान्वयन, पर्व-त्योहारों के महत्त्व तथा पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों के निर्वाह को एक नई सोच, नया प्रतिमान, नई संशोधित प्रक्रिया एवं नए उपादान के उपयोग की तलाश की मानसिकता ला दिया है। हर आदमी 'पुराने' को व्यर्थ, दकियानूस, पिछड़ापन, ढकोसला, समय की बर्बादी, अवैज्ञानिक एवं अव्यावहारिक मानने की दिशा में बढ़ रहा है। जो कुछ आंशिक रूप में फिलहाल व्यवहार में है, उसमें संक्षिप्ता, उपहासपूर्ण उपेक्षा और परम्परा-निर्वाह का क्रम लोक-लाज के कारण ही शेष है।

3. भारतीय लोक संस्कृति की उर्वरा भूमि भारतीय माँच और उसकी कृषि-सभ्यता रही है। आधुनिक विकास के नाम पर तथा पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्था के विध्वंसकारी प्रभाव के कारण भारतीय गाँवों का न्यूनाधिक विकास हुआ है। बढ़ती आबादी की ग्रामीण कृषि पर सम्पूर्ण निर्भरता की स्थिति नहीं रह गई है। हर गाँव नगरों एवं उप-नगरों से अच्छे-खराब सड़कों से जुड़ रहा है। आवागमन के साधनों एवं उनके उपयोग के अवसर विकसित हुए है। इन सब का सम्मिलित परिणाम हुआ कि हर गाँव में एक 'बने-बनाए उपभोग माल के खपत बाजार' का विकास बड़ी तेजी से हो रहा है। इस विकास के कारण न कोई गाँव पहलेवाला 'आत्मनिर्भर स्वावलम्बी गाँव' रह गया है, न 'सुविधा-भोगी नगर' ही बन पाया है। किंतु, बनावटी चाकचिक्य की रोशनी से चौंधियाई ग्रामीण आँखें पूँजीवादी नागर प्रलोभनों को लालच की निगाह से देख रहा है। यह प्रलोभन इतना विध्वंसक है कि ग्रामीण युवा पीढ़ी भारतीय लोक संस्कृति द्वारा स्थापित मूल्यों और उसकी उपलब्धियों को बेहयाई से नकारने की मुद्रा में है; क्योंकि वह इन्हें इक्कीसवीं शताब्दी की चुनौतियों के समक्ष अनुपयुक्त, अव्यावहारिक एवं 'लौटते कदम' मानता है। उसके जीवन-संघर्षों में भारतीय लोक संस्कृति का कोई प्रभावकारी संदर्भ नहीं बन पा रहा दीखता है। ऐसी दयनीय स्थिति में भारतीय लोक संस्कृति

www.bhojpurisahityangan.com

के सम्मुख भी यह प्रश्न उपस्थित है कि यदि वह अपने दीर्घ जीवन एवं सदर्भ-समर्थशीलता को बरकरार रखना चाहती है, तो उसे अपनी तन्द्रिल स्थिति का परित्याग कर समसामयिक एवं समकालीन आवश्यकता के अनुरूप संशोधन-परिवर्द्धन को गति देकर छलांग लगानी होगी। भारतीय लोक संस्कृति के विविध पक्ष के पक्षधरों को केवल माथा ठोकने से कोई लाभ नहीं होगा, बल्कि इस दिशा के चिन्तन एवं प्रचार-प्रसार की ओर विशदतापूर्वक वैज्ञानिक ढंग से निश्चित समय-सीमा में सोचना और क्रियान्वित करना होगा। इसके लिए विभिन्न भाषाई, इलाकाई एवं वर्गीय समूहों को समय-समय पर विचार-गोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं प्रचार-प्रसार जत्थों की योजना बनानी चाहिए।

4. इक्कीसवीं शताब्दी सूचना के विस्फोट का युगक होती जायेगी और यह उत्तरोत्तर अपने आयाम, स्वरूप एवं प्रभाव-क्षेत्र को बढ़ाता जायेगी। ऐसे समय में भारतीय गाँव की किसी इकाई का कोना इससे बाहर लगभग रह नहीं पायेगा। रेडियो, टेलिविजन, टेलिफोन, कम्प्यूटर एवं सेटेलाइट ट्रांसमिशन के विस्तार के कारण पूरा विश्व सिमटकर हर गाँव का पड़ोस बन जायेगा। इन माध्यमों पर जिस व्यवस्था – फिलहाल अधिकांशतः पूँजीवादी एवं साम्राज्यवादी व्यवस्था – का प्रभुत्व होगा, वह भारतीय लोक संस्कृति में कारगर हस्तक्षेप करेगी और अपनी विकृत सांस्कृतिक परम्पराओं, मान्यताओं एवं जीवन-दर्शन को गाँव-गाँव तक ठूँस देगी। इस त्रासद स्थिति में भारतीय लोक संस्कृति के वर्त्तमान स्वरूप को कायम रख सकना जितना कठिन होगा उससे ज्यादा कठिन होगा लोकमान्यताओं पुनःजीवित करने का प्रयास करना। इन माध्यमों की स्थिति में जो लोक संस्कृति जन्म लेगी, उसके भारतीय स्वरूप को पहचानना और उस पर गौरवान्वित होना संभवतः असाध्य होगा।

5. भारतीय लोक समाज के सामाजिक जीवन में पिछले पचास वर्षों में कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन हुए हैं, जिनमें संयुक्त परिवार का टूटना, आदमी का वर्गों के बदले प्रतिस्पर्द्धी संघर्षरत वर्णों में विभाजित होना, सामूहिकता के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ के त्याग के बदले व्यक्तिगत स्वल्प लाभ के बाधक व्यक्ति, समूह, जाति, सम्प्रदाय, संस्था या संगठन को जड़-मूल से बर्बाद कर देने की मानसिकता, किसी नैतिक-अनैतिक या घपले-घोटाले-भ्रष्टाचार से धन-संग्रह कर सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक वर्चस्व कायम करना तथा अपनी प्रत्येक सद्-असद् इच्छा, लिप्सा, महत्त्वाकांक्षा या कामुकता को परितृप्त करने के लिए बलपूर्वक-छलपूर्वक या आतंकवाद-उग्रवाद फैलाकर किसी व्यक्ति या समूह को अपमानजनक स्थिति में ढकेल देना कुछ प्रमुख उदाहरण हैं। ऐसे सांस्कृतिक दृष्टि से ह्रासोन्मुखी विकास के कारण लोक संस्कृति के साथ-साथ पूरी ग्राम्य-संरचना का ताना-बाना बिखर रहा है, जहाँ पर लोक संस्कृति बीज अंकुरित होते थे और अनुकूल परिवेश में पल्लवित-पुष्पित होते थे। नए सामाजिक ग्राम्य विकास में लोक संस्कृति के विकास और संश्रय के आधार पर कुठाराघात हो रहा है। ऐसे विकास की दिशा को कैसे बदला जाय, यह एक महत्त्वपूर्ण समाजविज्ञानात्मक शोध का विषय है।

6. वैश्विक अर्थ-व्यवस्था और खुला बाजार के बढ़ते विस्तार एवं दबाव ने अब 'देशी' या 'क्षेत्रीय' की अवधारणा को बहुत दूर तक आहत किया है। इसका प्रभाव भारतीय लोक संस्कृति पर गहरे पड़ रहा है, क्योंकि विभिन्न छोटे-छोटे क्षेत्रों एवं समूहों में टुकड़े-टुकड़े विकसित होनेवाली लोक संस्कृतियों के सामूहिक और सर्वनिष्ठ तत्त्वों के सम्मिलित स्वरूप से भारतीय लोक संस्कृति का निर्माण होता है और अब वही क्षेत्रीयता तथा देशीपन नष्ट-प्रायः है। ऐसी परिस्थिति में 'भारतीय' नाम सात रूप में कौन-सी कैसी ' लोक संस्कृति' विकसित होगी, इसकी परिकल्पना मेरे जैसे

www.bhojpurisahityangan.com

अल्पज्ञ के लिए सभव नहीं है और साथ-ही-साथ इस प्रकार से विकसित लोक संस्कृति कितनी मात्रा एवं गुणवत्ता में विश्व बाजार की 'वस्तु' बन सकेगी, जिसका व्यापार किया जा सके। सोवियत रुस, चीन, जर्मनी जैसे राष्ट्र और राष्ट्र संघ विश्व पूंजीवाद के इस विकास को अस्वीकार नहीं कर सके, तो भारत जैसे नव-विकसित प्रजातंत्र की क्या हैसियत है कि वह इससे लोहा ले सके–यह चिन्त्य प्रश्न है।

7. आनेवाली शताब्दी मुख्यत: कम्प्यूटर, इन्टरनेट, यन्त्र-मानव, स्वचालन (मानव-रहित) एवं अणु-परमाणु के प्रयोग तथा कृत्रिम मानव-उत्पादन का युग होगा। इस युग में मानव का मूल्य और आवश्यकता नगण्य हो जायेगी। अपने मात्र श्रम को अपनी पूँजी माननेवाला' सर्वहारा का संख्यात्मक ढग से ह्रास होगा और उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा अपने कौशल को विकसित कर मध्यम वर्गीय हो जायेगा। ऐसी स्थिति में भारतीय लोक संस्कृति, जिसका 75% सर्वहारा वर्ग पर समाश्रित तथा सन्निहित था, को गहरी संकीर्ण गलियों में शरण लेनी होगी। ऐसा लगता है कि जब सर्वहारा वर्ग ही स्वल्प होगा, तो फिर उसके द्वारा विकसित, पालित, व्यहृत और संजोई लोक संस्कृति का भविष्य कितना संकुचित और अन्धेरा होगा; क्योंकि समाज के उच्च वर्ग को लोक संस्कृति से कुछ लेना-देना नहीं है और मध्यम वर्ग अपनी अवसरवादिता के कारण लोक संस्कृति का उपयोग करता है। लोक संस्कृति के निर्माता, पालनकर्त्ता तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी ढोनेवाले वर्ग पर ही जब सांस्कृतिक सकट उपस्थित हो जायेगा, तो भारतीय लोक संस्कृति का क्या हश्र होगा– यह चिन्त्य प्रश्न है।

8. भारतीय लोक संस्कृति का विकास शांति, सरसता, सहजता तथा सौहार्द्र की पृष्ठभूमि में हुआ है। आज ये सभी मूल्य एवं आदर्श ध्वस्त हो गए। जीवन और समाज के सभी क्षेत्र पूँजीवाद के द्वारा सृजित मूल्यों एवं तत्संबंधी व्यवहारों के अन्ध-भक्त बन गए हैं। सार्वजनिक जीवन में, खास कर आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन में, भ्रष्टाचार, घपला, घोटाला, लूट, हत्या, बलात्कार, सार्वजनिक सम्पत्ति का विध्वंस, अपहरण, आतंकवाद, उग्रवाद आदि ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है और वह बिना किसी रोक-टोक बढ़ता जा रहा है। मानव का व्यक्तिगत एवं सामूहिक मन एक विचित्र असुरक्षा की स्थितियों से गुजर रहा है। जो लोक कला, लोक-संगीत, लोकनाट्य, लोकसाहित्य, लोक-कौशल उन स्पृहणीय परिस्थितियों में विकसित हुई, वे अब इन नई परिस्थितियों की त्रासदी में इस देश में किस अन्दाज में तथा किस स्वरूप से कितना ग्रहणकर विकसित करेंगी– यह एक कठोर कल्पना है और इस प्रकार से विकसित लोक संस्कृति कितनी संग्रहणीय एवं गौरवशालिनी होगी?

9. विश्व सभ्यता के विकास के साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति की पारिस्थितिकी में भी अभूतपूर्व, ठोस और महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन हुए हैं। आज की कृषि ने वैज्ञानिक विकास को अपनाने प्रारभ कर दिया है; जैसे- हल से जुताई के बदले ट्रेक्टर, कटाई पिटाई के बदले थ्रेसर, छँटाई-कुटाई-पिसाई के ओखल-ढेंकी-जाँत के बदले मशीन (मिल), भण्डारन के छोंढ़-बखार- के बदले ड्रम एवं शीतानुकूलित भण्डार-गृह आदि। माप-तौल और सिक्कों के मूल्य एवं प्रणाली बदले। संस्कारों के महत्त्व एवं रीति-रिवाज बदल रहे हैं। वेश-भूषा और खान-पान बदल रहा है। ऐसी स्थिति में रोपनी के गीत, जँतसार, सोहर, जनेऊ के गीत, कोहबर के गीत आदि तथा उनके विवरण अब संदर्भ-हीन हो गए हैं। होली, दशहरा, दिवाली, छठ, पीड़िया, देवी की मान्यताएँ क्रांतिकारी ढंग से बदल गए हैं। अब इनसे संबद्ध लोक संस्कृति के तत्त्व किस काम के रह गए हैं।–

संयुक्त परिवार के विघटन के बाद जनसंख्या के नियंत्रण के इस माहौल में पुत्र-जन्म, नहवावन, छठी-बरही के गीत, सोहर, खेलवना आदि, शादी-विवाह के अवसर पर के तिलक, द्वार-पूजा,

www.bhojpurisahityangan.com

परिछावन, जेवनार, द्वार-छेंकाई, हल्दी-मटकोर, कोहबर के गीतों का क्या काम रह गया और उन्हें गानेवाली महिलाओं की भी संख्या घट रही है। नई पीढ़ी ने सिनेमा के गीतों के तर्ज पर कुछ गीत जरूर विकसित किए हैं। अब कन्या का कौन बाप 'पटुका पसारता' है? कितने बारातों में 'हाथी साजो, घोड़ा साजो' का आयोजन होता है? बहुत कम दुल्हे 'पालकी' पर बारात लगाते है और दुल्हिनें 'डोली' में विदा होती हैं। गंगा-स्नान और विभिन्न अवसरों पर लगने वाले मेलों के प्रति दृष्टिकोण बदल रहे हैं। अब 'मइया'-स्थान पर मातृ-आराधना में 'पचरा' बहुत कम ही सुनाई पड़ता है। गाँवों में 'अल्हा', 'लोरिकायन' तथा लम्बी गद्य-पद्यात्मक लोककथाओं के सुनने-सुनानेवालों का लगभग अभाव हो गया है। 'बिरहा' गाना गँवारूपन समझा जाने लगा है। साड़ी-कुरती के बदले सलवार-फ्राक और धोती-कुर्त्ता के बदले पैन्ट-शर्ट अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं। इसी प्रकार भारतीय लोक संस्कृति के विविध आयाम ऐसे हैं, जिन्होंने अपना समकालीन संदर्भ खो दिया है। उनको संकलित कर दस्तावेजी बना देना उचित है; क्योंकि वे हमारा अतीत है; किन्तु उनके उत्तरोत्तर छीज रहे व्यवहार पर छाती पीटना और आँसू बहाना व्यर्थ है। इक्कसवीं शताब्दी का भारतीय लोक अपनी लोक संस्कृति का निर्माण स्वयं स्वाभाविक रूप से अपनी सामयिक आवश्यकताओं के अनुकुल विकसित कर लेगा– लोक संस्कृति कभी मरती नहीं।

10. भारतीय लोक संस्कृति को आज सबसे बड़ा खतरा है लोक संस्कृति के पक्षधरों से। इनमें से अधिकांश भारतीय लोक संस्कृति, लोकसाहित्य, लोककला, लोकसंगीत, लोकनृत्य आदि के लिए चिन्तित तो रहते हैं और कहते हैं कि इनके संकलन, संपादन एवं अनुरक्षण का अन्तिम दौर चल रहा है। वे ईमानदारीपूर्वक इस दिशा में काम नहीं करते। केवल पहले के किये काम के आधार पर अपना महत्व बनाना चाहते हैं। भारतीय लोक संस्कृति के हित में कई सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं स्वैच्छिक संस्थाएँ भी कार्यरत हैं। सामान्यत: इनमें से अधिसंख्य संस्थाएँ कुछ लोगों के रोजी-रोजगार का साधन मात्र बनकर सरकारी अनुदान एवं वित्त-पोषण का अपव्यय का केन्द्र बनकर रह गई हैं। भारत स्तर की कुछ गिनती की ही संस्थाएँ हैं, जो मौलिक कार्य कर रही हैं। वे प्रशंसा की पात्र हैं। आवश्यकता है कि विश्वविद्यालय स्तर पर लोक संस्कृति' का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाकर नवयुवकों की लोक संस्कृति के विविध विधाओं में संकलन, संपादन एवं अनुरक्षण की शिक्षा पाश्चात्य की तरह दी जाय और योग्य प्रशिक्षित नवयुवकों को राष्ट्रीय एवं राज्य सरकारों का सांस्कृतिक विभाग नियुक्त कर लोक संस्कृति पर वैज्ञानिक एवं तकनीकी काम कराने की जो अब तक उपेक्षित रहा है। दूसरे तरह के कुछ दूसरे धूर्त्त लोग ऐसे हैं कि लोक संस्कृति के नाम पर कुछ निजी पटाखेदार चीजें प्रस्तुत कर धन एवं यश अर्जित कर रहे हैं। लोकगीत, लोकनृत्य, लोकनाट्य एवं लोककला के क्षेत्र में ऐसी विडम्बनाएँ बहुत है। तीसरे किस्म के पैसेवाले कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो मात्र अपने तनाव-शैथिल्य एवं मौज-मस्ती के लिए अश्लील लोकगीत एवं लोकनृत्य का आयोजन कर समाज में यह संदेश देते हैं कि लोक संस्कृति का मतलब गँवारूपन, अश्लीलता एवं हल्का मनोरंजन छोड़कर कुछ और नहीं है। आज सभ्य समझे जानेवाला समाज लोक संस्कृति को निम्नस्तरीय लोगों द्वारा प्रस्तुत निम्नस्तरीय वस्तु का भोंडा प्रदर्शन मानने लगा। इसमें जो सांस्कृतिक एवं कलात्मक तथा सांगीतिक तत्त्व है, उसको समाज के सामने लाकर समाज में प्रचलित प्रवाह को निरस्त करना आवश्यक है।

www.bhojpurisahityangan.com

11. इस अवसर पर मैं भारत की ग्रामीण महिलाओं का विशेष रूप से कृतज्ञ होना पसंद करूँगा, जिन्होंने भारतीय लोक संस्कृति की सुरक्षा ही नहीं की, वरन् उसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी संतरण का अवसर प्रदान किया और उसे संपूर्णता में हस्तान्तरित किया। आज महिलाओं पर संकट पहले की अपेक्षा अधिक गहरा है। अपहरण-बलात्कार-हत्या के भय से कँपसी महिलाएँ खुलकर, मन से और स्वाभाविक वातावरण में लोक संस्कृति के संवर्द्धन के कार्य में नहीं लग पाती। सामाजिक-आर्थिक कारणों से कुछ महिलाओं को विभिन्न नौकरियों में जाना पड़ रहा है, जहाँ के बाद उनके पास लोक संस्कृति के संवर्द्धन का अवकाश ही नहीं मिलता। महिलाओं की अशिक्षा दूर हो और वे शिक्षित हों–इसका विरोध कोई कैसे करेगा। फिर तो वर्त्तमान शिक्षा पद्धति और विकसित सामाजिक दृष्टिकोण को ही दोषपूर्ण कहा जायेगा, जो महिलाओं और बालिकाओं को शिक्षित होने के बाद लोकसंस्कृति के विधि विधाओं से अलग-अलग ही नहीं करती; बल्कि उनके अन्दर इसके प्रति एक विद्रोह का सृजन भी करती हैं। वर्त्तमान पीढ़ी की या पीढ़ी की आनेवाली लोककथा कहनेवाली महिलाएँ शायद ही मिले। फिर कौन सिखलायेगा ग्राम-बलिकाओं को लोकगीत, उसका लय और तर्ज। कौन कहेगा लोककथाएँ? कौन उकेरेगा कोहबर–अल्पना एवं अन्य भित्ती-चित्र? कौन सिखलायेगा सीक, ताड़, पुआल से बननेवाला मउनी, पउती आदि? कौन घरौंदे- झिझिया आदि बनाने का कौशल हस्तान्तरित करेगा? कौन सिखायेगा जलुआ-नृत्य, झूमर-नृत्य, रास-लीला एवं अन्य प्रदर्श? आज की पढ़ी-लिखी महिलाएँ रेडियो सुनना, टी.वी. देखना अधिक पसंद करती हैं, वरन् बड़ी-बूढ़ियों के साथ बैठकर लोककला-कौशल सीखना। इसलिए हस्तान्तरण की प्रक्रिया को सस्थागत रूप देना अनिवार्य हो गया है, जिसकी ओर ध्यान देकर, योजना बनाकर और आर्थिक संसाधन देकर यथार्थ बनाना होगा। भारतीय लोक संस्कृति पर चिन्तनशील लोगों के समझ यह आज की चुनौती है।

इक्कसवीं शताब्दी के आगमन की इस बेला पर भारतीय लोक संस्कृति पर चिन्तन-मनन करनेवाले बुद्धिजीवियों, संस्कृतकर्मियों, संस्थाओं तथा सरकारी-गैर-सरकारी संस्थाओं से निवेदन करना आवश्यक है कि वे भारतीय लोक संस्कृति के समक्ष इन समुपस्थित खतरों के प्रति गंभीरता से सोचें और अपनी सकरात्मक सोच एवं प्रगतिशील कार्यक्रमों को कार्यान्वित कर भारतीय लोकसस्कृति के विविध विधाओं की उपलब्ध सामग्रियों के संकलन, अनुरक्षण एवं प्रचार-प्रसार का निष्ठापूर्ण प्रयत्न करें। भारत की अगली पीढ़ी अपने इस गौरवशाली अतीत पर कम-से-कम गर्व तो करेगी और भारतीय इतिहास के संग्रहालय तो विश्व के सम्मुख भारतीय लोक संस्कृति को प्रस्तुत तो कर सकेंगे। भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य एवं संस्कृति महोत्सव के इस पावन अवसर पर, भारत भुवन की इन तीन परम पावन नदियों के संगम पर उस महान लोक कलाकार को शत-शत नमन करते हुए मुझे बस इतना ही निवेदन करना है। ■

सधुवे दासी, चोरवे खाँसी, प्रेम बिनासे हाँसी।
घाघ उनकर बुद्धि विनासे, सायें जे रोटी बासी ।।
घाघ

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

–डॉ० राधा कृष्ण शर्मा
(इतिहासकार एवं साहित्कार)
मोहननगर, छपरा

बिहार के सारण जिला में छपरा शहर से लगभग १० किलो मीटर पूर्व में चिरान के नाम से एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक क्षेत्र हैं। इसके दक्षिण कुछ दूरी पर दियारा क्षेत्र में कुतुबपुर नाम ग्राम है। यह अतीत में कभी शाहाबाद (भोजपुर) जिले का भाग था। गंगा नदी के कारण भूमि का कटाव होते रहता हैं। इसी ग्राम के पूर्व में भिखारी ठाकूर का मकान हैं। १८८७ ई० में १८ दिसम्बर (सोमवार) को भिखारी ठाकुर का जन्म हुआ था। शिवकली देवी इनकी माता थी। इनके पिता का नाम था दलसिंगार ठाकुर। मकान साधारण था–मिट्टी फूस और खपरे का।

भिखारी ठाकुर का परिवार नाई (हजाम) का था। इस जीत का प्रमुख पेशा था हजामत का–दाढ़ी बनाना, केश काटना, शादी-विवाह तथा अन्य उत्सवों के अवसर पर जहां-तहां चिट्ठी-पत्री पहुंचाना। माता-पिता की इच्छा थी कि उनका पुत्र पुश्तैनी पेशा को ही करें। कुछ दिनों तक भिखारी ठाकुर ने आने पारिवारिक पेशा को किया भी। किन्तु एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की हजामत ठीक से नहीं बन सकी। वह व्यक्ति बहुत रंज हुआ और इन्हें बहुत डांटा-डपटा। भिखारी ठाकुर को भी बहुत दुख हुआ और उन्होंने हजामत पेशा को छोड़ देने के लिए निश्चय कर लिया।

भिखारी ठाकुर का जीवन संघर्षमय था, उनहें कुछ समय तक माल-मवेशियों की चरवाही करनी पड़ी थी। वे जहां-तहां भटकने लगें। वे जहां तहां नाच-गान देखने और सुनने लगें। उनसे वे प्रभावित भी होने लगें। लेकिन उनके परिवार को यह पसन्द नहीं था। ९ वर्ष की उम्र में उन्हें स्कूल भेजा जाने लगा। लेकिन उन्हें पढ़ने लिखने में मन नहीं लगता था। एक वर्ष की अवधि में भी इनकी शिक्षा में कुछ प्रगति नही हुई। उन्हें केवल कुछ अक्षरों की जानकारी हो सकी। इसकी लिखावट साफ-सुथरी नही होती थी।

वे कैथी लिपि में लिखते थे। उसे अन्य व्यक्ति आसानी से नहीं पढ़ सकता था। दूसरे की सहायता से उसे पढ़ी-लिखी जाती थी।

कुछ प्रौढ़ हो जाने पर मतुरना के साथ भिखारी ठाकुर का विवाह कर दिया गया। लेकिन वे गृहस्थाश्रम में व्यस्त नहीं हो गये। वे थे तो गरीब अत: वे खाने-पीने के लिए कुछ कमाना चाहते थे और इसके लिए साधन खोज रहे थे। वे एक दिन बुद्ध की तरह गांव-परिवार छोड़कर बाहर चल दियें। वे खड्गपुर गये। उन्होंने मेंदिनीपुर जिला में रामलीला और जगन्नाथ पुरी की रथ यात्रा को देखा। इस दोनों आयोजनों को देखकर वे बहुत प्रभावित हुए ।

भिखारी ठाकुर जन्मजात प्रतिभाशाली एवं कलाकार थे। नाच-गान बाजा-संगीत में उनकी गहरी रूचि थी। घर वापस आने पर उन्होंने नाच-मंडली का संगठन किया। उनके परिवार को यह पेशा पसन्द नहीं था। फिर भी भिखारी ठाकुर झूके नहीं-टूटे नहीं, आगे बढ़ते रहें। १९१७ ई० में वे ३० वर्ष के हो रहे थे। उन्होंने विदेसियां के नाम से कविता लिखी। उनकी आवाज मिठी थी सरस थी। विदेसियां सुनने के लिए भीड़ इक्ट्ठी होने लगी और लोग बहुत प्रभावित होने लगे। समाज में उनकी लोक प्रियता बढ़ने लगी।

भिखारी ठाकुर में कुछ लिखते रहने की उत्सुकता थी। वे अपनी पैनी दृष्टि से समाज की बुराईयां को देखते थे और उनके सुधार के लिए अपने गीतों में संकेत करते थे। 25 वर्षों की अवधि में 1938 और १९६३ ई० के बीच उनकी लिखी कई पुस्तक पुस्तिकाओं का प्रकाशन हुआ। उनकी किताबे

www.bhojpurisahityangan.com

दुकानों मेंऔर पदमार्गों पर भी बिकती थीं। लोग उनकी पुस्तकें बड़े चाव एवं रूचि से पढ़ते थे। रास्ते चलते लोग उनके गीतों को गाते भी चलते थे।

उनकी पुस्तकों में बिरहा बहार, कील युग बहार बेटी वियोग, भाई विरोध, विधवा विलाप, गंगा स्नान, पुत्र-बधू, ननद भौजी आदि प्रमुख हैं।

बिरहा बहार उनकी पहली पुस्तक है। इसमें गीत और संवाद पाये जाते हैं। उनकी विदेसिया बहुत ही लोकप्रिय गीत हैं। समाज में इसके बहुत प्रचार हुआ था। इसी ढंग पर बटोहिया और फिरंगिया की भी रचना अन्य कवियों ने की थी। नवीन बिरहा के नाम से भी एक पुस्तक लिखी गई थी।

कुछ अन्य पुस्तकों में कृष्ण लीला, राम विवाह, भिखारी हरिकीर्तन, द्रौपदी पुकार, बुढ़ साला आदि। उनकी कुछ पुस्तकों का प्रकाशन हावड़ा में और कुछ पुस्तकों का प्रकाशन वाराणसी में हुआ था।

उनकी रचना के विविध विषय थे–समाज सुधार, भक्ति, स्तुति, श्रृंगार (संयोग एवं वियोग) आदि।

श्री महेश्वर प्रसाद ने भिखारी के नाम से एक पुस्तक प्रकाशित कराई। उसमें उन्होंने भिखारी ठाकुर की कुछ रचनाओं की चर्चा की। भिखारी ठाकुर के पुत्र शिलानाथ ठाकुर के प्रयास से भिखारी ठाकुर ग्रन्थावली का प्रकाशन कराया गया। उसके दो खण्ड प्रकाशित हो सके जिनमें दस रचनाओं का विवरण दिया गया है। वे नाटक की पुस्तकें है।

नाच-गान से भिखारी ठाकुर की अच्छी आमदनी थी। लोग उन्हें नचनियां और भिखरिया कहा करते थे। वे जब नाच गान करने के लिए मंच पर खड़े होते थे तो बड़ी भीड़ होती थी।

लेकिन भिखारी ठाकुर या उनके परिवार के जीवन स्तर में कोई परिवर्तन नही हुआ। उनका जीवन सादा था, स्वभाव सरल था, पहनाव साधारण था। वे माथ पर पगड़ी रखते थे। वे छल-कपट, ईर्ष्या, द्वेष, मान-अपमान आदि भावनाओं से मुक्त थे। वे अपनी प्रशंसा से न तो खुश होते थे और न अपनी निन्दा से चिन्तित होते थे। उनमें कुछ भी आडम्बर या दिखावा नहीं था। उनमें गुणों की भरमार थी।

भिखारी ठाकुर का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे नाटककार कवि, साहित्यकार निर्देशक, कलाकार संगीतज्ञ, समाज सुधारक, भविष्य वक्ता आदि एक साथ बहुत कुछ थे। उनका कृतित्व विशाल था। उन्होंने भोजपुरी को बहुत समृद्ध किया। प्रसिद्ध विद्वान राहुल सांकृत्यायन ने उन्हें भोजपुरी का शेक्सपियर और अनगढ़ हीरा कहकर सम्मानित किया है। हिन्दी के सुविख्यात विद्वान भगवती प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें भोजपुरी का भारतेन्दु कहा है। द्विवेदीजी के ही शब्दों में "भिखारी ठाकुर कोई महामानव तो नही थे पर मनुष्यता की कसौटी पर सौफी सदी खरे उतरने वाले एक सम्पूर्ण मनुष्य थे। एड़ी से चोटी तक, जन्म से मृत्यु तक और कलाकार से जनकवि वसंत कवि तक एक सम्पूर्ण मनुष्य थे।"

कहा जाता है कि १९४४ ई० में भिखारी ठाकुर को ब्रिटिश सरकार द्वारा राय बहादुर की उपाधि से और बिहार के राज्यपाल के द्वारा ताम्रपत्र से सम्मानित किया गया था।

भिखारी ठाकुर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अद्भुत था। अब उनपर शोध भी होने लगा है और पी०एच०डी० की उपाधि भी दी जाने लगी है।

कुछ लेखकों का ऐसा भी मत है कि जनकवि के रूप में कबीर और तुलसी के बाद अखारी ठाकुर को ही लोक प्रियता प्राप्त हुई है।

भिखारी ठाकुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर का मत भी सच हो जाता है कि केवल राज महलों में ही महान व्यक्ति पैदा नही होता बल्कि वह झोपड़ियों में भी पैदा होता है। इस तरह भिखारी ठाकुर को गुदड़ी का लाल कहा जा सकता है।

१० जुलाई १९७१ ई० (शनिवार) को ८४ वर्ष की उम्र में अपने ग्राम में ही उनका निधन हो गया। ■

www.bhojpurisahityangan.com

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों की यही अमर दास्ताँ होगी ।।

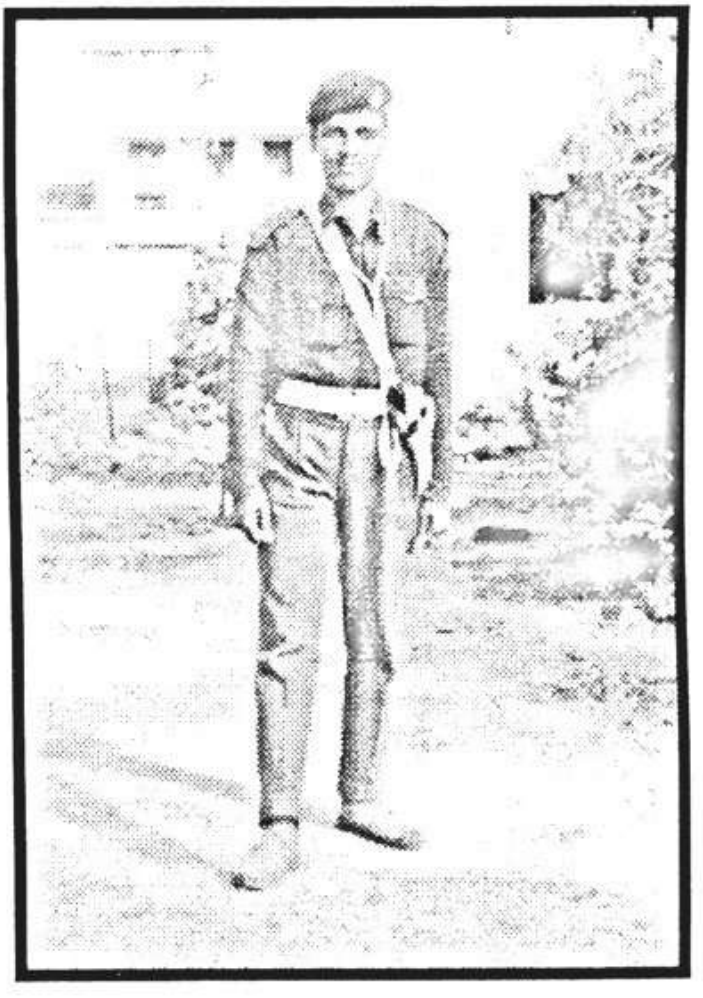

शहीद सिपाही बलिराम सिंह

कुतुबपुर, सारण

(देश में अमनचैन के रक्षा खातिर जहानाबाद में
एही साल नक्सल अतंकवादी लोग के साथ लड़ाई में शहीद)

www.bhojpurisahityangan.com

महात्मा हंसराज मॉडर्न पब्लिक स्कूल

कटहरी बाग रोड, छपरा

- राष्ट्रस्तरीय प्रतिष्ठित शिक्षण समूह का एक अंग
- योग्य शिक्षकों द्वारा अंग्रेजी माध्यम में अध्यापन
- सह-शिक्षा की भी व्यवस्था
- कम्प्यूटर, खेल-कूद एवं शिक्षा के सभी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित विद्यालय

निदेशक

पंडित रामवतार शर्मा के एगो दूर्लभ कविता

धूल धूम दुर्गन्ध घनेरा
हिन्दू नगर लुटेर बसेरा।
तहँ कविता के हि भाँति हि नीका
खटवारि नहीं आत अफीही।
जस निवास जस भोजन पाना
तस वानी तस मन कर ध्याना
गीध खात शव वास मसाना,
कस उदास ताकर चिल्लाना।
कोकिल बैन मधुर सुरसीली
वास रसाल पान मधुरीली।
गंगा तट से तपसी आये,
बैठे मौन तहां धन छोये
हमरन के अब मछुआ टोला,
वास तहां कविता कस होला।।
जहे तहे हिन्दु घाट जे, मल मसान कर खान।
भरा कुगन्ध दिमाग में, रहा न कविता प्राण।।
ग्रन्थिल काव्य करहिं बहुतेरे,
उटपटांग निरर्थ घनेरे।
कोमल मंजुल पुष्प समाना,
काव्य प्रसाद मधुरता साना।
जिन खेतन मह लहसुन प्याजा
तहँ केसर कस हो उपराजा।
तह सूरज अद्भुत भगवाना,
भक्त जाँहि अर्पहि पकवाना। ■

www.bhojpurisahityangan.com

21वीं सदी में भिखारी ठाकुर की प्रासंगिकता

—अविनाश नागदेश

यह पाया जा रहा है कि आज लेखक अपनी रचनाओं में अधिकांशत: शहरी मध्यवर्ग को संबोधित कर रहे हैं, जो उनका मूल पाठक और क्रेता वर्ग है, किंतु यह भी पाया जा रहा है कि इस कारण जनसामान्य का एक बहुत बड़ा हिस्सा समकालीन लेखकों के सृजन संचार से बाहर रह जा रहा है। वास्तव में मुद्रण तकनीक ने उन्नीसवीं सदी से साहित्य (हिंदी/आंचलिक) में जो परिवर्तन किया, उससे सारा मुद्रित शिष्टजनों और शिक्षितजनों का साहित्य बन गया। जो पढ़-लिख नहीं सकते थे उनके लिए रंगमंच और फिल्में ही हो सकती थी। दरअसल जनता तक साहित्य को ले जाने का माध्यम कभी साहित्य नहीं हो सकता। करोड़ों अशिक्षित जनता की साहित्यिक उत्कंठा और कला की भूख की तृप्ति के लिए रंगमंच, फिल्म आदि उपयोगी माध्यम होते हैं।

किंतु यह दुर्भाग्य है कि आजादी के पांच दशकों के बाद भी सांस्कृतिक कार्यकलाप को आमजन तक पहुंचाने के लिए आज मात्र दो तरह की संस्थाएँ है। एक सिनेमा- जहां सेक्स और हिंसा ही केंन्द्रीय विषय हैं तथा दूसरे प्रकार की संस्थाओं में केंद्र और हर राज्यों की साहित्य अकादमियों, नाटक अकादमियों, फिल्म बोर्ड, सरकारी पत्र-पत्रिकाएं, सांस्कृतिक अनुदान विभाग आदि है, जिनका भी कोई केंद्रीय सुनिश्चित नहीं रह गया है। संस्कृति भी इनके लिए अन्य उपभोक्ता वस्तुओं की मानिंद बन कर रह गया है। आज बाजारवाद के युग में संस्कृति अरबों रुपये का बाजार बन कर रह गया है, जहां हुस्न और हिंसा की केंद्रीय मुद्दा है। संस्कृति की असली जरुरत और जरुरतमंद हाशिए पर चले गये हैं। हुस्न और हिंसा का प्रवेश लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति में भी हो गया है और सड़कों पर दौड़ते ट्रकों से लेकर गांव की पलानियों तक में द्विअर्थी और अश्लील गाने ही बज रहे हैं और लोकनृत्यों में भी नंगई पसरती जा रही है। इस अपसंस्कृति से मुकाबला करने का बचा खुचा साहस सिर्फ वामपंथी रुझानोंवाले संस्कृतिकर्मियों के कंधों पर ही दिखाई पड़ रहा है, लेकिन विपन्न और साधनहीन होने के कारण उनमें इतनी ताकत नहीं कि व्यावसायनिक जनविरोधी संस्कृति को पीछे ठेल सकें। ये समाज में परिवर्तन के लिए छटपटाती जनता की भावना को व्यक्ति तो करना चाहते हैं, इनके अंदर ओज, तोज, पात्रिक और ईमानदारी भी है, वर्तमान के अंतर्विरोधों को खोलने की क्षमता भी है किंतु उसका रुप पर्याप्त नहीं। वे जनता की चेतना के उस स्तर तक नहीं उतर पाते, उसके दैनदित जीवन में प्रयुक्त होनेवाले मुहावरों लोकोक्तियों को व्यक्त नहीं कर पाते जो तीर की भांति श्रोता दर्शक के सीधे मन पर इस प्रकार चोट कर सकें कि जिस प्रकार पंद्रह करोड़ से भी अधिक अधिकांशत- अशिक्षित परंतु मेहनतकश और निश्छल भोजपुरी भाषियों के कालजयी लोक कलाकार भिखारी ठाकुर ने अपनी नाट्यकृतियों के माध्यम से किया था।

वस्तुत: जनता की जरुरत, सामाजिक आकांक्षा, लोक परंपरा और इतिहास की गति का समंजन करते हुए किया गया कोई सांस्कृतिक कर्म करना ही लोकोन्मुखता है और यही लोकोन्मुखता भिखारी ठाकुर की रमणीयता, लोकप्रियता और कालजयिता का रहस्य है। जबकि, आज लोकप्रियता के लिए जनता के पिछड़े हुए संस्कार को सहलाना, अतीत के झूठे स्वर्णयुग की मृगमरीचिका में

www.bhojpurisahityangan.com

ही दर्शकों को उलझाने की कोशिश सांस्कृतिक क्षेत्र में दिखायी पड़ रही है जो सरासर असंगत है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपके उत्कृष्ट महान साहित्यक लेखन का तब तक कोई खास मतलब नही जब तक उसे जनता तक पहुंचाने का माध्यम न हो। आज कोई भी कविता संग्रह पांच सौ से ज्यादा नही छपता। अल्प साहित्यिक विधाओं की भी यही हालत है। लगभग पचास करोड़ की हिंदी भाषी आबादी में भी जो लेखक बहुत लोकप्रिय होता है, वह भी पांच छह हजार से ज्यादा पाठकों द्वारा नहीं पढ़ा जाता। मुद्रित साहित्य अधिकाधिक लोगों तक पहुंच सके, यही आज की सबसे विकट चुनौती है। उस माध्यम की उस राह की आज सर्वाधिक जरुरत है, जो भिखारी ठाकुर ने अपनायी थी। अनपढ़ भिखारी ने अपनी मातृभाषा में, गंगा-सरयू-सोन और शालिग्रामि के कूलों -कगारों, बाग-बगीचों, खेत-खलिहानों में गूंजनेवाली लोकभाषा में ऐसी कृत्तियों की रचना की जो लोकोन्मुखिता के कारण अपार लोकप्रिय ही नहीं हुई, बल्कि क्रांतिधर्मा कबीर की ही तरह अपने समकालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों पर निर्णायक प्रहार कर बाल विवाह, बेमेल विवाह, बेटी बिक्रय, मद्यपान, फैशनपरस्त, बुजुर्गों की उपेक्षा, अधार्मिक आचरण और सामाजिक अन्याय जैसी अनैतिक कुरीतियों को समाप्त करने में सफल भी हुई।

उदारीकरण, वैश्वीकरण और अपसंस्कृति की चल रही वर्तमान आंधी से अपने उखड़ते हुए पावों को जमीन पर टिकाए रहने की खातिर साहित्यक और संस्कृतिकर्मियों के लिए आज भिखारी ठाकुर अपनी 11वीं जयंती के अवसर पर इक्कसवीं सदी के प्रथम वर्ष में आज एक मात्र आशा की किरण के रुप में हमारे हैं ताकि हम अपने व्यापक सांस्कृतिक कर्म को जनसामान्य तक पहुंचा सकें. उनसे संवाद कर सकें, ताकि संस्कृति, व्यापक परिवर्त्तन का हथियार बन सके, आंग्ल अभिजात्य वर्ग हमारे बिहार सिंड्रोम से घबरा न सके और हमें गोबरपट्टी का सबसे बिमारु राज्य कहने का दुस्साहस न कर सके। यह इसलिए भी आज जरुरी है कि टेलीविजन के पर्दो पर आ रहे बुगी-बुगी नृत्य, रैप डांस, ब्रेक डांस से हम लोक संगीत और लोकनृत्य की मोहक अदाओं को बचा ही नही सकें बल्कि परिवर्तन का औजार भी बना सकें। जी हां ! अब-सावन-भादों के मौसम में न तो गांवों में अल्हैत की कड़कती आवाज सुनाई देती है. न ही स्त्रियों के कोमल स्वरों में कजरी की सुरीली तान। बिरहा, लोरिकायन, सोरठी बिरजा भांड़, होरी फगुआ, चैती, चैता और वसंत गीत बीती सदी सदी की धरोहर बन गये हैं. लोकनृत्यों में गोरऊं, धोवियानाच, चमरुआ नाच, नेटुअना नाच, झुमर, सोहर कठघोढ़ऊवा, विदेसिया, इनरसनी नृत्य बीते काल की धरोहर बनने की ओर अग्रसर हैं; जबकि इन लोकगीतों और लोकनृत्यों के माध्यम से सदियों से जातिगत-आधार पर विभक्त समाज में विभिन्न जाति के लोगों ने विभिन्न कलाओं को अपना रखा था और संगीत के लिए ढोलक, तबला, हारमोनियम, बाल, गाड़ी, पखावज, मृदंग, भोपा, सिंधा, करतला, हुड़का, सारंगी आदि लोकवादनों का मनोहारी प्रयोग करते थे।

विभिन्न शैलियों के ये लोकनाट्य, लोकवाद्य और लोकगीत, समय के प्रवाह में, अपसंस्कृति के तेज झोंकों में कही सदा सर्वदा की खातिर विलप्त न हो जाये, इसकी ओर ध्यान केंद्रित करना ही लोकसंस्कृति के महानायक भिखारी ठाकुर के प्रति सभी साहित्यक और लोकसंस्कृतिकर्मियों के लिए आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है ताकि हम अपनी संस्कृति, साहित्य के साथ-साथ अपना भी वजूद बनाये रख सकें।

प्रभात खबर के १८ दिसम्बर २००१ से सभार ■

www.bhojpurisahityangan.com

आधुनिक रंगमंच की अभिव्यक्ति थे भिखारी ठाकुर

–जावेद
वरिष्ठ रंगकर्मी

बिदेसिया भिखारी ठाकुर रचित एक नाट्यकृति है। यह और बात है कि इस नाटक की लोकप्रियता के कारण भिखारी ठाकुर के अन्य नाटक भी विदेसिया कहे जाने लगे। विद्वद समाज में यह भ्रम है कि बिदेसिया भी यात्रा, तमाशा, नाच, नौटंकी, रामलीला, रासलीला, भवई, अंकिया नाट आदि की तरह ही लोकनाट्य शैली है।

मेरा यहां कहना है कि आधुनिक रंगमंच पर परम्परागत शैली में यह भिखारी ठाकुर द्वारा किया गया प्रयोग है जहां यात्रा, रामलीला, रासलीला एवं भोजपुर क्षेत्र के लौंडा नाच की छाया देखी जा सकती है। ऐसा इसलिए भी लोकनाटक का रचयिता कोई एक नहीं बल्कि परम्परा से जुड़कर होता है जहां व्यक्ति विशेष का योगदान रहता है, परन्तु यहां भिखारी ठाकुर की शैली इन्हीं से शुरू होकर इन्हीं पर खत्म होती है। कहा तो ऐसा भी जाता है कि भिखारी ठाकुर को रामायण कंठस्थ था। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में चौपाई छंद एवं दोहा का प्रयोग अधिकतम मिलता है।

दरअसल बिदेसिया साधारण जनता की सामाजिक अभिव्यक्ति है जिसे एक आधुनिकतम सृजनधर्मी के बतौर भिखारी ठाकुर ने मंचित कर समाज को जागरुक करने का प्रयास किया। यही कारण है उन्होंने अपने लोकनाट्य का कथानक रामायण, महाभारत या पुराण से नहीं उठाकर अपने नाटकों का आधार सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को बनाया। ये एक ऐसे यथार्थवादी कलाकार थे जिनहोंने यथार्थ को मंचित करने के नये वे सरल तरीके उभारे। एक तरह से देखे तो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं जयशंकर प्रसाद के बाद नाट्यगीतों की परम्परा समाप्त होते जा रही थी। उन्होंने ऐसे समय में पूर्वी गाने को मूल मंत्र मानते बिदेसिया में बतौर प्रयोग किया और सफलता भी पायी। इन तमाम प्रयोगधर्मिता के बावजूद भिखारी ठाकुर के लोक कलाकार के रूप में चित्रत करना उनका एक सीमित मूल्यांकन है। जरूरत तो इस बात की है कि आधुनिक संदर्भ में नये निष्कर्ष निकाले जाएं।

भिखारी ठाकुर का व्यवहृत शैली को मैंने खुद नये नाटकों के संदर्भ में इस्तेमाल करने की जरूरत को महसूस किया। ऐसा इसलिए कि आधुनिक रंगमंच की पहुंच बहुत व्यापक नहीं। यह सिर्फ उच्च वग्र एवं मध्य वर्ग के लोगों तक ही पहुंच बना सका है। दूसरी तरफ 'बिदेसिया' शैली को इस्तेमाल कर नाटक की मजबूरी स्थान एवं काल से बंधने की नहीं होती। कल्पना करने की भी विशाल संभावनाएं होती है। यहां तक कि दर्शकों को भी काफी कल्पनाशील बनाया जा सकता है। खुद 'दूर देश की कथा', 'सौदागार' में प्रयोग कर हमने इसके सफल मंचन का भी स्वाद चखा है। पूर्वी गीतों की संप्रेषणीयता, 'समाजी' की कल्पना एवं दर्शकों की भागीदारी से नाटक को दिशा देने में काफी गति मिलती है। एक तरफ से कहा जाए तो मुझे आसू रचना का 'टेकनिक' मुझे भिखारी ठाकुर ने नाटकों में ही दिखा वहीं गंभीर प्रसंगों को भी हल्के–फुल्के व्यंग्य के जरिए कैसे मारक बनाया जा सकता है यह कोई भिखारी से सीख सकता है।

राष्ट्रीय सहारा १८ दिसम्बर २००२ के अंक से सभार

प्रस्तुति : चंदन

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर जनता के दिलो-दिमाग में सुरक्षित

—देवांशु रंजन

कोई भी रचनाशील संगठन तभी तक जीवित रह सकता है जब उससे जुड़े लोगों को लगातार कुछ नया रचने का सुख मिलता है। आज से कई वर्ष पहले भिखारी ठाकुर ने जो रंगाकर्म की यात्रा की वह अभी भी उतना ही प्रासंगिक है। उनके कामों को आगे बढ़ाना ही कला के प्रति सच्ची जवाबदेही का निर्वाह करना होगा। यह विडम्बना है कि आज भी रंगमंच हमारे सामाजिक जीवन का हिस्सा नहीं बन सका है। यह मध्यम वर्ग का सक्रियता पर ही आश्रित है। भिखारी ठाकुर ने इस खतरे को बहुत पहले महसूस किया था इसलिए उन्होंने जो लिखा, मंचन किया वह आम लोगों की भाषा थी। सम्भवत: इसीलिए प्रसन्न जैसे प्रखर रंगकर्मी भी यह मानते हैं कि नाट्यकर्मियों को अपनी प्रासंगिकता बरकरार रखनी चाहिए।

प्रस्तुत है प्रकाशित एक स्मारिका-पत्रिका की समीक्षा।

लोक कलाकार भिखारी ठाकुर की स्मृति में प्रकाशित इस पत्रिका में कुल आठ लेख हैं। सभी लेख तथ्य-संग्रह और विश्लेषण के वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव को सूचित करते हैं लेकिन अपने तीखे अनुभवों में ये औपनिवेशिक सामंती संस्कृति पर बेबाक हमला करते हैं। इस प्रकार भिखारी ठाकुर की मूल चिन्ताओं को भी प्रखर स्तर देते हैं।

उल्लेखनीय है कि लोक कलाकार भिखारी ठाकुर नवजागरण की उन्नत अवस्था के बेहद लोकप्रिय कलाकार थे। वे भोजपुरी जनता के खून में आज भी रचे-बसे हुए हैं और जनता की चिन्ताओं का प्रच्छन्न समाहार उपस्थित करते हैं। जनता के दर्द को पकड़ने में वे वाकई 'भोजपुरी के शेक्सपियर' (राहुल साकृत्यायन) हैं, अपने दृष्टिगोण-विस्तृति में वे जनता के 'अनगढ़ हीरा' (सांकृत्यायन) हैं। पत्रिका के लगभग सभी लेख उनकी गहरी पैठ और कला को रेखांकित करते हैं।

भिखारी ठाकुर ने लोककला रूपों का सृजनात्मक विकास कर उन्हें अधिक जनोपयोगी बनाया। उनके इस अवदान को स्मारिका के लेखकों ने बार-बार चिन्हित किया है। अविनाश नागदंश ने अपने लेख 'एक कालजयी कलाकार : भिखारी ठाकुर' में सृजनात्मकता का उल्लेख किया है। उन्होंने बताया है कि श्री ठाकुर ने नुक्कड़ नाटकों के सम्मिश्रण से भोजपुरी रंगकर्म को एक नयी शैली प्रदान की। इस संदर्भ में मेरा अभिमत यह है कि नुक्कड़ नाटकों की पाश्चात्य अवधारणा से अपरिचित भिखारी ने 'लोक नाटकों के ग्रामांचलों में प्रवेश के लिए विशेष मार्ग मुहैया किया है। उन्होंने यह काम लोक-रूपों में पूरी तरह सप्रक्त होकर और जनता के मानस एवं उसके दृष्टिकोण को पकड़ कर किया है।

श्री नागदंश ने लिखा है कि भिखारी का वास्तविक मूल्यांकन सिर्फ उनकी पुस्तिकाओं के सहारे नहीं किया जा सकता। पुस्तिकाओं में यदि भिखारी पच्चास प्रतिशत हैं, तो सौ प्रतिशत थे अपने मंचों पर।' भिखारी जनता के दिलो-दिमाग में सुरक्षित हैं, उनको जानने-समझने और

www.bhojpurisahityangan.com

मूल्यांकन करने के लिए जनता के बीच उतरना होगा, उससे अंतरंग संबंध स्थापित करना होगा। भिखारी ठाकुर की तरह विनम्र बनना पड़ेगा।

भिखारी ठाकुर की जनता से विनम्र अंतरंगता शोधार्थियों और कलाकारों के लिए कितना शिक्षाप्रद है। इसकी झांकियां भी जनता के दिलो-दिमाग में अभी सुरक्षित हैं। प्रो. ब्रज किशोर ने अपने संस्मरण लेख में इस तरह की एक झांकी प्रस्तुत की है। जनता से भिखारी ठाकुर के आत्मीय रिश्ते को रेखांकित करने वाली एक घटना-संस्मरण के उल्लेख के माध्यम से उन्होंने भिखारी ठाकुर के व्यक्तित्व-प्रकाशन के लिए आलोचक कलाकारों के सामने एक चुनौती चिन्हित की है।

भिखारी ठाकुर के यथार्थ-बोध कितना गहरा था, उनके अनुभव कितने स्मृद्ध और दृष्टि कितनी पारदर्शी थी, इसका पता हमें जनता और भिखारी में गहरी पैठ करने पर ही चलेगा। खोमेच वाले लड़ने की तत्परता का राज पकड़ सकने की क्षमता सिर्फ भिखारी ठाकुर जैसे कलकारों के लिए सम्भव है। कितनी अद्भुत थी भिखारी की आंखें! कितना अद्भुत या भिखारी का कला-विश्वास! बेहतर होता कि प्रोफेसर साहब विनम्रता की दार्शनिक-मनोवैज्ञानिक व्याख्या की जगह भिखारी से संबंधित इस तरह के कुछ और दृष्टांत ही प्रस्तुत करते।

डा. लालबाबू यादव का लेख अपेक्षाकृत कमजोर है। यह लेख भिखारी ठाकुर की अपेक्षाकृत कमजोर रचनाओं के उद्धरणों से लैस होकर उनके प्रति पाठकीय उत्सुकता को बाधित करता है। तथ्यों का एकत्रीकरण अपने विश्लेषण के हिसाब से ही बोझिल और नीरस है।

डा. उषा वर्मा का लेख अपने अकादमिक विवेचन में भी इस कलाकार की नारी दृष्टि को उजागर करता है। नारी के प्रति उसका दृष्टिकोण जनवादियों और तथाकथित मार्क्सवादियों से भी अधिक प्रगतिशील है। किसी पुरुष कलाकार के वर्ग-दृष्टिकोण को समझने के लिए उसके नारी दृष्टिकोण को परखना जरूरी है। भिखारी ठाकुर की वर्ग-घृणा की सबसे बेहतर अभिव्यक्ति उनके नारी दृष्टिकोण में ही होती है। डा. उषा वर्मा का नारी के प्रति भिखारी का रवैया खूब स्वस्थ और बेजोड़ है। फटेहाल बाप द्वारा बेची जाने वाली बेटी का दर्द उसी के मुंह से भिखारी ठाकुर के नाटक 'बेटी बेचवा' में सुनिये,

'रोपया गिनाई लिहाल
पगहा धराई दिहल
चेरिया के छेरिया
बनवल हो बाबूजी!'

जीतेंद्र वर्मा ने अपने लेख 'भारतीय नवजागरण और भिखारी ठाकुर' में भोजपुरी के इस शेक्सपियर का परिचयात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। सामंती उत्पीड़न में महिलाओं की दूर्दशा के प्रति भिखारी की चिन्ता-दृष्टि के मूल्यांकन के लिए उनका यह लेख आलोचक और शोधार्थियों को खूब प्रेरित करता है।

स्मारिका के दो लेख हमारी संस्कृति पर साम्राज्यवाद के हमले का प्रतिवाद प्रस्तुत करते हैं और इस तरह वे भिखारी ठाकुर की चिन्ताओं को ही मुखरित करते हैं। डा. वीरेंद्र नारायण यादव के संपादकीय वाले लेख में साम्राज्यवाद के आक्रामक हमले के खिलाफ दुश्चिंता अभिव्यक्त हुई है। लोक-साहित्य की सुरक्षा-संरक्षा के लिए कलाकर्मियों का आह्वान किया गया है। ■

राष्ट्रीय सहारा २४ जनवरी २००३ के अंक से सभार

प्रस्तुति विद्याभूषण श्रीवास्तव

www.bhojpurisahityangan.com

सामाजिक रूढ़ियों से टकराते रहे भिखारी ठाकुर

रामजी राय
वरिष्ठ चिन्तक व आलोचक

हिन्दी का रंगमंच जब पारसी थियेटर या फिर अंग्रेजी के प्रभाव से ग्रसित था भिखारी ठाकुर स्थानीय रंग लेकर मंचासीन हुए। ग्रामीण परिदृश्य, उसकी पीड़ा, समस्या एवं आर्थिक जकड़न के विरुद्ध संघर्ष के स्वर उठाते भिखारी ठाकुर लोक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के ही नहीं बल्कि आधुनिक नाट्य शैली के भी जनक के रूप में उभरे। उपनिवेशवादी वर्चस्व एवं आर्थिक मंदी के उस काल में विरोध का स्वर काफी दबा-दबा सा था। ऐसे में समाजिक रूढ़ियों से टकराने की सूझ-बूझ भरते रहे भिखारी ठाकुर तो दूसरी तरफ धन की सत्ता के विरुद्ध रचनात्मक प्रस्तुतियों की बदौलत जनचरित्र गढ़ते रहे।

जाहिर है जब समस्त देश स्वतंत्रता की लड़ाई के उपरांत नये राज्य की कल्पना में डूबा था भोजपुर के प्रयोगधर्मी कलाकार भिखारी ठाकुर एक नये समाज का ताना-बाना बुन रहे थे। संभव हे परम्परागत नाट्य शैली में भिखारी ठाकुर का नाट्य उद्देश्य एवं प्रभाव निखर नहीं पा रहा हो या फिर स्प्रेषणीयता की वह गति नहीं मिल पा रही हो। जहां आम दर्शक मनोरंजन के साथ समाज को नये का विकास कर नाट्य कल्पनाओं के साथ खुद को जोड़ सके।

नयी मूरत गढ़ने में विश्वास रखने वाले भिखारी ठाकुर ने तो अपने पात्र न तो धार्मिक पुस्तकों से लिए और न ही चलताऊ प्रेम की प्रतीक बने सोहनी महीवाल, हीर रांझा की ही शरण में गये। इन सभी से हटकर भिखारी ठाकुर ने सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक समस्याओं को उठाया। मसलन विधवा विवाह, बाल विवाह, बूढ़ा विवाह, दहेज प्रथा आदि। भिखारी ठाकुर ने नये समाज की कल्पना में औरतों के सवाल को काफी उठाया। एक विशिष्ट भौतिक युग में अपने हल्के-फुल्के किन्तु मारक संवाद के जरिए वे लगातार सामाजिक रूढ़ियों से टकराते रहे। एक तरह से कहा जाए तो भिखारी ठाकुर समाज में व्याप्त रूढ़ियों के विरुद्ध नवजागरण का संदेश लेकर आये। वह भी इस रूप में कि प्रेम की अभिव्यक्ति में जात-पात टूटता चला गया। लोकप्रियता का ऐसा मंजर कि बड़े घर की बेटियां विद्रोह की प्रेरणा ले घर से निकल उठी। पात्र भी ऐसे गढ़े जो सीधे-साधे जनता से जुड़कर अपना संवाद कायम करते रहे। 'चितकवरा' एक हास्य अभिनेता, परन्तु उसकी टिप्पणी काफी धारदार, मारक किन्तु ढंग जोकरों का। नवजागरण का इस अनूठे सलीके का ही प्रभाव है कि वरिष्ठ कवि केदारनाथ सिंह कह उठते हैं 'राष्ट्रगान की धुन बिदेसिया गीत से टकरा जाती है'। भिखारी ठाकुर आधुनिक नाटक के शिल्पकार थे। नये निर्देशक भिखारी ठाकुर की व्यवहृत शैली को बखूबी प्रयोग कर रहे हैं। यह और बात है कि उन्हें अनुपालन सफलता नहीं मिल रही है। इसकी वजह भी है। वे शैली तो ले लेते हैं, परन्तु विषय नहीं उठा पा रहे हैं। दरअसल स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी साहित्य की अपनी धुरी से हट गया है। रचनाओं में ग्रामीण चेहरा आलोप-सा हो गया है। वर्तमान नाट्य जगत से जुड़े रंगकर्मियों में एक नये मुहावरे-गढ़ने की हिम्मत है। नये नाटक भी रचे जाएंगे। समस्याओं का विकराल रूप सामने आता जा रहा है। ■

www.bhojpurisahityangan.com

उपन्यास अंश

कथाकार संजीव के राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित उपन्यास सूत्रधार के अंश

भिखारी खीझ से भर जाते, मगर थोड़ी ही देर बाद उन्हें सिखाने की नयी तरकीब के साथ फिर से हाजिर हो जाते, "तुम जो भी हो, एक पल के लिए भूल जाओ कि तुम वह हो, बल्कि यह समझ लो कि मरद नहीं, कनिया हो. कनिया भी नहीं, राधा हो, गोपी हो... हाँ अब शुरू करो."

लवंडे के शुरू करते ही फिर टोकना पड़ता, 'नहीं नहीं,' फिर खुद खड़े हो जाते, 'के बेर बोले कि मेहरारू का बायाँ पैर पहले उठता है, दाहिना नहीं'. मगर फिर कोई-न-कोई भूल, फिर वही सपाट चेहरे, संवेदनशून्य संवाद! ज्यादा टोकने पर लवंडे ने खीझ कर कह दिया ' हमारा से इससे नीमन नहीं बनेगा.

खीझ कर बैठ गये भिखारी. महेन्दर चाह दे गये. गर्म गिलास को गमछे से पकड़ कर फूँक-फूँक कर पीते रहे, बाबूलाल ने चिलम सजा कर हुक्के पर रख कर थमाया. किसी-किसी घर से किसी बच्चे के रोने या बकरी के मेमियाने की आवाज को छोड़ कर सारा परिवेश शांत था. गाँव के ऊपर धुएँ की एक परत गाढ़ी हवा में टँग गयी थी जैसे किसी की धोती सूखने के लिए पसारी गयी हो. हवा गाढ़ी हवा गाढ़ी थी, मन गाढ़ा!

बहुत देर तक हुक्के की गुड़-गुड़ होती रही.

मन की किसी परत से तितली की तरह फिर उड़ने लगी धुन... जब जाई जमुना किना-आ-र!

'इसी धुन पर क्यों जोर देते रहे?' अंदर किसी ने चुटकी ली, ''कहीं ऐसा तो नहीं कि आरा में वह जो दूसरी पतुरिया थी, जिसमें तुम्हें दुनिया बाई की झलक मिली थी, उसने 'देवरा जोगिया हो' को इसी धुन में गाया था? अंदर से किसी ने टोका.

'ना, ना, नहीं तो. वो तो नाव पर एक मल्लाह गा रहा था न!'

'अच्छी!'

'बहुत लोग गाते हैं.'

'अच्छा!'

पकड़े गये. बाबूलाल बदमाश है. कहीं उसकी पकड़ में यह चोरी आ गयी होती तो... बाप रे!

"बाप को बुला रहो हो? अलग ही लाठी लेकर खड़े हैं दलसिंगार ठाकुर!"

घबराहट में जोर-जोर से कश लेने लगे - गुड़ गुड़ गुड़. ''रहने दो इसे, चिलम ठंढी हो गयी है." बाबूलाल ने कहा

न, बाबूलाल ने कुछ नहीं देखा, कुछ नहीं सुना, कुछ नहीं समझा, सिर्फ गुड़गुड़ी की चिलम बदल दी, 'नयी-नयी घोड़ी को परकाने के लिए किसी को आगे-आगे चलना पड़ता हैन!'

तंबाकू कड़वी थी, शीरा कम मिलाया गया था.

'जनाना बन जायँ?'

www.bhojpurisahityangan.com

'अब का कहीं' मूड़ी गाड़ ली बाबूलाल ने

सोच में पड़ गये भिखारी. ठीक ही तो कहते हैं बाबूलाल. जो काम तुम खुद नहीं कर सकते, उसे दूसरों को करने को कैसे कह सकते हो? लेकिन जिसे न गाना आता हो, न बजाना, न शकल, न सूरत, न उमिर, वह क्या खाकर मेहरारू बने?

'बहाने न बनाओं' अन्दर किसी ने डाँटा, 'सच क्यों नहीं बोलते कि तुम्हें लाज लगती है?'

'लाज? हेतु कैसी लाज?'

'तब करते क्यों नहीं?'

'हाँ हाँ, मैं चाहूँ तो कर सकता हूँ.'

रात 'हाँ' और 'ना' की कशमकश में गुजरी. नींद आयी मगर पिछले पहर ही. भोर हुई तो फिर वही सवाल बेताल की तरह कंधे पर.

क्या हुआ, अगर में घंटे-भर के लिए मेहरारू बन ही गया? झट सामने आ गया बाबू जी का चेहरा जो मां को सुनाते हुए कह रहा था, "देख लेना नचनियाँ एक दिन मेहरारू न बन गया तो मेरा नाम नहीं."

माई-बाबू से जबरन नजरें फेर लेते हैं. नजर फेरते ही भूत की तरह प्रकट होता फिर वही सवाल,"तो क्या सूत्रधार को औरत की भूमिका नहीं निबाहनी चाहिए?

" नहीं, हम कोई रामजी नहीं हैं कि धोबी के कहने पर जानकी जी को छोड़ दें.

"नहीं बनोगे?"

'ना ना ना'

"लेकिन..."

यह सार 'लेकिन' एक कुकुरमाछी है, पुट्ठे के घाव पर उड़-उडढ़ कर बैठ रही है, जिसे पकड़ने के लिए कुकुर गोल-गोल घूमते हुए लाख कलाबाजियाँ खाये, पकड़ नहीं पाता... अंततः लोटपोट जाता है- मरो तुम भी मेरे घाव में दब कर!

"हां मैं बनूँगा."

'साक्षात ताड़का लगोगे, सोच लो!'

"सोच लिया.'"

तीसरे दिन लीप कर चिक्कन कर दिया मन को. के बाद तन! दाढ़ी छिला ली, मूंछें छिला लीं; आँख में काजल, नाक में बड़ी-सी नथ, होंठों पर लाली! साड़ी पहन ली, टिकुली साट ली लिलार पर और इठला कर चले तो गिरोह के लोग दंग. परकाया प्रवेश!

पहले जसोदा की भूमिका में उतरे. घर-गृहस्थी के कामों में व्यस्त, अपने लाडले कृष्ण की उलहनाएँ सुनते-सुनते आजिज, एक हाथ से साड़ी संभालते हुए खिसियाई नजरों से देखती है, धमकाती हैं कभी कन्हैया को और कभी गोपियों को!

www.bhojpurisahityangan.com

दूसरी बार पहली सखी की भूमिका में उतरे.

"हम ना बसेब तोरी नगरी जसोदा मैया, हम ना बसबे... साड़ी संभालते हुए लंबे-लंबे हाथों को चमका कर उलहनाएँ देते हुए...जीवंत अभिनय! लवंडों को पसीना आ गया.

बाप रे! इतना तो हमसे नहीं होता! लगता ही नहीं है कि मालिक जी हैं.

नाच कुछ-कुछ पटरी पर आने लगा. मगर वहीं दूसरी दिक्कत पेश आने लगी. जसोदा का अभिनय इतना चमक गया कि बाकी किरदार और भी फीके पड़ गये कृष्ण को तो हर प्रदर्शन पर बदल देते मगर एक ही मनमोहना (कृष्ण) उनका मन मोह न सका. बेला के फूल की तरह यश फैलने लगा भिखारी का खुद का केठ भी खिलने लगा. एक बैद जी की सलाह पर वे रोज गुड़ और मिर्च फाँकने लगे.

अगहन-पूस के दिन. डोरियागंज के नाच के प्रदर्शन से लौट रहे थे. ऊँचे-उँचे मेड़ों के नीचे दूर-दूर फैले चने के खेत झीनी-झीनी टटकी पत्तियों का खटास भरा सोंधा कच्चापन! सामने कोई 14-16 बरस का किशोर घास छील रहा था. वरना वे खुद खेत में उतर जाते. चने का साग उनकी कमजोरी था. वे मेड़ के दूसरी ओर उतर गये. किशोर को आहट न लगी. उसने इधर-उधर देखा और चुपके से खेत में उतर गया, जल्दी-जल्दी कुछ साग खोट कर मुँह में भरा और ऊपर आकर फिर से घास छीलने लगा. जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो.

"ए बबुआ! साम कइसन बा?"

मरा लड़का! जल्दी-जल्दी साग को गले के नीचे उतारने हुए उसने पूछा,

"कहाँ कइसन साग? हम तो घास गढ़त बानी"

सफेद झूठ की चुगली करता हरापन मुँह से झाँक रहा था, भाव-भंगित,

अदा-सब कुछ वहीं, अरे यही तो उनके कुंअर कन्हैया हैं, माखनचोर!

कहाँ-कहाँ नहीं खोजा और मिले कहाँ तो यहाँ!.

"ए बबुआ, तोहार नाम का है?"

लड़का अभी भी संशय भरी नजर से ताके जा रहा था. "इसे मत! हम किसी से नहीं कहेंगे. घर कहाँ पड़ेगा?"

लड़के का डर और बढ़ गया. कोई औरत आ रही थी. उससे पूछने पर पता चला कि लड़के का नाम लालू है; और वो रहा उसका बाप जो दुआर पर खटिया बीन रहा है. "देखुआर हो?"

हँस कर टाल गये भिखारी.

"नाच? वह भिखारी ठाकुर का?" लालू का बाप सुनते ही हड़क गया, "जाईं, जाइये हिंसा से, न तो हमको विरोध आ रहा है."

"जादव जी, हम नाचने के लिए न न माँग रहे हैं लालू को."

"फिर क्या आरती उतारियेगा?"

"हाँ!" हँसते हैं भिखारी, "नचनियाँ हैं हमारे पास, हमें एक किसन । ■

www.bhojpurisahityangan.com

हार्दिक शुभकामनाएँ

जगदीश सहनी, विद्युत कार्यपालक अभियंता छपर (प०), रघुवंश प्रसाद सिंह, सहायक विद्युत अभियंता छपरा (ग्र०), सुरेन्द्र कुमार सिंह, अ० सहायक विद्युत अभियंता छपरा (प०).बच्चु प्रसाद सिंह, अ० सहायक विद्युत अभियंता छपरा (प०), नृपेन्द्र मित्रा, वि० अ० छपरा (प०), अशोक कुमार सिंह, वि० अ० छपरा (प०), रामस्वार्थ राय वरीय प्रधान लिपिक छपरा (प०), रामजी प्रसाद यादव पत्राचार लिपिक (पू), अवधेश कुमार पाठक, विपत्र लिपिक, मो० अमत्तीन साहब, सहायक अधीक्षक, अजय कुमार वर्मा, वि० लि०, छपरा, सुनिल कुमार यादव, वि० लि०, छपरा (पू०), ललन कुमार राय, वि० लि०, छपरा (प०), विनोद कुमार साह, छपरा (प०), दिनेश चौधरी छपरा (प०), श्याम नरायण सिंह, (प्रधान विद्युतज्ञ) छपरा (प०), मनोज कुमार, प्रा० लिपि, छपरा (प०), संजय चौधरी जिला पार्षद छपरा, अदित्य ना० सिंह, मुखिया, गरखा, रामपूजन सिंह मुखिया, नराव गरखा, प्रेम प्रकाश सिंह, अध्यक्ष वार्ड संघ गरखा, रमेश ठाकुर, गरखा, विनोद कुमार ठाकुर, छपरा, कामेश्वर सिंह, राजेश्वर प्रसाद सिंह (अध्यक्ष केन्द्रीय व्यवासायिक संघ छपरा), वैघनाथ उपाध्याय, दमोदर प्रसाद गुप्ता, नरेन्द्र प्रसाद ठाकूर सरारी बंसत, छपरा, विजय कुमार ठाकूर, (कुतुबपुर) जमशेदपुर , झरखंड, रामदास राही, (भिखारी मर्मज्ञ), सचिव, लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम, छपरा, उदय प्रताप सिंह, वार्ड कमिश्नर छपरा, प्रकाश सिंह, आइस फैक्ट्री मौना छपरा, सत्येन्द्र प्रसाद, अट्टा मक्की छपरा,अजित कुमार सिंह मैनपुरवा, छपरा, डॉ० धर्मनाथ शर्मा, नीर्मल सिंह (वस्त्रालय, नरॉब, छपरा),विरेन्द्र प्र० शर्मा, मौन छपरा, रामराज सिंह उर्फ भुटेल सिंह, चैनपुरवां छपरा, सुरेश प्रसाद श्रीवास्तव, छपरा

भिखारी ठाकुर लोक साहित्य आ संस्कृति महोत्सव २००२ के अवसर पर भोजपुरी सपुत माननीय लालू प्रसाद आ आगत प्रतिनिधि लोग के हार्दिक स्वागत

राधेश्याम प्रसाद सिंह उर्फ सेठजी,

आरा

बबलू प्रसाद यादव,

डोरीगंज छपरा

विजय कुमार ठाकुर

(कुतुबपूर) जमशेदपुर, झारखंड

www.bhojpurisahityangan.com

भिखारी ठाकुर : एक संक्षिप्त परिचय

जन्म: 18-12-1887 तदनुसार पूस सुदी पचमी तिथि, दिन सोमवार समय 12 बजे दिन में धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में. जन्मस्थान: ग्रा.- कुतुबपुर, पो.-कोटवाँपट्टी रामपुर, जि०-सारण (बिहार) जन्म के यह परिवार अर्थू-अवारी से आकर गाँव शंकरपुर महाल, थाना-बड़हरा, जि०-शाहाबाद में रहता था। कटाव के कारण 1887 में ही यह परिवार भिखारी के जन्मोपरांत कुतुबपुर चला आया।

माता का नाम-शिवकली देवी, पिता का नाम-दलसिंगार ठाकुर, निधन: जन्मभूमि पर 10 जुलाई, 1971

प्रमुख नाट्यकृतियाँ – (1) बिदेसिया (2) भाई-विरोध (3) बेटी-वियोग (4) कलियुग-प्रेम (5) राधेश्याम नहार (6) गंगास्नान (7) विधवा-विलाप (8) पुत्र-वध (9) गबरघिचोर (10) ननदी-भौजाई (11) विरहा-बहार।

रूपक– (1) भाँड़ के नकल (2) नेटुआ।

भजन-कीर्त्तन : (1) भिखारी भजन माला (2) भिखारी हरिकीर्त्तन (3) भिखारी चौजुगी पावन (4) माताभक्ति (5) देव कीर्त्तन (6) नाम रतन परिचय (7) भिखारी यशोदा संवाद (8) रामनाम माला।

अन्य कृत्तियां–(1) नाई बहार, (2) जयहिन्द खबर (3) भिखारी शंका समाधान

जीवनकाल के प्रमुख समाजी– (1) बाबूलाल (नाई, चंदनपुर) –सूत्रधार, महेन्द्र ठाकुर (नाई चंदनपुर) तबला-ढोलक, रामेश्वर ठाकुर उर्फ सखी ठाकुर –अभिनेता/आलराउंडर (नाई, चंदनपुर), दीनानाथ (दुसाध, तिजारपुर)–अभिनेता, निदेशक, तफजुल, अलीजान (खोदाईनगर) – सारंगी, भदई (चमार, नूननगर) –हरमुनिया, जगदेव राय –नायिका/हारमोनियम बादक, लक्षन राय (अहीर, हरपुर कराह)- अभिनेता, रामाशीष यादव– यशोदा, नारी पात्र साजिन्दा, सखीचंदभगत (अरवां, नगरा) – नर्त्तक, जमुना भगत (गोंड, राजापट्टी) –लबार, जूठन ठाकुर (नाई, कुतुबपुर) – नर्त्तक/अभिनेता, सोमारूराम (चमार) –अभिनेता, सुखन भगत (रउजा, छपरा)- नायिका।

जीवित समाजी–शिवबालक (वाड़ी कान्ह फलवलिया)–अभिनेता गोपीचंद वादक, शिवनंदन भगत – /- हरमुनिया, रमनाथ (बौन, रामपुर चकिया) – अभिनेता/साजिन्दा, उमा (बौन, रामपुरचकिया) –मनैजर, अभिनेता, सोहराईराम (दुसाध, बबुरा) – ढोल, गौरी शंकर ठाकुर (भतीजा कुतुबपुर), गोपाल राम (कहार, कुतुबपुर) अभिनेता, किशुन देव (लोहार, कुतुबपुर) अभिनेता, लखीचन्द (दुसाध)-नायिका, शिवलाल (बौन), कान मिश्रवलिया (अभिनेता), बडका रामचन्द्र (दुसाध, तिजारपुर)-अभिनेता, छोटाका रामचन्द्र (दुसाध, नायिका)

प्राप्त सम्मान : बिहार के राज्यपाल से ताम्रपत्र, अंग्रेजों द्वारा रायबाहादुर की उपाधि के अतिरिक्त अनेको सम्मान।

रामदास राही
मंत्री,
लोककलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम, कुतुबपुर, सारण

भोजपुरी चली विदेश की ओर

*वर खोजे चलि गइलऽ माल लेके घरे अइलऽ, दादा लेखा खोजलऽ दूलहवा हो बाबूजी।
–Daddy dear,
have care for my tears.
Of the age of mygrandfather you searched my groom, haggard and old.
And came back home wih my price in silver and gold.
*रुपिया गिनाई लेहलऽ पगहा धराई दिहलऽ चोरिया के छेरिया बनवलऽ हो बाबूजी।
–Daddy dear, for your misdeeds, don't brush aside your tear you transformed my ownership and your fear for my sale.
You made a bid, In the mart of marriage
you treated your daughter as a goat and kid.

—D.N. RAY,Chapra

www.bhojpurisahityangan.com

अन्त में

अध्यक्ष के निवेदन

वैदिक काल से अनेक ऋषि-मुनि लोग के तपस्थली, गंगा, सरजू आ सोन से चारो ओर से घिरल, एगो टापू आ भारत के महानतम लोकलाकार भिखारी ठाकुर के जन्मभूमि कुतुबपुर में १८-१९ दिसम्बर २००२ के आयोजित एह साल के भिखारी ठाकुर लोक साहित्या संस्कृति महोत्सव के अवसर पर उपस्थित सभ भोजपुरी प्रेमी लोग के आज सादर अभिवादन करत हमरा जवन प्रसन्नता आ गर्व महसूस होता, उ हम बखान नइखी कर सकत। हमनी के भाषा आ संस्कृति आज साच हूँ खतरा में बा, जवना से अइसन अयोजन समय के मांग बन गईल बा।

एह दियरा के भूमि बड़ा पावनभूमि ह, जवना पर एक से बढ़के एक अनमोल रतन उत्पन्न भईल बारन । नादन राजा मोरध्वज आ राजा भोज से लेके देश के आजादी के बाद छपरा संसीदय क्षेत्र के तीन बार लोकसमा में प्रतिनिधित्व करे वाला सांसद बाबू रामशेखर प्रसाद सिंह, पूर्व सांसद, स्व० प्राचार्य डॉ० हीरालाल राय, बाबू सत्यनारायण सिंह, मोसाफिर राय आ स्व० रामप्रताप राय स्वाधीनता सेनानी, खलीफा राधे आ प्रतिपाल आ लालबिहारी सिंह पहलवान से लेके हाले में देश के शान्ति खातिर शहीद जवान बलिराम सिंह उफ गनौरी सिंह के एही धरती पर ठाकुर जी जइसन महान कलाकार जन्म लिहनीं जिनका नाम पर माननीय राज्य मंत्री उदित राय के कृपा से पुनर्निर्मित लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम में आयोजित एह महोत्सव के सफल बनावे में सहयोगी सभे के प्रति हम दसो नोंह जोर के आभार प्रकट करत बानीं ।

पिछला साल विश्व भोजपुरी सम्मेलन, दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित एह समारोह में कई गो भोजपुरी के स्र्वगवासी कलाकार लोग के भोजपुरी रत्न सम्मान आ अलग जीवित कलाकार लोग के भोजपुरी भूषण सम्मान आ युवा कलाकार लोग के भोजपुरी युवा मणि सम्मान से सम्मानित कईल गईल । सम्मेलन के सफल बनावे वाला पत्रकार आ साहित्यकार लोग भी पुरस्कृत कईल गईल। एह साल आयोजन समिति के ओर से भोजपुरी के सपूत, भोजपुरी आ भोजपुरिया लोग के लोकप्रिय बनावे वाला, गरीब-गुरबा आ दलित-शोषित लोग के मसीहा **माननीय लालू प्रसाद** जी **भोजपुरी सपूत सम्मान** के फैसला कईल गईल बा।

करोड़ो भोजपुरी भाषी लोग के हृदय सम्राट लालू जी के बारे में कुछ कहल हमरा नियर आदमी खातिर सूरज के दिया दिखावल बा। भोजपुरिया माई उहाँ के उपर असीम कृपा कइले बानीं। उहाँ से निहोरा बा की भोजपुरिया समाज के देश के मुख्य धारा में ले जायेके अभियान के नेतृत्व आजे से अपना हाथ में सम्हारीं।

समारोह में वरिष्ठ पत्रकार डा. लाल बाबू यादव के प्रधान संपादन, डा. विद्याभूषण श्रीवास्तव के संयुक्त संपादन आ वरिष्ठ साहित्यकार आ पत्रकार अविनाश नागदंश जी के अतिथि संपादन में एगो स्मारिका भी प्रकाशित कईल जा रहल बा। जवन आशा बा अपने सभन के पसंद आई। हमरा अज्ञानता से समारोह में कवनो त्रुटि रह गइल होखे त हम दसो नोंह जोर के माफी मागत बानीं। ■

ललन राय

अध्यक्ष, आयोजन समिति

www.bhojpurisahityangan.com

हमनी के माननीय मुख्य संरक्षक

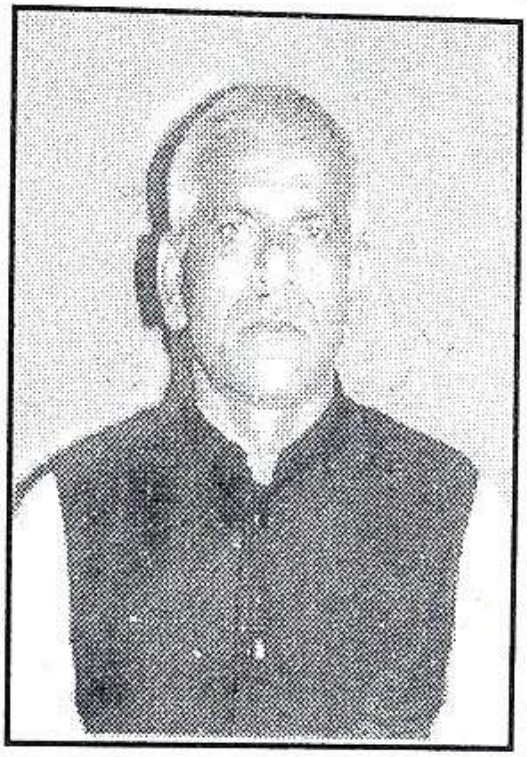

श्री उदित राय

राज्य मंत्री , नगर विकास
बिहार सरकार

पढ़आ-लिखुआ करिहें माफ। हम त बात कहीले साफ ।।
हमरा ना केहू से बैर। ना खींचब केहू के पैर ।।
हम तऽ सबके करब भलाई। जेतना हमरा से बन पाई ।।
हिंदी हऽ भारत के भासा। ऊहे एक राष्ट्र के आसा ।।
हम ओकरो भंडार बड़ाइब। ओहू में बोलब ओ गाइब ।।
तबो न छोड़ब आपन बोली। चाहे केहू मारे गोली ।।

प्राचार्य मनोरंजन प्रसाद सिंह

डगरिया जोहत ना, बीतत बाटे आठ पहरिया हो, डगरिया जोहत ना,
धोती पटधरिया धइ के कान्हावा पर चदरिया हो, डगरिया जोहत ना।
बबरिया झारि के ना, होइब कवना सहरिया हो, बबरिया झारि के ना,
एकऊ ना भेजवल खत कतहूं से खबरिया हो, नगरिया देखि जा ना।
नइखीं खोजत बटसरिया हो, नगरिया देखि जा ना,
केई हमरा जरिया में भिरवले बाटे अरिया हो, चकरिया दरि के ना।
दुख में होत बा जतसरिया हो, चकरिया दरि के ना,
परोसि कर थरिया, भात-दाल-तरकरिया हो लहरिया उठेला ना।
रहितऽ करितऽ जेवनरिया हो, लहरिया उठेला ना,
कहत भिखारी मनवां करेला हर घरिया हो, उमरिया भरिया ना।
देखत रहतीं भर नजरिया हो, उमरिया भरिया ना,
देखत रहतीं भर नजरिया हो, उमरिया भरिया ना।।